विश्व के विचित्र इंसान

लेखक

ए एच हाशमी

इनसे मिलिये

सदिया स प्रकति कुछ ऐस इसानो का जन्म दती रही है जा विचित्र या असामान्य होत हैं। इनका जन्म दन वाल माता पिता सामान्य ही हाते हैं। अपनी विचित्रता ओर भिन्न शारीरिक बनावट क कारण सामान्य मनष्य इन्ह कुछ नीच स्तर का समझत हैं। हालांकि इनकी विचित्रता क कारण इन्ह दखन क लिए भीड एकत्र हा जाती है—और एसा लगता ह कि जस चिडियाघर म किसी अजीबा गरीब जानवर का दख रह हा। यहा तक कि कभी-कभी दखन वाला की नजरा म आप भय और घृणा का भाव भी पाते ह।

पर प्रकति ने जहा इन विचित्र इसाना का कोई शारीरिक कमी दी हे वहा उन्हे काई असाधारण प्रतिभा भी प्रदान की ह उदाहरणार्थ काल अथन अपन पाव क अगूठ म पियानो बजा लता था ओर बिना बाहा वाला डुकारनट (Ducor net) न अपनी प्रतिभा क बल पर फ्रास क चित्रकला जगत म ऊचा स्थान पाया।

वैस ता सर्कस आर मला म इन विचित्र इसाना का प्रदर्शन एक आम बात है पर यह बात ध्यान दन याग्य ह कि यह विकलाग एक अनूठ आत्मविश्वास का प्रदशन करत हैं ओर अपनी शारीरिक विचित्रता या कमी का एहसास उन्ह कम हाता ह। उन्ह अपनी हालत पर अफसास नहीं हाता बल्कि वह काशिश यह करत हैं कि सामान्य लागा की तरह जीवन व्यतीत कर सक तथा अपनी अक्षमता पर विजय प्राप्त कर सक। मज क गिद बेठ ताश खलत 280 किला वजन की महिला मढकनुमा लडका तीन टाग वाला इसान या वह बिना हाथ वाला व्यक्ति, जा पत्त बाट रहा ह—इनम आप काइ हीन भावना नही पाएग। दाढ़ी वाली महिला लडी आल्गा न एक बार कहा था ' यदि वास्तविकता का समझा जाय ता हम सब ही विचित्र इसान ह आर अजीबा गरीब हरकत करते हैं। हम भी ओर आप भी जा सामान्य ह। '

मध्य यग म इन लागा को खरीद कर रखा जाता था। कुछ निर्दयी लाग बच्चा का अपहरण कर उनक अग तोड मरोड कर उनका प्रदशन करत थ। चीन म छाट बच्चा का चीनी क मतबान म डाल दत थे। कई वर्षो क बाद उस बच्च का शरीर मतबान जेसा हा जाता था। तब मतबान ताड कर बच्च का निकाल कर उसका प्रदर्शन किया जाता था यह दुख भरी दास्तान इन सभी विचित्र इसाना की ह जिन्ह एक आर ता प्रकति ने असामान्य बनाया ओर दूसरी आर सामान्य मनष्या न इनका शाषण किया ओर साथ ही समाज का तिरस्कार भी मिला।

इन विचित्र इसाना न प्राय सकसा आर मेलो म ही अपनी जीविका कमाई पर अब इनकी सख्या सर्कसा आर नुमाइशा म कम हाती जा रही हे। आज का समाज यह महसूस करता ह कि इन लागा क प्रदर्शन या शाषण स धन कमाना अमानवीय ह। अनक दशा की सरकार भी इस आर प्रयत्नशील ह कि इन लागा का विशेष शिक्षा दकर सामान्य जीवन व्यतीत करन का माका दिया जाय पर फिर भी कई मतबा सरकारी याजनाए कवल कागज पर रह जाती हैं। इसलिये आवश्यकता इस बात की ह कि हम सब इनकी भावनाआ का आदर कर तथा इन्हे भी इसान समझ। इसी प्रकार इन्ह कुठा और हीन भावनाआ से बचाया जा सकता ह।

ए एच हाशमी

अनुक्रम

1 दैत्याकार इंसान

2 संसार के प्रसिद्ध बौने

7 बदसूरत ससार

8 ऐसे भी लोग हैं

दैत्याकार इसान

दुनिया का सबसे लम्बा व्यक्ति चन्ना

'गिनेस बुक ऑफ रिकार्ड्स' के अनुसार अभी तक अमरीका का डॉन काहलर (Don Koehler) जो शिकागो मे रहता है, जीवित व्यक्तियो मे सबसे लम्बा समझा जाता था। वह 1925 म पदा हुआ था। उसका कद 248 9 सेमी (8 2') हे। यद्यपि एक कीनिया निवासी ने उससे एक इच अधिक होने का दावा किया था, परतु मोहम्मद आलम चन्ना इन दोनों से आगे बढ गया।

माहम्मद आलम चन्ना का जन्म सन् 1956 मे सिध (पाकिस्तान) मे एक खादिम परिवार म हुआ। 10 वर्ष तक उसका कद बिल्कुल सामान्य था, परतु 12 वर्ष के बाद उसके कद मे असाधारण वृद्धि होने लगी। वह अपने पिता के कद से भी ऊचा निकल गया। उसका असामान्य कद उसके घरवालो और उसके स्वय के लिए एक समस्या ओर लोगो के लिए एक आकर्षण केद्र बन गया। समाचार-पत्रा के सवाददाताओ की नजरो से भला वह कैसे छिप सकता था। उसके असामान्य कद के समाचार धडाधड छपने लगे और सम्पूर्ण पाकिस्तान मे चन्ना की चर्चा होने लगी।

पाकिस्तान क अग्रजी साप्ताहिक मेग (जु 23-29, 1981) ने चन्ना से सबधित एक लेख प्रकाशित किया, जिसमे उसके रगीन चित्र भी दिए गए थे। अपने 259 08 सेमी (8 6') के कारण आज मोहम्मद आलम चन्ना ससार का सबसे लम्बा भला-चगा व्यक्ति हे। उसका स्वास्थ्य बिल्कुल सामान्य ह। अत्यधिक लम्बा कद प्राय मडिकल साइस म बीमारी का कारण समझा जाता है, परतु उसका कद ओर स्वास्थ्य किसी बीमारी का परिणाम नही, बल्कि उसकी पदाइशी देन ह। यद्यपि रॉबट पर्शिग वैडलो जिसका कद 272 03 सेमी (8 11 1') था, सबस लम्बा व्यक्ति था परतु उसकी मृत्यु 22 वर्ष की उम्र म ही हा गइ थी ओर उसका कस भी पेथालॉजिकल था।

अब 'गिनेस बुक ऑफ रिकार्ड्स' क अनुसार भी चन्ना भल-चगे व्यक्तियो म ससार का सबसे लम्बा व्यक्ति ह। उसका सही कद 251 सेमी (8 3') ओर वजन 180 किग्रा हे।

भारत ओर पाकिस्तान जहा ओसत लम्बाई 165 1 समी (5 5') है, 182 88 समी (6) व्यक्ति भी विशालकाय समझा जाता है। मोहम्मद आलम चन्ना जो सहवन शरीफ मे मजार पर खा... लागो क लिए एक तमाशा बन गया। च

पब्लिक टैक्सिज की हालत सतोषजनक नही थी। आखिर किसी प्रकार उसने अपने शरीर को पाच विभिन्न कोणो मे मोडने का अभ्यास कर लिया। उसके लिए यात्रा करने का सही यही एक तरीका था। सर्वप्रथम वह टेक्सी की पिछली सीट पर बेठता (सिर बाहर ही रहता), जिसमे उसे कमर को 90° डिगरी मे मोडना पडता, फिर वह अपने सिर को अदर करता, तत्पश्चात् वह टेक्सी के दूसरे कोने तक रेगता और अपने पंरो को दोहरा मोडता और अत मे पेरो को सीधा करके पूरी पिछली सीट पर मुडी हुई हालत मे बेठता।

कुछ दूर जाने के लिए रिक्शा करना भी चन्ना के लिए एक समस्या थी। रिक्शा चालक चन्ना को अपने रिक्शे मे बैठाने के लिए घबराते थे कि कही उनका रिक्शा ही न टूट जाए। कभी-कभार रिक्शा चालक तैयार भी हो जाते तो मौके का फायदा उठाते हुए उसस दोगुना किराया वसूल करते थे।

यद्यपि चन्ना को अभी तक कोई स्थायी काम नही मिला था, परतु वह कलदर (लाल शहबाज कलदर) की मेहरबानियो और ढेरा कीमती उपहारो से बहुत प्रभावित हुआ और उनका शुक्रगुजार था। उसकी

इच्छा थी कि उसे कोई स्थायी काम मिले, जिससे उसे प्रति मास एक नियत धनराशि मिल सके। वह चाहता था कि सरकार उसकी सहायता करे। वह कहता था कि वह देश के लिए गौरव है, देखिए! सारी दुनिया जानती है कि दुनिया का सबसे लबा व्यक्ति पाकिस्तान में है। उसने कलदर से इस सबध में शिकायत भी की कि उसकी प्रार्थना पर भी सरकार ने उसके लिए अभी तक कुछ नहीं किया।

साप्ताहिक मैग (Mag) ने जुलाई 23-29, 81 के अक में लिखा— यह कोई विशेष समस्या नहीं है। हमारे देश में लम्बे व्यक्तियों के लिए काफी काम है और ऐसे असाधारण व्यक्ति के लिए सरकार को स्वय ध्यान देना चाहिए। नहर या बैंक के चौकीदार के अतिरिक्त उसे पाकिस्तान को एक्सटर्नल एग्जिबिट सेक्शन आफ एक्सपोर्ट प्रोमोशन ब्यूरो (External Exhibit Section of Export Promotion Bureau) से सबधित रखना चाहिए, और हमें विश्वास है कि विश्व मेले में पाकिस्तानी स्टाल के गेट पर मोहम्मद आलम चन्ना एक विशेष आकर्षण होगा।"

आज चन्ना ससार का सबसे लम्बा जाना-पहचाना व्यक्ति है। सरकार ने भी उसकी समस्याओं पर कुछ ध्यान दिया है। अब उसे प्रति मास एक नियत धनराशि भी मिल जाती है, परतु उसकी 500 रुपये की आय का अधिकाश भाग तो उसके स्पेशल बनाए गए वस्त्रों और जूतों पर ही खर्च हो जाता है। जहा वह जाता है, उसके मित्र उसके साथ होते हैं, ताकि दर्शकों की भीड़ से उसकी रक्षा कर सकें। लम्बा कद जहा उसके लिए एक समस्या बन गया था, अब उसकी प्रसिद्धि का कारण भी है।

ससार का सबसे दीर्घकाय मनुष्य
रॉबर्ट वैडलो

रॉबर्ट वेडलो (Robert Wadlow) 22 फरवरी 1918 को ऐल्टन, इलिनॉय (स रा अ) म पेदा हुआ था। वह एक इंजिनियर का पहला पुत्र था। रॉबट क जन्म पर डाक्टर ने उसका वजन किया ओर उसके पिता को दिखाते हुए कहा, "यह एक सुदर, पूणतया स्वस्थ और सामान्य किस्म का बच्चा हे। इसका 3 86 किग्रा वजन हैं। आप इस पर गर्व कर सकते हैं।" लेकिन जब वह एक वर्ष का हुआ तो उसका वजन लगभग 20 किग्रा से ज्यादा था।

पाच वर्ष की उम्र तक आते-आते उसका वजन 47 63 किग्रा और कद 162 56 सेमी (5 4′) हो गया। अब वह अन्य बच्चो से अधिक वयस्क दिखाई देने लगा था। 5½ वर्ष की उम्र मे उस स्कूल मे दाखिल करा दिया गया। कक्षा की कुसिया, मेजे छोटे बच्चो के अनुसार थी। इसलिए उसके इस्तमाल की सभी चीजे अपेक्षाकृत बडी रखी गई। रॉबर्ट एक मेहनती ओर अच्छा शिष्य निकला। उसने आई क्यू (बुद्धि-परीक्षा) टस्ट मे सबसे अधिक अक प्राप्त किए। वह अपन हमउम्र साथियो की तरह खलता

रॉबर्ट वैडलो अपन पिता के साथ

हो गया था। वह अपने माता-पिता से कहीं अधिक लम्बा था। उसका भाइ आर दो वहनें सामान्य कद क थे। शुरू में उसकी बहनें उसकी उगली थामकर उसके साथ चलती थीं, परतु अब उसका हाथ छूना भी उनके लिए असम्भव था।

16 वष की उम्र मे रावट का कद 238 75 सेमी (7 10") और वजन 272 किग्रा के लगभग था। अमरीका म कोइ एसा व्यक्ति न था, जो उससे कद म मुकाबला कर सकता।

18 वर्ष आर 252 73 समी (8 3½") कद' यह दीर्घकाय नवयुवक अब अपने करियर की चिन्ता म था। जब वह 1936 म कॉलेज में दाखिल हुआ तो उसे वकील बनने का विचार सूझा। शायद वह दुनिया का सर्वाधिक लम्बे कद का वकील बनन वाला था।

उसे अपने बड कद क कारण कइ कठिनाइयो का सामना करना पडा। कक्षा म नाट्स लिखने के लिए वह अन्य विद्यार्थियों के साथ न चल सकता था। बडे से बडे साइज का कलम भी उसके लिए एक तिनके के बराबर हाता। जीव विज्ञान की प्रयोगशाला म छोटे-छोटे नाजुक उपकरण इस्तमाल करना उसके लिए असम्भव था।

1937 म रिगलिंग ब्रदस ने उससे न्यूयॉर्क आर बास्टन मे सकस शा म भाग लने के लिए प्राथना की, जिसे उसने स्वीकार कर लिया। परतु उसने सकस की पोशाक न पहन कर साधारण सूट पहनने और दिन मे केवल दा बार स्टेज पर जान की शर्तें स्वीकार कीं।

उस समय 19 वष की उम्र म उसका कद 257 81 सेमी (8 5½") था।

1940 म वह 22 वष का था। तब उसका कद 272 03 समी (8 11 1) और वजन 199 13 किग्रा था। 6 जुलाइ की सध्या का वह मिशिगन के एक मेले म भाज पर आमंत्रित था। भोजन के दारान उसके पिता न दखा कि वह कुछ भी खा-पी नहीं रहा ह। पूछने पर उसने बताया कि उसकी तबियत ठीक नहीं ह। मले स फारिग हान पर डाक्टर को बुलाया गया।

दीघकाय नवयवक बुखार से ग्रस्त था। उसका टखना बुरी तरह प्रभावित हा गया था आर टखन का जख्म नासूर बन गया था। डाक्टर न उसे अस्पताल मे दाखिल करने की सलाह दी परतु वह डाक्टर की सलाह न माना। फलस्वरूप उसकी हालत बिगडती गइ आर दद बढता ही गया।

उसक माता-पिता दिन भर उसक दुख म साथ-साथ रहते, परतु दद स उस मुक्ति न मिल सकी। अत म 15 जुलाइ 1940 को प्रात उसकी मत्यु हो गई।

रॉबर्ट क शव का उसके गाव एल्टन ले जाया गया। उसकी अंतिम यात्रा के दश्य को देखने के लिए बहुत लोग एकत्र हुए। उसे दफनाने क लिए एक विशेष आकार का ताबत बनवाया गया। रॉबट वेडला न चाल्स बायर्न आर जान हण्टर के बार में पढा था। अत उसने अपने शव को जान हण्टर क हाथा स बचाने के लिए एक मजबूत लोह का ताबूत बनाने की वसीयत की थी। उसकी यह वसीयत पूरी भी की गई।

दुनिया का सबसे लम्बा व्यक्ति फ्रेड नजरबंदी से मुक्त होकर जब ब्रिटिश भूमि पर पहुचा था, तो उसके कधे झुके हुए थे और शरीर क्षीण हो चुका था। एवेबरी मे उसकी बहन ने उसकी देखभाल की। स्नेहशीला बहन की देखभाल मे फ्रेड धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगा, स्वस्थ होकर फ्रेड ने अपने जीवन के कुछ अंतिम महीने एक अद्भुत व्यक्ति की हैसियत से अपनी नुमाइश करके गुजारे।

पर अफसोस की अद्भुत व्यक्ति फ्रेड पर बीमारी ने कुछ ही महीनो बाद पुन आक्रमण कर दिया और उसका स्वास्थ्य गभीर रूप से खराब हो गया। उसके बचने की कोई आशा न रही। दिन-ब-दिन उसकी हालत बिगडती ही गइ।

एक दिन लोगो ने देखा कि ब्लैकबर्न स्ट्रीट (Blackburn Street) पर आठ व्यक्ति फायरमैन की जम्पिग शीट पर एक भारी भरकम विशाल शरीर को एबुलैंस तक ले जा रहे हैं। यह बेचारा और कोइ नही, बल्कि फ्रेड था। अस्पताल मे दो आयरन बेड को आपस मे जोडकर फ्रेड को लिटाया गया। डाक्टरो ने भरसक उपाय किए, परतु खेद कि फ्रेड को स्वास्थ्य लाभ नही हुआ। आखिर वह क्रूर दिन आ ही गया कि जब 15 अप्रैल 1918 को क्विस पार्क अस्पताल मे फ्रेड मौत की चिर निद्रा मे सो गया। उस समय उसकी उम्र थी सिर्फ 29 साल।

170 किग्रा (27 स्टोन) के विशालकाय फ्रेड का कफन 2 7 मीटर लम्बा था और उसे दस व्यक्तियों ने मिलकर कब्र तक पहुचाया था। कब्र खोदने मे गोरकनो को काफी मेहनत करनी पडी थी। 10 टन मिट्टी खोदकर बाहर निकालन के पश्चात् फ्रेड के लिए कब्र तैयार हो सकी थी।

आज भी, विल्टशायर के लोगो को वह स्नेहशील दैत्य याद है, जो रैड लॉयन एवेबरी के जमीदार मिस्टर हेनरी लावेस (Henry Lawes) की मॉडल–T फोर्ड, ड्राइविग के लिए ले जाया करता था। टिल्सहेड (Tılshead) के मिस्टर लावेस की बेटी श्रीमती आइवी हॉक्ली (Ivy Hockley) कहती हैं, "जब कभी फ्रेड पिता जी के साथ गाडी चलाता था, तो उसे सीधा बैठने के लिए कार का हुड हटाना पडता था।"

कप्तान मार्टिन बेट्स (Captain Martin Bates) और एन्ना स्वान (Anna Swan) के नाम दुनिया के सबसे लम्बे विवाहित जोड़े के रूप में विख्यात हैं। इस दम्पति की कुल लम्बाई 447.04 सेमी (14' 8") थी, जिसमें से 226.[illegible] सेमी (7' 5½") लम्बाई एन्ना की थी और लगभग 219.71 सेमी (7' 2½") उसके पति की थी। उसका पति उससे कुछ इंच छोटा था। वे अमेरिका और समूचे यूरोप का दौरा कर चुके थे।

एन्ना स्वान की खोज पी. टी. बर्नम नाम के एक सर्कस कम्पनी के मालिक ने की थी। वह 1846 में नोवा स्कोशिया (Nova Scotia) में पैदा हुई थी और क्रम में अपने 13 बहन भाइयों में तीसरी थी। उसके माता पिता कद के सामान्य थे। पिता का कद 182.88 सेमी (6') और माँ का कद 157.48 सेमी (5' 2") था।

एन्ना अपनी अन्य सभी बहनों से सुंदर और लम्बी थी। पैदाइश के समय उसका वजन 8.16 किग्रा था। 6 वर्ष की उम्र में वह अपनी माँ के बराबर लम्बी हो गई थी और 15 वर्ष की उम्र में उसका कद 213.36 सेमी (7') हो गया।

एक ऐसी लड़की जो इतनी लम्बी हो और जिसका शारीरिक गठन पूर्णतः समानुपातिक हो, गुमनाम नहीं रहती। न्यूयॉर्क नगर जहाँ दूर होने के बावजूद, बर्नम को एन्ना के संबंध में शीघ्र ही पता चल गया और बर्नम उसे अपने थियेटर के अंतर्गत स्टेज पर उतारने के लिए छटपटा उठा। उसने एड़ी चोटी का पसीना एक कर दिया। अंततः उसे सफलता भी मिली। न्यूयॉर्क स्थित बर्नम म्यूजियम में एन्ना का राज स्वागत हुआ। वह एक सुंदर और आकर्षक लड़की थी। लोग उसे बहुत पसंद करते थे। बर्नम उसे कमिडोर नट और जनरल टॉम थम्ब के साथ समारोहों में पेश करने लगा।

इस दौरान बर्नम म्यूजियम को दो बार अग्निकांड का शिकार होना पड़ा। 13 जुलाई 1865 को जो आग लगी, उससे सम्पूर्ण म्यूजियम भस्म हो गया। आग की शुरुआत इंजन रूम से हुई थी और शीघ्र पाँच मंजिल की पूरी इमारत उसकी चपेट में आ गई। कई एक विचित्र इंसान धुएं के बीच फँस गए। एन्ना उस समय तीसरी मंजिल पर थी और उसका वजन था 181.4 किग्रा। अगले दिन 'न्यूयॉर्क ट्रिब्यून' में छपा—"अनुमानित सभी विचित्र इंसानों को बचा लिया

एन्ना स्वान—जिसकी लम्बाई 7' 5½" थी

गया है, परंतु दीर्घकाय लडकी ऐन्ना स्वान को बहुत मुश्किल से बचाया जा सका। कोई दरवाजा ऐसा न था, जिससे वह निकल पाती। यदि किसी प्रकार वह सीढियो तक पहुच भी जाती तो इस बात का खतरा था कि उसके भार मे कही सीढिया न टूट जाए। अत मे एक विशेष प्रकार की क्रेन (Derrick) मगवानी पडी और खिडकी के दोनो ओर की दीवारे तोड कर उस लडकी को क्रेन द्वारा तीसरी मजिल से उठाया गया और लोगो के सिरो से गुजारते हुए नीचे उतारा गया।''

13 जुलाई 1865 को बर्नम म्यूजियम जल कर भस्म हो गया। उसके ठीक तीन महीने बाद 13 नवम्बर 1865 को उसने नया अमेरिकन म्यूजियम खोला और अपना व्यापार पुन प्रारम्भ कर दिया। ऐन्ना स्वान दोबारा उसकी कम्पनी में शामिल हो गई और तीन वर्ष तक साथ रही।

3 मार्च 1868 को बर्नम म्यूजियम मे दोबारा आग लगी। इस बार के अग्निकाड ने म्यूजियम के मालिक पी टी बर्नम की कमर पूरी तरह तोड डाली। केवल एक दीवार को छोडकर सम्पूर्ण म्यूजियम भस्म हो गया। अब बर्नम ने रिटायर होने का निर्णय कर लिया। ऐन्ना स्वान भी पश्चिम के दौरे पर निकल पडी। अपने यूरोप भ्रमण के दौरान सन् 1869 मे वह इग्लैंड मे महारानी विक्टोरिया से मिली।

ऐन्ना स्वान के भावी पति मार्टिन वान ब्यूरन बेटस का जन्म 9 नवम्बर 1845 को व्हाइटबर्ग, कैटकी (स रा अ) मे हुआ था। 15 वर्ष की उम्र मे बेटस जब वर्जिनिया के एक कॉलेज का छात्र था, उसका कद 182 88 सेमी (6) था। जब गृहयुद्ध छिडा तो उसे सेना मे बुला लिया गया। युद्ध के दौरान भी उसका कद बराबर बढता रहा। सैनिक जीवन के दौरान ही उसके नाम के साथ 'कैप्टेन' शब्द जुडा था। सैनिक सेवाओ से अवकाश प्राप्त करने के बाद बेट्स ने अनुभव किया कि उसका उचित स्थान शो बिजनेस मे है। 28 वर्ष की उम्र मे उसका कद 219 71 सेमी (7 2½) और वजन 213 19 किग्रा था।

शो-बिजनस के क्षेत्र मे उतरने पर कैप्टेन बेट्स ऐन्ना स्वान के निकट-सम्पर्क मे आया, क्योकि उन्हे प्राय एक साथ अपना शो देना होता था। अब दर्शको के साथ-साथ परस्पर उन दोनो ने भी महसूस किया कि उनकी जोडी बहुत उपयुक्त है। ऐन्ना जब कैप्टेन बेटस के साथ खडी होती तो वह थोडी सी लम्बी जरूर दिखाई देती, परतु यह अतर बहुत स्पष्ट न था।

यह आकर्षक दीर्घकाय जोडा जब लदन पहुचा तो शीघ्र ही उन्हे बकिंघम पैलेस मे महारानी विक्टोरिया का निमत्रण मिला। वे सहर्ष बकिंघम पैलेस गए और वहा उन्होने ड्रामा, रीडिंग व डायलॉग पर आधारित प्रोग्राम प्रस्तुत किया, जिसमे ऐन्ना आगे रही। इससे पूर्व वह न्यूयॉर्क मे शेक्सपीयर के प्रसिद्ध चरित्र लेडी मैकबेथ की भूमिका अदा कर चुकी थी। महारानी ने अपनी परपरा के अनुसार दोनो को उपहार देकर सम्मानित किया। इस बीच ऐन्ना स्वान और कैप्टेन बेट्स परस्पर एक-दूसरे को बहुत प्रेम करने लगे थे। अब वे चाहते थे कि स्वदेश लौटकर दाम्पत्य सूत्र मे बध जाए, किंतु समय का इतना अतर भी अब उन्हे बहुत बडा लगने लगा और 17 जून 1871 को लदन के ही एक बहुत प्राचीन गिरजाघर सेंट मार्टिन इन दि फील्ड्स मे शादी के बधन मे बध गए।

स्थानीय प्रतिष्ठित लोग उस शादी मे सम्मिलित हुए। ऐन्ना ने उक्त अवसर पर सफेद साटन का जो गाउन पहना था, उसे बनाने मे 91 44 मीटर (100 गज) कपडा और 45 72 मीटर (50 गज) लेस इस्तेमाल की गई थी। उक्त अवसर पर महारानी विक्टोरिया ने ऐन्ना को हीरे की एक बहुमूल्य अगूठी और बेट्स को एक बहुत कीमती घडी और जजीर उपहार मे दी।

चर्च के बाहर लोगो की भीड ऐन्ना और बेट्स की लोकप्रिय जोडी को दूल्हा-दुल्हन के रूप मे देखने के लिए उतावली हो रही थी अत विवाहित जोडे को भीड से बचाने के लिए पुलिस की व्यवस्था करनी पडी। विवाह के चार दिन पश्चात् प्रिंस ऑफ वेल्स ने उन्हे भोज पर आमंत्रित किया, जहा प्रिंस ने उनकी भेट रूस के ग्राइड ड्यूक ब्लादिमिर और लक्सम्बर्ग के प्रिंस जान से कराई। उसके पश्चात वे सभी राज्यो के दौरे पर निकले। एडिनबरा मे सर जेम्स यग ने उन्हे वहा के विश्वविद्यालय मे बुलाया जहा उनका चिकित्सा सबधी निरीक्षण किया गया।

19 मई 1872 मे स्कॉटलैंड के दौरे की समाप्ति पर ऐन्ना स्वान ने एक बच्ची को जन्म दिया। बच्ची का वजन 7 25 किग्रा और कद 68 58 सेमी (27") था, किंतु पैदाइश के तुरत बाद उसकी मृत्यु हो गई।

दुनिया का लम्बा दोरा समाप्त करन के पश्चात् व ओहायो (स रा अ) म घर बसाकर रहन लग।

जनवरी 1879 म एन्ना न एक बच्चे का फिर जन्म दिया। उस बच्चे का वजन 10 77 किग्रा था और लम्बाई 76 2 समी (30") थी। अपनी असामान्य शरीर रचना क कारण यह बच्चा भी अधिक समय तक जीवित नही रह सका और एक दिन बाद ही मर गया। जीवन म मातृत्व क इस खालीपन की पीडा चलत हुए आखिरकार 15 अगस्त 1888 का एन्ना स्वान भी चल बसी। उसकी कब्र के पत्थर पर आज भी यह शब्द पढ़ जा सकत हैं– 'मे तुम्हारा चेहरा अपनी ईमानदारी म सामन रखूगा आर तुम्हारी इच्छा के साथ में सतुष्ट रहूगा।''

ऐन्ना की मृत्यु के कुछ समय पश्चात् केप्टन ने दोबारा शादी कर ली। उसकी दूसरी पत्नी पादरी की एक लडकी थी, जिसका कद 152 4 सेमी (5) से कुछ अधिक था।

बेट्स ने अपनी पहली पत्नी ऐन्ना क दफनाने की कठिनाई को ध्यान म रखते हुए अपने लिए पहल से ही पीतल का ताबूत बनवा लिया था। सन् 1919 म जब उसकी मृत्यु हुई ता 8 व्यक्तिया ने मिलकर उस ताबूत को उठाया। कप्टेन बेट्स आर उसके परिवार क सदस्यो की कब्रे आज भी माउड हिल कब्रिस्तान (Mound Hill Cemetery) म दखी जा सकती हैं।

एगस मैकेस्किल

आज से लगभग सवा सौ साल पहले स्कॉटलैंड के एक द्वीप केप ब्रेटॅन मे एक अत्यत शक्तिशाली नवयुवक रहता था। उसका नाम एगस मैकेस्किल (Angus Macaskıll) था। सन् 1825 में उसका जन्म हुआ और केवल 38 वर्ष की उम्र मे सन् 1863 मे वह इस ससार से विदा हो गया।

एगस का कद 236 सेमी (7 9") और वजन 193 किग्रा था। उसकी छाती 177 सेमी (70") चौडी थी। उसकी बाहें लम्बी और मजबूत थीं और हाथों की हथेलिया 15 24 सेमी (6") चौडी थी। एक बार उसके एक जूते मे, जो आज भी उनके जन्म स्थान केप ब्रेटॅन मे सुरक्षित है, एक बिल्ली ने बच्चे दे दिए। 21 दिनो तक वह उन्हे उसी मे ही पालती रही और उसे जगह की कोइ तगी महसूस नही हुइ।

एगस मेकेस्किल के 12 बहन-भाइ थे। वे सबके सब सामान्य शरीर वाले थे। बचपन मे एगस के शरीर मे भी कोइ विशेष और विचित्र बात नहीं थी। वह भी अपने अन्य बहन-भाइयो की ही भाति हल्का-फुल्का और सामान्य कद का था। उसी दौरान उसके पिता स्वदेश छोडकर नोवा स्कोशिया (Nova Scotıa), कैनाडा चले गए और वहा उन्होंने आरा मशीन लगा ली। यही वह दौर था, जब एगस को अपने अदर असाधारण शक्ति का सचार होता अनुभव हुआ। बात यह हुइ कि एक दिन एगस के पिता अपने एक बेटे और कुछ मजदूरो की सहायता से एक बहुत बडे लट्ठे को उठाकर आरा मशीन के करीब लाने की कोशिश कर रहे थे, परतु लट्ठा मशीन तक न पहुचाया जा सका। इसी दौरान भोजन का समय हो गया। जब सब लोग भोजन की मेज पर बैठे तो एगस के पिता ने कुछ उखडी-उखडी आवाज मे उनसे कहा, "अब तुम इतने बडे हो गए हो। तुम्हे अपने भाइयो के साथ आरा मशीन पर काम भी करना चाहिए।"

एगस को पिता का यह रवैया काफी विचित्र सा लगा। वह उसी समय भोजन की मेज से उठकर चला गया। जब उसका पिता और भाइ भोजन से फारिग होकर आरा मशीन पर पहुचे, तो यह देखकर दग रह गए कि न केवल लट्ठा आरा मशीन तक पहुचाया जा चुका है, बल्कि आवश्यक्तानुसार उसके टुकडे भी हो चुके हैं। पूछने पर पता चला कि यह सब कुछ अकेले एगस ने किया है। यह सुनकर सभी हैरत में पड गए कि एक 14 वर्षीय किशोर मे इतनी शक्ति कहा से आ गइ।

14 वर्ष की उम्र तक एगस के शरीर मे कोइ विशेष परिवर्तन नही हुआ था, परतु 16वा वर्ष शुरू होने के पहले ही उसमे परिवर्तन होना शुरु हो गया जिसने अत मे उसे ससार का सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति बना दिया। 17 वे वर्ष मे पहुचते ही एगस का कद 200 66 सेमी (6 7") हो गया और दो ही वर्ष पश्चात् वह 236 सेमी (7 9") लम्बा हो गया। इसके बाद एगस के कद की बाढ रुक गइ। उस समय उसका वजन 193 किग्रा था। सबसे विचित्र बात यह है कि दीर्घकायता के बावजूद भी उसकी खुराक एक सामान्य व्यक्ति जितनी ही थी। वह बहुत खाऊ आदमी न था और प्राय पाइप पिया करता था।

एगस के बारे में एक महत्त्वपूर्ण एतिहासिक घटना बहुत प्रसिद्ध है। एक बार महारानी विक्टोरिया ने एगस को बुलवाया और जब वह दरबार में उपस्थित हुआ तो इच्छा व्यक्त की कि वह अपनी शक्ति का प्रदर्शन करे। एगस ने इधर-उधर दृष्टि दौडाइ परतु ऐसी कोइ उठाने योग्य वस्तु न दिखाइ दी जिनके द्वारा शक्ति का प्रदर्शन किया जा सके, तब उसने महारानी को सलाम किया और अपने एक पैर से नगे फर्श का दबाना शुरू कर दिया। जब उस जगह से उसने अपना पैर उठाया, तो फर्श पर उसके पाव का निशान इस तरह बन गया था, जैसे फर्श पत्थर [illegible] मोम का बना हो।

महारानी विक्टोरिया एगस के इस [illegible] प्रदर्शन से बहुत प्रभावित हुइ [illegible] बहुमूल्य अगूठी उपहार के तौर [illegible] अपने सारे जीवन मे एगस ने वे [illegible]

विवश होकर, मुक्केबाजी का मुकाबला किया। हुआ यह कि एकबार एक मुक्कबाज 113 6 किग्रा ने चैलज किया कि वह एगस को पराजित कर देगा। एगस न उसकी बात का आया-गया करना चाहा, परतु जब लाग उसे कायर कहने लगे, ता उसने यह चैलज स्वीकार कर लिया। दगल की जगह क लिए एगस क जन्मस्थान केप ब्रटॅन का ही तय किया गया। कहा जाता है कि सिडनी से 30 नोकाए सिर्फ उन खिलाडियो का लेकर कप ब्रेटॅन पहुची थी जो केनाडा या अमरिका क विभिन्न नगरो से उस दगल के लिए आए थे। दगल का आयोजन बडी शान से किया गया। लाखा दशका क सामने जब दाना जवान मैदान मे उतर और हाथ मिलान क लिए आमन-सामने आए, तो रफरी चिल्ला उठा कि दो शक्तिशाली व्यक्ति आज मकाबला करन क लिए हाथ मिला रहे हैं ।

अभी रेफरी का भाषण समाप्त भी नही हा पाया था कि 113 6 किग्रा भारी वह शखीखोर मुक्केबाज कराहता हआ एगस क परा म गिरता दिखाई पडा। उसक हाथ की सब हड्डिया चकनाचूर हो गई थी। पज का मास बाहर निकल आया था और फटन के कारण जगह जगह म उसम से रक्त बह रहा था। अर्थात एगस न हाथ मिलाते ही उस जीवनभर के लिए बकार कर दिया था।

1849 म जब एगस 24 वर्ष का था तो वह पहली बार न्यूयॉर्क गया। वहा उसन एक सर्कस कम्पनी के साथ 5 वर्ष तक विभिन्न नगरा मे अपनी असाधारण शक्ति का प्रदर्शन किया। प्रदर्शन क वे क्षण बहुत दिलचस्प हुआ करते थे, जब एक बोना एगस की खुली हथेली पर खडा होकर विभिन्न प्रकार के नृत्य दिखाता था।

उस यात्रा मे यदि एगस की मा उसके साथ होती, ता शायद वह इतनी जल्दी न मरता, क्योकि एक वही थीं, जो उसे शर्ते लगाने से हमेशा रोका करती थी। न्यूयॉर्क क अपने अतिम दौरे मे एगस ने एक जगह अपनी शक्ति का एक एसा प्रदर्शन किया जो उसकी मृत्यु का कारण बन गया। हुआ यो कि एक हजार डालर की एक शर्त जीतने के लिए एगस ने 997 90 किग्रा भारी एक लगर सिर से ऊचे उठा लिया। शक्ति के प्रदशन म तो वह सफल रहा, लेकिन लगर की एक जजीर फिसल कर उसके कधे पर आ गिरी और कधा जख्मी हो गया। यही जख्म उस महान शक्तिशाली व्यक्ति की मृत्यु का कारण बना। हर प्रकार के इलाज के बावजूद जख्म प्रतिदिन बिगडता चला गया और आखिरकार एक दिन वह जख्म लाइलाज हो गया। एगस का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरने लगा। विवश होकर एगस को अपने भीतर संचित असीम शक्ति का प्रदर्शन बद करना पडा। उसने इगलिश टाउन म दो आटा चक्किया लगा ली और जीवन क अंतिम दिन वही गुजार दिए।

आज भी एगस की कब्र इगलिश टाउन मे मौजूद है, जिसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। उसकी कब्र सगमरमर की बनी हुई है और उस पर लगा हुआ शिलालेख एगस के जीवन की एक सार्थक झलक प्रस्तुत करता है। कप ब्रेटन क निवासी आज भी बडे गर्व से कहत हैं कि एगस ससार का सबस शक्तिशाली व्यक्ति था।

प्राचीन काल मे यह समझा जाता था कि ससार मे सबसे पहली मानव नस्ल दैत्याकार इसानो की थी। प्राचीन यूनानियो और अमरीकी इंडियनो मे ऐसी कई अनुश्रुतिया मिलती हैं। इस विश्वास के आम होने का एक कारण यह भी है कि पृथ्वी की खुदाई के दौरान जो मानव-ककाल आर हड्डिया प्राप्त हुई, उनका आकार बहुत बडा था।

'बुक आफ जेनेसिस' (Book of Genesis) के अनुसार उन दिनो पृथ्वी पर दैत्याकार मनुष्य मौजूद थे। भारतीय धर्म-ग्रथो और बाइबिल मे कई जगह ऐसे मनुष्यो का उल्लेख मिलता है। मैगेलन (Magellan) और उसके साथियो ने सन् 1520 मे पैटेगोनिया (Patagonia), दक्षिणी अमरीका का दौरा किया था। उनके विवरण के अनुसार वहा के इंडियनो के कद 228 6 सेमी (7½′) के लगभग थे।

दैत्याकार शासक

इतिहास मे सबसे पहला दैत्याकार शासक मिस्र का शिशो कोहरिस था, जो तृतीय शासन का बादशाह था। उसका कद 243 84 सेमी (8′) बताया जाता है। प्रसिद्ध इतिहासकार प्लीनी (Pliny) ने ऑगस्टस के शासनकाल के दो ऐसे व्यक्तियो का उल्लेख किया है, जो 304 8 सेमी (10′) लम्बे थे। उनके शरीर सालुस्टियन (Sallustian) के बागो मे सुरक्षित किए गए।

एडवर्ड गिबन ने एक दैत्याकार मनुष्य मैक्समन के बारे मे बताया हे, जो सन् 235 ई मे रोम का शासक था। उसका कद 243 84 सेमी (8′) था। वह इतना शक्तिशाली था कि एक ऐसी गाडी को खीच लेता था, जिसे दो बैल भी मुश्किल से हिला सकते थे। वह एक दिन मे 6 गैलन शराब और लगभग 18 किग्रा मास खा जाता था। उस शासक ने केवल तीन वर्ष तक शासन किया।

शाही दरबारी तथा अन्य

14-15वी शताब्दी मे शासकगण इस बात की इच्छा रखते थे कि उनके दरबार मे दैत्याकार आर बौने लोग एकत्र हो। फ्रास के बादशाह फ्रासिस प्रथम (Francis I) ने एक दैत्याकार मानव को अपने बागो की रखवाली के लिए नियुक्त किया था। महारानी एलिजाबेथ प्रथम के महल के द्वार पर एक ऐसा ही दैत्याकार दरबारी खडा होता था। महारानी के उत्तराधिकारी जेम्स प्रथम ने भी महारानी की परम्परा को आगे बढाया। उसके दरबान का नाम विलियम पार्सन था, जिसकी शक्ति और वीरता की कई कथाए लोगो मे प्रसिद्ध थी। एक व्यक्ति के अनुसार कभी-कभी वह हसी मजाक म दो बडे-बडे कद के गार्डो को अपनी बगल मे दबोच लेता और भागना शुरू कर देता। वे अपनी तमाम चेष्टाओ के बावजूद उसके शक्तिशाली बाजुआ से न निकल पाते।

पार्सन के पश्चात विलियम इवास (William Evans) दरबान हुआ, जो चार्ल्स प्रथम के चहेते बौने जेफरी हडसन का मित्र था। इवास पार्सन से भी लम्बा था। जब बादशाह चार्ल्स को गद्दी से उतार दिया गया ओर कामनवेल्थ का जमाना आया तो ओलिवर क्रॉमवेल (Oliver Cromwell) ने शाही परम्परा को अपनाए रखा। उसके दरबान का नाम डेनियल था, जिसका कद 228 6 सेमी (7 6″) बताया जाता है।

दैत्याकार मनुष्यो की सेना

प्रशिया के शासक फ्रैडरिक विलियम प्रथम ने दैत्याकार मनुष्या को एकत्र किया था। इतिहास मे सबसे अधिक दैत्याकार सैनिक फ्रैडरिक के पास ही थे। पाटासडम मे उसके महल की रक्षा का दायित्व 2900 दैत्याकार व्यक्तिया के हाथ मे था। बादशाह के लिए दैत्याकार व्यक्तियो की रेजीमेट गव और आनद का साधन थी। वॉल्तेयर (Voltaire) न लिखा हे—"प्रथम रेंक म सबसे छोटे कद का व्यक्ति 213 36 सेमी (7) लम्बा था।" बादशाह के एजेट यूरोप और एशिया से ऐसे दैत्याकार व्य॰ करते थे।

चीनी दैत्याकार चाग

सन् 1885 म 19 वर्षीय एक चीनी लडक न लदन मे अपनी नुमाइश की और लागो पर अपना गहरा प्रभाव छोडा। उसका निवास स्थान मिस्री हाल हमेशा लोगो स भरा रहता था। एक विज्ञापन क अनुसार वह 274 32 समी (9) लम्बा आर 163 29 किग्रा म भी अधिक भारी था। वह भारी साल के स्लिपर और लम्बा रशमी कुर्ता पहन रहता था। उसने अपने सिर स कभी भी चीनी हैट नही उतारी। चग जू नामक एक ठिगने कद का बौना हमशा उसक पावा म बैठता था।

चाग जिसका पूरा नाम चाग वू-गा (Chang wu-gow) था, 1846 मे फूचो (Foochow) म पैदा हुआ था। चाग आकर्षक शरीर और मनहर मुस्कान का धनी था। वह बहुत पढा-लिखा था। कई देशा की भाषाए प्रवाह के साथ बोल लता था। प्रिस ओर प्रिसेस आफ वेल्स स भेट क दौरान उन्होन चाग स प्रार्थना की थी कि वह चीनी लिपि म अपना नाम दीवार पर लिखे। उसकी लिखावट की माप की गई ता वह फर्श स 304 8 समी (10') की ऊचाइ पर लिखी हुई थी।

सन् 1878 मे, यूरोप का सफल दौरा करने क पश्चात्, चाग वापस अपने घर चीन लौट गया। नवम्बर 1893 मे उसकी मत्यु हो गइ।

चीनी दैत्याकार चाग

इला इविंग

इला इविंग (Ella Ewing) 9 मार्च 1872 का लविस, मिसोरी (स रा अ) म पैदा हुई। वह 9 स 12 वर्ष की आयु क दौरान बहुत लम्बे कद की हा गइ। इला का सारा जीवन गिरजा के लिए अर्पित था। बाल्यावस्था म उसने सण्ड स्कूल म शिक्षा प्राप्त की थी।

19-20 वर्ष की उम्र मे वह 213 36 समी (7) लम्बी थी। तभी मिसौरी म आयोजित एक मेल क मैनेजर की नजर इला पर पडी। उसने उस नुमाइश क लिए आमंत्रित किया। इसक बाद वह कइ वर्षो तक 'बर्नम एण्ड बली' क साथ रही। इस बीच भी उसका कद बराबर बढ़ता रहा। 25 वष की उम्र मे वह 228 6 समी (7 6") लम्बी थी और वजन 113 4 किग्रा था।

इला के नैन-नक्श बहुत अच्छ थे और वह हरदम प्रसन्न मुद्रा मे रहती थी। उसन अपन लिए एक विशेष प्रकार का घर अपनी आवश्यकताओ के अनुसार बनवाया था, जिसकी छत 457 2 सेमी (15') ऊची थी। उसका बिस्तर 289 56 सेमी (9½) लम्बा आर उसके नहान का टब 182 88 सेमी (6') का था।

यह शिष्ट और निश्छल महिला 10 जनवरी 1912 का चल बसी। उस समय वह अमरीका की सबस लम्बी महिला थी। उसका ताबूत 22 86 मीटर (25 गज) लम्बा था।

सर्वाधिक लम्बी महिला

इस अग्रेज महिला जेन बैनफोर्ड (Jane Banford) का जन्म 26 जुलाइ 1895 मे हुआ था। 1906 मे उसके सिर पर एक जख्म हुआ, जिसने उसके कद पर विशेप प्रभाव डाला और वह लम्बी होती गइ। दो वर्ष बाद उसका कद 198 12 सेमी (6' 6") हो गया। 1922 मे अपनी मृत्यु के समय वह 231 14 सेमी (7' 7") लम्बी थी। बर्मिंघम विश्वविद्यालय के मेडिकल म्यूजियम मे उसका ककाल अब भी सुरक्षित रखा हे।

क्लिफर्ड थॉम्पसन

क्लिफर्ड थॉम्पसन (Clifford Thompson) जब सर्कस मे था, तो वह ससार का सर्वाधिक लम्बा आदमी माना जाता था। वह 261 62 सेमी (8'7) लम्बा था। थॉम्पसन 1906 मे विस्कांसिन (स रा अ) मे पैदा हुआ था। उसकी वृद्धि की गति बिल्कुल सामान्य थी, परतु उसकी वद्धि एक निधारित सीमा पर रुकने के बजाय 21 वर्ष की आयु तक जारी रही।

टीचर्स कॉलेज से मुक्त होने पर उसने शिक्षक बनने का इरादा बदल दिया और सर्कस मे शामिल हो गया। वह 12 वर्ष तक सर्कस मे रहा। 1939 मे उसने मेरी बारस से शादी कर ली, जो 165 1 सेमी (5'5') लम्बी थी। उसकी पत्नी ने उसे इस बात पर राजी कर लिया कि वह केवल एक अद्भुत मनुष्य के रूप मे अपना जीवन न गुजारे, बल्कि उसे कुछ ओर करना चाहिए। अत उसने सेल्समैन की नौकरी कर ली।

अत मे उसने मार्क्वेट (Marquette) विश्वविद्यालय के लॉ स्कूल मे दाखिला ले लिया। 1944 मे वह ग्रेजुएट हुआ और पोर्टलैंड, ओरेगॉन (स रा अ) मे वकालत शुरू की। वह दुनिया का सर्वाधिक लब कद का वकील था।

जैक अर्ल एक दैत्याकार मानव

यह एक आश्चर्यजनक बात हे कि हमारे समय का अत्यधिक लम्बा व्यक्ति जन्म क समय इतना छाटा था कि उसका वजन मुश्किल से 2 72 किग्रा हागा। डाक्टरा को उसके जीवित रहने की कोई आशा नही थी। वह 1906 म डनवर (Denver) म पेदा हुआ था।

जैक अर्ल—जिसका कद 7 7½" था

परतु यह नन्हा लडका, जिसका नाम जक अर्ल था, कठिनाइया का सामना करता रहा और उसका वजन बढता रहा। फिर भी वह हम उम्र बच्चा से छाटा रहा। इसके पश्चात् उसकी वद्धि अत्यधिक तेज रफ्तार से होने लगी। उसके कद म इचो ओर फुटो की वृद्धि होनी शुरू हा गई। उसका परिवार बाद म टेक्सास चला गया, जहा उसक पिता जवाहरात का काम करते थे।

जैक की वृद्धि न रुकी। 10 वर्ष की उम्र मे वह 182 88 सेमी (6) से भी अधिक था। उसक पर इतने बडे थे कि विशेष प्रकार क बूटो का आर्डर देना पडता था। वह अपने स्कूल क मित्रो मे एक मीनार के रूप म माना

जाता था। लडक बच्चे उस पेकोस विल (Pecos Bill) क नाम स छेडत थ। पकोस विल एक 'काउ व्वाय हीरो था जिसका कद वहुत लम्बा था।

जक वहुत परेशान हो उठा। जस ही स्कूल से छुट्टी हाती वैसे ही वह लडको की छड-छाड स वचने क लिए भाग खडा होता।

उसक माता-पिता वहुत चिंतित थ। वे उस डाक्टर के पास ले गए परतु डाक्टर उनकी काइ सहायता न कर सक।

जक क सबध म बात फैलती गइ। उसे हास्य फिल्मो म काम करन का कहा गया। सन् 1920 म हर व्यक्ति का यह स्वप्न होता था कि वह फिल्मा म काम करे। जक वहुत शर्मीला था फिर भी उसन फिल्मो म काम करना खुशी स स्वीकार कर लिया।

इस दैत्याकार लडक ने लगभग 50 हास्य फिल्मा म काम किया। फिल्म निर्माताआ न उसका नाम जेकब अरील्च स बदलकर जक अर्ल रख दिया और जक अर्ल क नाम स पहचाना जान लगा।

एक हास्य फिल्म की सटिग म जैक एक मचान स गिरकर जख्मी ना गया। सिर म चाट लगन क कारण वह 72 घटा म पूर्णतया अधा हो गया। कई महीना क इलाज क वाद वह दुवारा दखने योग्य हा सका। स्वस्थ हान क पश्चात् उसन कॉलज म दाखिला ल लिया। एक दिन वह अपन मित्रा क साथ रिगलिग व्रदर्स और वर्नम एण्ड वल्ली का सकस दखने गया। वही उस ससार का सवाधिक लम्बा व्यक्ति जिम टावर (Jim Tarver) दिखाई दिया। जैक उसन कुछ इच लम्बा था। वह जिम की आर देखता रहा और सारे लोग जैक की ओर। कुछ दिना वाद सर्कस का मैनेजर जक से मिलने उसक घर गया। मनेजर ने जेक से उसके पिता की माजूदगी म एक वर्ष का अनुवध किया। इस प्रकार वह सर्कस म शामिल हा गया।

इस ताड जस नवयुवक न सर्कस के जीवन का कॉलेज से वहुत भिन्न पाया। जैक न सर्कस म कई मित्र वनाए। खासतौर पर वान ओर ठिगने उसके वहतरीन साथी थ। हरी उसका दुख-सुख का सबसे अच्छा दास्त था। जब कभी जेक उदास हाता ता हेरी कहता, "दुखी क्या हा? हम स अधिक विचित्र आर बेढव लाग ता दर्शका मे मोजूद ह।"

1940 म जैक का सर्कस म रहते 14 वप हा चुक थे। अव स्वय की नुमाइश करते-करत वह ऊव गया था। उसने सर्कस छाड दिया और एक शराव की कम्पनी म सेल्समैन की हैसियत स काम करने लगा।

लोग उसे वहुत पसद करते ओर उस आर्डर देने क लिए वुलाना अपना सम्मान समझत। जैक मे सजनात्मक याग्यताए वहुत थी। उसने पेंटिग शुरू कर दी। वह मूर्तिकारी करता ओर कविता भी लिखता था। उसने अपनी कविताआ का एक सग्रह भी प्रकाशित करवाया, जिसका नाम 'लाग शैडाज' था। वह फाटाग्राफी मे पुरस्कार भी प्राप्त कर चुका था।

जक एक स्पशल कार चलाया करता था। कोलारडा (Colorado) म उसकी कार उलट गई। वह जख्मी हा गया। उस क्लीनिक म इलाज के लिए दाखिल हाना पडा। 1952 म इस लम्ब व्यक्ति का जीवन समाप्त हा गया।

आयरलैंड के दो दैत्याकार मनुष्य

चार्ली बायर्न

ब्रिटन के प्रसिद्ध सजन और शरीरशास्त्री जान हण्टर इस बात पर दृढ़ था कि वह आयरिश दैत्याकार का ककाल उसकी मृत्यु के पश्चात् अपने पास रखेगा, परतु चार्ली बायर्न (Charlie Byrne) उसे किसी भी कीमत पर अपना ककाल देने को तैयार न था। उसने सुन रखा था कि हण्टर के पास एक बडी केतली है, जिसमे वह ऐसे इसानी नमूनो के शरीर पर से मास को उबाल कर अलग करता है। कभी-कभी रात्रि को बायर्न को वडे बुरे स्वप्न आते कि उसका शरीर उबल रहा है और उसका मास गल-गल कर उतर रहा है। कभी वह स्वप्न मे देखता कि वह वड मुर्गी के बच्चे की भांति केतली म उबल रहा है।

हण्टर ने उसे काफी धन देना चाहा, जिसे बायर्न ने बडी दृ शीलता से झटक दिया।

चार्ली बायर्न का जीवनकाल बहुत थोडा रहा, परतु खुशियो से परिपूण रहा। वह आयरलेंड मे सन् 1761 में पैदा हुआ था। अप्रेल 1782 मे वह लदन म रहा। उसकी नुमाइश के सबध में एक विज्ञापन मे छपा था, "मिस्टर बायर्न नामक विचित्र आयरिश देत्याकार मनुष्य ससार का अत्यधिक लम्बा व्यक्ति हे, जिसका कद 248 92 सेमी (8 2) और शरीर पूणतया स्वस्थ है। अभी वह केवल 21 वर्ष का है।"

विज्ञापन ने इतना प्रभाव डाला कि लोग उस लम्ब नवयुवक को देखन के लिए बडी उत्कठा से एकत्र हुए। इनमे प्रतिष्ठित व्यक्ति, दरबार से सबधित लोग और रॉयल सोसाइटी के सदस्य भी शामिल थ। निस्सदेह जान हण्टर भी उसे देखने के लिए आया। जब हण्टर ने बायर्न को दखा तो सबस पहला विचार उसके मन म यह आया कि किसी प्रकार इसके ककाल को अपने सग्रह मे शामिल किया जाए, परतु कठिनाई यह थी कि बायर्न उस समय जीवित था। बहरहाल हण्टर का सपना पूरा होने मे अभी काफी समय बाकी था।

शाही परिवार के लोग ऐसे अजीबोगरीब लोगो को दरबारी की हेसियत प्रदान करते थे। कहा जाता है कि कुछ समय के लिए बायर्न जार्ज तृतीय सट जेम्स के महल मे दरबारी भी रहा था, परतु शीघ्र ही वह वहा से चला आया।

बायर्न बहुत अधिक शराब पीता था। एक रात वह डगमगाता हुआ घर पहुचा। ठण्ड लगने के कारण निमोनिया ने धर दबोचा। उसे बताया गया कि जान हण्टर का एक आदमी उसकी तबियत पूछन के लिए आ रहा है। बायर्न न मृत्यु का अपन सामने मौजूद अनुभव किया। उसने अपने गाव वालो से वचन लिया कि वह उसका शरीर समुद्र मे डाल दे, ताकि कोई सर्जन या शरीरशास्त्री उसके ककाल को प्राप्त न कर सके।

केवल हण्टर ही इस बात का अभिलाषी न था कि बायर्न का ककाल उसे मिले बल्कि अन्य सर्जन भी इस कोशिश मे थे। अत मे जान हण्टर को सफलता मिली। इसके लिए उसे 500 पौंड की रकम देनी पडी। हण्टर ने अपनी जिज्ञासा शात करने के लिए उसके शरीर को चीरा-फाडा, ताकि देख सके कि उसके शरीर म क्या विशेषता थी। अत म बायर्न का ककाल हटेरियन (Hunterian) म्यूजियम मे रख दिया गया। जान हण्टर की मृत्यु के 10 वर्ष बाद हण्टर के तमाम सगृहीत नमून रॉयल आफ सजन की निगरानी मे चले गए, जहा पर आज भी बायर्न का ककाल देखा जा सकता है।

पैट्रिक कॉटर

जिन दिनो बायर्न की लदन मे नुमाइश हो रही थी, एक ओर आयरिश दैत्याकार व्यक्ति सामने आया। वह भी बायर्न की भांति अपने-आपको ओ ब्राइन (O Brien) कहता था और गर्व करता था कि वह प्राचीन आयरलैड के बादशाह ब्राइन बोरिउ (Brien Boreau) की नस्ल स है। पेट्रिक कॉटर (Patrick Cotter) किन्सेल (आयरलेड) म 1760 मे पैदा हुआ था। शुरू मे कुछ समय उसने राज-मजदूर की

हैसियत से काम किया, परत शीघ्र ही अपन तेजी स बढ़ते हुए कद के कारण वह इस काम के अयाग्य सिद्ध हुआ। उमक पिता ने उसे किराय पर नुमाइश मे दाखिल करा दिया।

इस लम्बे नवयुवक न ब्रिटन मे घूम-घूम कर अपना प्रदशन किया। नाथम्पटन (इग) मे मिस्टर ओ' ब्राइन अपना पाइप बड विचित्र ढग से सुलगाता। वह कस्बे की लैम्प का अपना पाइप सुलगाने के लिए प्रयाग करता था। ब्रिज स्ट्रीट मे मिस्टर डेण्ट के मकान क सामने रुकता, लैम्प की टोपी उतार कर पाइप म तम्बाकू भरता आर लैम्प की टोपी के शोले मे अपना पाइप सुलगाता ओर चल पडता।

सन् 1782 म कॉटर लदन मे था जहा उसका बहुत सम्मान किया गया। कुछ वर्षो बाद उसने अपन बारे म एक विज्ञापन दिया—"मे जानता हू कि मरा कद कवल 251 46 समी (8 3") है जबकि मेरे पूर्वज आयरलैंड क प्राचीन बादशाह ब्राइन बोरिउ का कद 274 32 समी (9) था। म आशा करता हू कि उस उम्र म मैं भी उसी कद का हो जाऊगा। अभी मरी उम्र ही क्या हे। मुश्किल स 18-19 वर्ष क बीच।"

कॉटर की शादी की खबर समाचारपत्रो मे इस प्रकार छपी थी, "ओ' ब्राइन। जिसने पिछली सदिया मे सट जम्स स्ट्रीट म अपनी नुमाइश की, आखिर शादी क बधन म बध गया। उसकी दुल्हन का नाम कव (Cave) है।"

फ्लोरिडा (स ग अ) म रिगलिग म्यजियम म एक बहुत पुरानी तस्वीर है, जिसमे प्रसिद्ध पोलिश बौना काउट बोरोलाव्स्की ओ' ब्राइन के साथ दिखाया गया है। तस्वीर मे काउट बोरोलाव्स्की ओ' ब्राइन क घुटनो से भी नीचा है।

एक व्यक्ति के कथनानुसार सन् 1870 म एक डिनर के मौके पर कॉटर न जब अपनी जब म हाथ डाला ता उसमे से काउट बारोलाव्स्की बाहर निकला था।

चार्ली बायर्न की भांति कॉटर का भी शका थी कि उसकी लाश सर्जन लोग ले जाएगे ओर चीर-फाड करगे। उन दिनो यह बात मशहूर थी कि मेडिकल के विद्यार्थी कब्रे खोदकर लाशे उठा ले जाते है। इसीलिए जब 8 दिसम्बर 1806 का ब्रिस्टल (Bristol) मे कॉटर की मत्यु हुई ता उसकी इच्छानुसार उसकी कब्र 365 76 समी (12) गहरी खोदी गई। दफनाने क बाद कब्र पर लोहे की सलाखे भी लगाई गइ थी।

दीर्घकाय मनुष्य क्या और क्यो?

प्राय दीघकाय या विशालकाय ऐसे व्यक्तियो को कहा जाता ह जो साधारण रूप से लम्ब आर भारी शरीर के होते हैं। यदि एक व्यक्ति 198 12 समी (6 6½") से लम्बा है, तो वह दीर्घकाय समया जाता है। स्त्रियो के बारे में यह सीमा 186 94 सेमी (6 1 6") ह।

आज तक के सबसे लम्बे आदमी का सम्मान रॉबट पर्शिग वैडलो को प्राप्त है। वैडलो का कद 272 03 सेमी (8' 11 1") था और तब भी उसका कद बराबर बढ़ रहा था, परतु वैडलो के मामले में शारीरिक विकारो की बहुत बडी भूमिका थी। इसीलिए उसकी मृत्यु 22 वष की उम्र मे 1940 मे ही हो गइ। सामान्य किस्म का सबसे लम्बा व्यक्ति यानी जिसके कद म वृद्धि किसी बीमारी के कारण नही हुई, एगस मैकेस्किल था, जो स्कॉटलैंड मे पैदा हुआ था। उसका कद उसकी मृत्यु के समय 236 22 समी (7 9") था।

अत्यधिक लम्बा कद मेडिकल साइस म प्राय बीमारी का कारण समझा जाता है, जो पिटूयूटरी ग्लैड मे विकार के कारण होता है। यह ग्लैड अधिक हार्मोन छोडने लगती है। यदि यह ग्लैंड हार्मोंस कम मात्रा मे पैदा करती है, तो आदमी ठिगना रह जाता है। वैसे अन्य ग्रंथियो मे पैदा होने वाली खराबिया भी दीघकायता का कारण हो सकती हे। उदाहरण के लिए पुरुषो मे अण्ड-ग्रंथि की ओर स्त्रियो मे डिम्ब-ग्रंथि की खराबी।

लम्बे कद के लोगो के लिए ढेरो मनोवैज्ञानिक किस्म की समस्याए पैदा हो जाती हे। जहा से कोई दीर्घकाय व्यक्ति गुजर रहा होता है, छोटे-बडे सभी खडे हो जाते हैं और उसे हैरत व शरारतपूर्ण दृष्टि से देखने लगते है। इस प्रकार जब कोई किसी को टकटकी बाधकर देखने लगे तो उस व्यक्ति का मस्तिष्क कार्य करना बद कर देगा, शरीर सुन्न पड जाएगा और वह चाहेगा कि जितनी जल्दी हो सके वहा से निकल जाए। अपने बारे म रॉबर्ट वैडलो ने कहा था, "यदि मैं ऐसा हू तो इसमे मेरा कोई दोष नही।" इस प्रकार के कुछ लोग अपने मस्तिष्क को इधर-उधर से हटाकर कला और साहित्य पर लगा लेते हैं ओर वे प्राय अत्यधिक सृजनात्मक शक्तियो के स्रोत सिद्ध होते है।

एक दीर्घकाय व्यक्ति का जीवन भी बौनो के जीवन के समान ही अजीब, परतु उसके बिल्कुल प्रतिकूल होता हे। दीर्घकाय व्यक्तियो के लिए अपने लम्बे कद के सिवा अन्य सभी वस्तुए अत्यत छोटी लगती है। सामान्य कारो और रेल के डिब्बो मे उनका सिर छत फाडता जेसा लगता है। स्कूल में उनके लिए कुर्सिया ओर डेस्के बिल्कुल अनुपयुक्त हो जाती हें। याद आप 9 वर्ष के हैं और आपका कद 182 88 सेमी (6') है, तो ब्लक बोर्ड पर कुछ लिखने के लिए आपको झुकना पडेगा, और कक्षा के सारे साथी, शायद शिक्षक भी ठहाके लगाकर हस पडेगे। इस प्रकार लिखते समय समूची पेंसिल भी आपके लिए विचित्र सी प्रतीत होगी। सीढ़िया चढते और उतरते समय अलग मुसीबत। जरा सा उछले नही कि सिर छत से जा लगा। दरवाजे से गुजरने म भी मुसीबत।

लम्बे व्यक्ति के वस्त्रो मे कपडा अधिक लगता है और खर्च भी अधिक आता है। रेडीमेड वस्त्र बडे आकार मे आते नही। जूतो के लिए भी फर्मा अलग बनवाना पडगा। रॉबर्ट वेडलो के लिए जो विशेष जूते बने थे, उनके लिए उसके पिता को 35 डालर खर्च करने पडे थे। बीस वर्ष की उम्र मे उसका साइज 37 हो गया था और उसके लिए 80 डालर मे जूते बने थे, क्योंकि जूतो की लम्बाई 46 99 सेमी (18½") थी। न केवल यह कि दीर्घकाय व्यक्ति को हर चीज के लिए अधिक कीमत देनी पडती है, बल्कि वह चीज बाद मे काम भी नही आती, क्योंकि वह छोटी हो जाती है और कद बढ़ जाता है। रॉबर्ट वैडलो का पिता अपने पुत्र के छोटी उम्र के वस्त्र और जूते इस्तेमाल किया करता था।

बस या ट्रेन पर यात्रा करने मे लम्बे व्यक्ति को अत्यत मुश्किल होती है। चढ़ते और उतरते समय की कठिनाई और ऊपर से लोगो की घूरती हूई न

जाज आगर मक्स का दत्याकार व्याक्त

इसी प्रकार भोजन भी उसक लिए समम्या वन जाता है। पीटर कोटर अपने नाश्ते म तीन वडे बद, चीस अण्डे और पूरा एक गैलन दूध पिया करता था।

साराश यह कि एक लम्ब व्यक्ति क लिए मुसीबतो और कठिनाइयो की काई सीमा नहीं होती हे। यहा तक कि मरना भी उसके लिए अत्यत मुश्किल सिद्ध हाता है। कब्र का साइज भिन्न और तावूत भी स्पेशल आर्डर देकर स्पेशल साइज का बनवाना होता है। शायद सवस हास्यास्पद ओर मुश्किल समय उसके लिए वह होता हे, जव काई वच्चा यह पूछे कि ऊपर का मौमम कैसा है? वपा या आधी की कोई सम्भावना हो ता वताइए?

ससार के प्रसिद्ध बौने

ससार के प्रसिद्ध बौने

दुनिया के हर हिस्से मे बौनो के बारे मे असख्य किस्से कहानिया मौजूद हैं। उत्तरी यूरोप के लम्बे कद के लोग यह समझते थे कि छोटे कद के लोग (बौने) जादू-टोने के परिणाम हैं। वे गुफाओं मे रहते हैं और असाधारण शक्तियो से युक्त हैं। एशिया ओर यूरोप की लोककथाओ मे इन्हे भूत-प्रेत ओर जिन्न भी बताया गया है। उनमे इन्हे शक्की स्वभाव का आर अधविश्वासी, परतु मित्रता और त्याग का प्रतीक भी कहा गया। ईसा के जन्म से हजारो वर्ष पूव मिस्र के प्राचीन शासक बौनो और ठिगने लोगों को अपनी सेवा मे रखा करते थे। वे कठिन ओर उदास क्षणो मे सगीत, नृत्य आर कहानियो के द्वारा उनका मनोरजन करते थे।

प्राचीन रोम के बौने

रोम के अनेक बादशाह अपने दरबार मे बौनो को विशेष स्थान दिया करते थे। सम्राट आगस्टस (Augustus), जिसने रोम साम्राज्य की नीव रखी, ने ता अपने उत्तराधिकारी के लिए एक परम्परा ही बना दी थी। अपने देश मे उसने यह आज्ञा निकाली थी कि जहा कही बौने मिले उन्हे दरबार म पेश किया जाए। आगस्टस के एक प्रिय रोमन योद्धा लुई का कद 60 96 सेमी (2′) से भी कम था। बौनो को एकत्रित करने का शाक सम्राट डोमेट्सियन को भी था।

प्राचीन रोम मे बौनो की बहुत अधिक कीमत थी। बौनो की बिक्री का व्यापार अत्यत लाभदायक समझा जाता था। इसीलिए बच्चो को एक विशेष प्रकार की खूराक दी जाती थी, जिससे इनके कद की वृद्धि रुक जाती थी।

बौने बादशाह

बौने लोगो के इस प्रसग मे लीदिया के बौने बादशाह क्रोसस (Croesus) और अत्तिला (Attıla) का उल्लेख भी आवश्यक माना जाएगा। अत्तिला के बारे मे प्रसिद्ध हे कि उसने 5 लाख सेनिको की एक विशाल सेना का प्रतिनिधित्त्व किया था और लोग उसे 'ईश्वर का चाबुक' कहा करते थे।

प्राचीन समय मे सम्भ्रात लागो के घरो मे बौनो को रखने का विशेष प्रचलन था। सोलहवी ओर सत्रहवी शताब्दी म यह शौक काफी बढ़ गया। पूरे यूरोप मे किसी बौने या ठिगने व्यक्ति को घर के प्रवेश द्वार पर आगतुका के स्वागत के लिए रखा जाता था। उस समय की कलाकृतिया नन्हे गुलामो की कहानिया कहती ह। कुछ दशा म यह परम्परा 19वी शताब्दी तक रही।

एक असाधारण विवाह

रूस के जार पीटर महान से बढ़कर किसी ने भी बौनो मे इतनी दिलचस्पी न ली होगी। पीटर का एक प्रियपात्र वॅलकोफ नाम का एक ठिगना व्यक्ति, सन् 1710 मे उसने राजकुमारी (जारेव्ना) थ्योडोरूना की एक ठिगनी सेविका से शादी कर ली। रूस के जार ने इस शादी का प्रबध स्वय अपने हाथो मे लिया। शादी क उत्सव के लिए उसने 72 बौना को एकत्र किया ओर एक बौने ने शादी के जुलूस की अगुवाई की। उसके पीछे समाट जार आर विवाहित जोडा विदा हुआ और उनके साथ 72 बौनो के नन्हे-नन्हे कदमो ने साथ दिया। लोगा की बहुत बडी भीड इस जुलूस के चारो ओर एकत्र हो गई। रूस की विवाह-प्रथा के अनुसार नव-विवाहित जाडे के हाथो मे विवाह का बधन भी जार ने स्वय अपने हाथा से बाधा था। विवाह भोज का प्रबध भी दर्शनीय था। बडे कद के मेहमानो का बडे कद के मेजबान मिले और छोटे कद के मेहमानो को छोटे कद के मेजबान। उनके लिए नन्ही प्लेटो ओर चम्मचो का प्रबध भी विशेषरूप से किया गया था।

जेफरी हडसन

बौनो के रगारग इतिहास मे इग्लड के जेफरी हडसन (Jeffery Hudson) का बहुत ऊचा स्थान है। हडसन एक सिपाही ओर जासूस था। उसका जन्म सन् 1619 मे हुआ था। यद्यपि हडसन के मात पिता सामान्य कद के थे, परतु बेटा 16 वष की [illegible] 20 32 सेमी (8′) लम्बा हो सका। [illegible]

स्वस्थ था। उसके पिता ने उसे बकिंघम के ड्यूक की बीवी की सेवा में प्रस्तुत किया और उनने हडसन को अपने घर के सदस्यों में सम्मिलित कर लिया।

जब इंग्लैंड के बादशाह चार्ल्स प्रथम और महारानी मारिया ड्यूक आफ बकिंघम के यहां डिनर में शामिल हो तो खाने के दौरान एक बड़ी मर्तबान पेश की गई। जब मर्तबान का ढक्कना उठाया गया तो उसमें से हडसन बाहर निकला। महारानी मारिया बहुत प्रभावित हुई और हडसन को अपने महल में ले गई। इस प्रकार हडसन राज-परिवार के सम्पर्क में आया और उसे कई बार बादशाह और महारानी की ओर से मिशन आदि पर भी भेजा गया।

अन्य बौनों की भांति जफरी हडसन भी महिलाओं के लिए एक आकर्षण था। हडसन की इस प्रकार की कई कहानियां प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि एक बार हडसन एक औरत से रंगरलियां मना रहा था कि तभी ऊपर से उस औरत का पति आ टपका। उस औरत ने जल्दी से हडसन को छुपा दिया परंतु किसी दरवाजे की आड़ या बिस्तर की परत में नहीं बल्कि अपनी स्कर्ट के भीतर।

जब इंग्लैंड में गृह-युद्ध छिड़ा तो हडसन बादशाह के घुड़सवार दस्ते के कप्तान की हैसियत से लड़ा। महारानी मारिया को सन 1644 में फ्रांस भागना पड़ा। जफरी हडसन भी उनके साथ गया। सन् 1649 में हडसन एक लड़की को लेकर क्राफ्ट्स नाम के एक व्यक्ति से झगड़ पड़ा और उसे द्वंद्व-युद्ध लड़ने को ललकारा। क्राफ्ट्स ने इसे मजाक समझा और उसने नकली पिस्तौल दिखाकर हडसन को चिढ़ाया। हडसन ने इसे अपना अपमान समझा और पुनः चुनौती दी। द्वंद्व युद्ध हुआ। हडसन की उसमें जीत हुई। यही नहीं उसने अपने प्रतिद्वंद्वी का कत्ल भी कर दिया। कत्ल के सिलसिले में अदालती कारवाई से बचने के लिए वह एक समुद्री जहाज में सवार होकर भाग गया। राह में तुर्की के समुद्री डाकुओं ने जहाज को लूट लिया और इस प्रकार हडसन भी उनके हाथ लग गया। फिर डाकुओं ने उसे भारी कीमत में बेच दिया। स्वतन्त्र होने पर वह फिर इंग्लैंड रवाना हो गया। इंग्लैंड पहुंचने पर ड्यूक आफ बकिंघम की कृपा दृष्टि से उसे वजीफे के रूप में काफी मोटी रकम मिलने लगी।

हडसन इसाईयों के रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय से संबद्ध था। इसलिए सन् 1679 में उसे 'पाप षड्यंत्र' में भाग लेने के अपराध में गिरफ्तार कर लिया गया, परंतु शीघ्र ही रिहा भी कर दिया गया। सन् 1880 8' के रिकार्डों से ज्ञात होता है कि जफरी हडसन को कप्तेन की हैसियत से बादशाह की खुफिया सर्विस से बहुत भारी वेतन मिलता था।

जेफरी हडसन के दो एतिहासिक चित्र अब भी उपलब्ध हैं। ये चित्र एक प्रसिद्ध कलाकार 'वान डिक' ने बनाए थे। एक चित्र में वह महारानी हेनरिटा मारिया के साथ बैठा है और दूसरा चित्र हम्पटन के शाही दरबार का है। एश मोलीन म्यूजियम में हडसन का नील रंग का कोट, जुराब और पाजामा आदि अभी तक सुरक्षित है।

सदर बौना जनरल माण्ट जो 14 वर्ष की उम्र में केवल 22 इंच था

रिचर्ड गिब्सन एक बौना कलाकार

इस छोटे से व्यक्ति ने कला और अपने चित्रों द्वारा बहुत नाम पैदा किया। वह सन् 1615 में कम्बरलैंड में पैदा हुआ। रिचर्ड गिब्सन (Richard Gibson) हडसन का मित्र था और मोट लेक की एक धनी महिला का नौकर था। जब उस महिला को गिब्सन की कला प्रतिभा का पता चला तो उसने उसे ड्राइंग सिखाने के लिए एक शिक्षक रख लिया। बाद में हडसन की भांति गिब्सन भी बादशाह चार्ल्स प्रथम

आर महारानी मारिया के दरबार मे पहुच गया जहा उसे प्रसिद्ध कलाकार सर पीटर लिली जैस शिक्षक स पुन शिक्षा मिली। अत म वह शाही परिवार का पेण्टर बन गया।

वयस्क होने पर गिब्सन का कद केवल 116 84 समी (3'10") था। दरबार मे उसके कद क अनुरूप एक ठिगनी लडकी थी। महारानी की इच्छा थी कि वह दोना विवाह कर ले। गिब्सन को इस प्रस्ताव पर काइ आपत्ति न थी आर इस प्रकार उनका विवाह तय हा गया। विवाह के सभी प्रबध बादशाह न स्वय किए। महारानी ने वधू को उपहार म हीरे की एक अगठी दी।

इस ठिगने जोडे ने हसी-खुशी जीवन व्यतीत किया आर कइ शासका का शासनकाल दखा। किसी भी शासक ने इन्हे खुशहाली स वचित न किया। जब क्रामोयल शासक बना तो उसने भी गिब्सन को सरक्षण दिया। बान कलाकार गिब्सन न क्रोमायल के कइ पार्ट्रेट भी बनाए।

गिब्सन की मृत्यु सन् 1690 म हइ। उस समय उसकी उम्र 14 वप थी। गिब्सन की पत्नी उसकी मृत्य क लगभग 19 वप बाद तक जीवित रही आर सन 1709 मे 89 वर्ष की उम्र म उसकी मृत्यु हइ। दाना का लदन क सटपॉल कॉन्वट के बाग म दफनाया गया था। उन्होन 9 बच्चो का जन्म दिया था जिनम स सभी सामान्य कद क थे ओर उनम स एक लडकी अपन पिता का अनुसरण करत हुए कलाकार भी बनी।

रिशबोर्ज एक नन्हा जासूस

फ्रास का नन्हा जासूस रिशबार्ज (Richebourge) जिसने बच्च क रूप म जासूसी की शुरू म एक व्यक्त की बीबी की सेवा म रहता था। फ्रासीसी क्राति क दोरान उसन बादशाह क लिए अत्यत आवश्यक काय किए। वह बच्चा की भाति वस्त्र पहनता था आर एक महिला उसे गोद म उठाए पेरिस आती-जाती। उसक कपडा म बादशाह क गप्त सदश छिपे हात। इन सेवाओ के लिए उस बाद म पशन भी मिलती रही। रिशबोर्ज की मत्यु सन् 1858 म 90 वर्ष की उम्र म हइ।

लूसिया जारेत

लूसिया जारेत (Lucia Zarat) सन 1864 म सानकार्लास (मेक्सिको) म पदा हुई। जन्म क समय उसका कद 17 78 सेमी (7) आर वजन केवल

लूसिया जारत जिसका कद 20 था

226 8 ग्रा था। वयस्क हान पर उसका कद 50 8 सेमी (20) स भी कम था। उसक बाजुओ की लम्बाइ 20 32 समी (8) आर कमर 10 16 सेमी (4) थी। वजन 2 27 किग्रा स भी कम था। शरीर मे असामान्य हान क बावजद भी वह पूणतया स्वस्थ थी।

लूसिया न सबस पहल अपना प्रदशन अमरीका मे किया। जब उसकी उम्र कवल 20 वर्ष की थी। वह बाने कलाकारा म सबस अधिक वेतन पाती थी। उसकी मत्यु सन् 1890 म एक टन दुघटना म हुई।

लिया ग्राफ

सन् 1933 क प्रारम्भ म रिगलिग ब्रदस के सर्कस म शामिल एक ठिगनी महिला दुनिया म अपनी धूम मचा रही थी। उसका कद 53 34 समी (21) था

और नाम था—लिया ग्राफ (Lya Graf)। जब जमनी म हिटलर न नतृत्व म नाजी सरकार सत्ता म आइ ता गम्टापा न लिया ग्राफ को आवारागर्दी क आराप म गिरफ्तार कर लिया, जबकि उसका वास्तविक अपराध यह था कि वह एक यहूदी थी।

बौनो का नगर

किसी एक बोन का दखना ही अजीब प्रतीत होता ह और यदि बहुत सारे बाना का आपस म बात करते, हसते लडत-झगडत आर दुनिया क अन्य छाट-बडे काय करत दखा जाए ता ऐसा प्रतीत हागा कि जैसे किसी दूसरी दुनिया म पहुच गए हा। एक इसी प्रकार का नगर रूस क जार पीटर महान न पीटर्स बर्ग के करीब एक नगर बसाया था जहा सभी बोन रहत थ।

लिलीपुट

जानॉथन स्विफ्ट की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'गुलिवर्स ट्रैवल' मे वर्णित बाना क काल्पनिक लोक लिलीपुट' स प्रभावित हाकर कानी आइलड क करीब यह नगर बनाया गया था और उसका नाम भी 'लिलीपुट' रखा गया। लिलीपट की ठिगनी इमारता म एक किला, फायर हाऊस थियटर तथा निजी मकान थ। लिलीपुट म 300 बोना क रहने भर की पर्याप्त सविधाए थीं। बहुत स प्रसिद्ध बोन, जिनम श्रीमती टॉम थम्ब आर उनक दूसर पति उल्लखनीय हैं अपना अधिकाश समय इस नगर म गुजारते थ।

जब कभी बाहरी नागरिका क लिए लिलीपुट के द्वार खाल जात ता सारा नगर दखन वाला की भीड स जाम हा जाता था। दुनिया भर के कोने-कान से लोग इन बौना क रहन-सहन और इनक स्वभाव को दखने आत।

लिलीपुट नामक यह अदभुत नगर 27 मई सन् 1911 म जलकर नष्ट हा गया।

दुनिया के मेले बौनो के शहर

बौना क शहरा का अमरीका म मला का दर्जा प्राप्त रहा है। अमरीकी प्राग्रस मल की शताब्दी मनान क लिए शिकागा क एक गाव म सन् 1933 म सार यूराप स बाना का एकत्र किया गया था। सन 1939 म हान वाले न्यूयॉर्क विश्व मेले म भी बौना की भरमार थी। दखने म ऐसा लगता था माना बोना का शहर हो।

फिल्मो मे बौने

सर्कस कम्पनिया की भाति फिल्मा म भी बौन लोगा की बहद माग रही है। बानो क एक परिवार क चार सदस्य—हरी जो 106 86 सेमी (42), टिनी जा 101 6 सेमी (40), ग्रस (इन सब मे उम्र म बडा) और डेजी (चारा में कद म बडा) फिल्मो म काम करत थ।

जॉनी रोवेटाइन

सन 1932 म जब जॉनी रोवेटाइन (Johnny Roventine) 20 वर्ष का था, ता एक विज्ञापन कम्पनी क मिल्टन ब्यू न हाटल न्यूयॉर्क म इसकी आवाज सुनी। ब्यू इस नवयुवक की स्पष्ट और आकर्षक आवाज से बहुत प्रभावित हुआ। फलस्वरूप उसने जॉनी क साथ 20 हजार डालर वार्षिक पर अनुबध कर लिया।

जॉनी का कद कुल 119 38 सेमी (47") और वजन 22 23 किग्रा था। जॉनी की सबस मूल्यवान चीज उसकी आवाज थी, जिसका उसने बीमा करा रखा था।

मिचू

मिचू (Michu) का कद 82 55 समी (32½") था। मिचू न लेबिल सर्कस म भी भाग लिया था। वह मछली के शिकार म बहुत दिलचस्पी रखता था, लेकिन एक बार वह मुश्किल मे फस गया। जो मछली मिचू क हाथ आई उसका वजन लगभग 4½ किग्रा आर लम्बाई 45 72 सेमी (18") थी, जबकि मिचू का वजन कवल 14 51 किग्रा था। इसलिए मछली उस अपनी आर खीचती तथा मिचू मछली का अपनी आर खीचता। इसी खीचातानी म मिचू नदी म गिर गया परतु साभाग्य स उसका एक साथी उसे दख रहा था उसन मिचू का बचा लिया। मिचू किग साइज की सिगरट बड शौक से पीता था।

एक नन्हा अजूबा जनरल टॉम थम्ब

यह छोटे कद का इसान, जिसका नाम चार्ल्स शेयरवुड स्ट्रेटॅन (Charles Sherwood Stratton) था, 4 जनवरी सन् 1838 मे ब्रिज पोर्ट (Bridge Port) कस्बे म पैदा हुआ था। पैदाइश के समय टॉम थम्ब का वजन 4 14 किग्रा था। 5 महीने की उम्र मे उसका वजन 6 86 किग्रा और कद 63 5 सेमी (2 1 ') हो गया। इसके बाद उसकी वृद्धि रुक गई। 5 वर्ष की उम्र में उसका कद एक इच भी न बढ़ा था। छोटे कद के बावजूद वह एक पूर्णतया सामान्य बच्चा था। यही बच्चा बाद मे जनरल टॉम थम्ब के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

जनरल टॉम थम्ब को इतिहास के प्रसिद्ध बौनो मे गिना जाता था। वह दुनिया के दो करोड लोगो की खुशियो और मनोरजन का साधन बना। उसने गीत गाए, नृत्य किया और यही नही उसने महारानी विक्टोरिया, फ्रास के बादशाह लुई फिलिप, स्पेन की महारानी ईसाबेला, ड्यूक विलिग्टन आर अब्राहम लिकन जैसी महान हस्तियो के दिलो म अपना स्थान पैदा किया।

बर्नम म्यूजियम के मालिक पी टी बर्नम ने जब टॉम थम्ब को देखा तो वे उसके मा-बाप से मिले और टॉम को स्टेज पर लाने के लिए उन्ह 3 डालर प्रति सप्ताह पर तैयार कर लिया। इस प्रकार टॉम थम्ब सावजनिक प्रदशन हेतु स्टेज पर आया।

जब श्रीमती स्ट्रेटन और इनका बाना बेटा टॉम न्यूयॉर्क स्थित बर्नम म्यूजियम पहुचे तो उसकी ऊची इमारत, बडे-बडे बेनर्स, पोस्टर और जानवरो आदि के चित्रो से काफी प्रभावित हुए।

नन्हा टॉम आर उसकी मा म्यूजियम के साथ के मकान मे बर्नम के परिवार के साथ ठहरे। पी टी बर्नम सारा समय टॉम के साथ गुजारता। उसने टॉम को गीत, चुटकुले और नकले सिखाई, ताकि टॉम को स्टेज पर भेजा जा सके। स्टेज पर टॉम को लाने से पूर्व मि बर्नम उस अपन कधे पर बैठाकर विभिन्न समाचार पत्रो मे

पी टी बर्नम और जनरल टॉम थम्ब

गए। वह टॉम का दफ्तरो की मेजो पर इस प्रकार रख देते जैसे किसी गुडिया को रखा जाता हे। टॉम, मज पर पडा हुआ, गीत गाना शुरू कर देता। हैराइड के एक लेखक मिस्टर जमसन गॉर्डन बेट न टॉम के बारे म लिखा—"जो, शायद, ससार का अत्यधिक छोटा इसानी नमूना ह।"

टॉम स्टेज के लिए बेहद सफल सिद्ध हुआ। वह कहता "मैं अगूठे जितना हू, परतु आप लागो का खुश करने के लिए मै एक मम्पूर्ण हुनरमद हाथ हू।"

न्यूयॉर्क तथा अमरीका के अन्य इलाको से लोग जनरल टॉम थम्ब को देखने आने लगे। न्यूयॉर्क के एक भूतपूर्व मेयर फिलिप होन ने जनरल टॉम थम्ब की एक दिलचस्प तस्वीर इन शब्दो मे खीची, 'जनरल टॉम थम्ब जैसा लोग इन्हे कहते है, एक सुदर जिदादिल खुशमिजाज और प्रतिभावान ठिगना इसान है उसके हाथ आधे डालर के सिक्के के बराबर हैं और उसके पाव केवल 7 62 सेमी (3") लम्बे हैं। जब वह मेरे साथ चला तो उसके सिर की चोटी मेरे घुटने से भी नीचे थी।

जनरल टॉम थम्ब बर्नम के लिए बहुत बडा खजाना सिद्ध हुआ। उसने टॉम का वेतन 3 डालर से बढ़ाकर 7 डालर प्रति सप्ताह कर दिया। बर्नम बहुत खुश था, माना टॉम के नन्हे शरीर मे उसे सोने की खान मिल गई हो। वर्ष के अत से पूर्व ही बर्नम ने उसका साप्ताहिक वेतन 25 डालर तक पहुचा दिया।

अब टॉम थम्ब काफी धनवान बन चुका था। उसे अपनी प्रसिद्धि दूरदराज इलाको तक ले जाने की इच्छा हुई। बर्नम उसे यूरोप ले गया। 19 जनवरी सन् 1844 को जब टॉम अपनी यात्रा प्रारम्भ करने के लिए बदरगाह पर आया तो उसके जुलूस मे दस हजार प्रशसक थे जो उसे विदा देने के लिए आए हुए थे।

लदन मे टॉम को अत्यधिक सफलता मिली। बर्नम ने उसकी खुशी मे लदन के तमाम प्रतिष्ठित लोगो को दावत दी। बर्नम और जनरल टॉम को अमरीकी दूतावास मे डिनर पर बुलाया गया। कुछ दिनो बाद दुनिया के बहुत ही धनी बैंकार की पत्नी रोट्स चाइल्ड ने बर्नम और जनरल टॉम को अपने महल मे दावत दी और एक भरा हुआ पर्स बर्नम के हाथो मे थमा दिया। बर्नम के अपने शब्दो मे, "सोने की बारिश शुरू हो गई।'

जनरल टॉम अब सारे इग्लैड मे अपने अजूबेपन की धूम मचा चुका था। बर्नम ने मिस्री हॉल को किराए पर लिया और विज्ञापन की शुरुआत कर दी। कुछ दिनो बाद महारानी विक्टोरिया का आमत्रण इन्हे प्राप्त हुआ। महल मे शाही परिवार के 30 सदस्यो ने उनका स्वागत किया। तमाम लोग इस छोटे से जीव जनरल टॉम को देखकर स्तब्ध रह गए। जनरल टॉम ने घुटनो पर झुककर सबका अभिवादन (गुड इवनिग) किया। तमाम लोग टॉम की इस अदा पर हस पडे। बाद मे जनरल टॉम ने गीतो और नकलो से सबका मनोरजन किया।

टॉम ने महारानी विक्टोरिया के मन मे शीघ्र ही अपना स्थान बना लिया। महारानी ने उसे जल्दी ही फिर महल मे आने का निमत्रण दिया। महारानी ने उसे 32 वर्षीय प्रिस ऑफ वेल्स से भी मिलवाया और अनेक उपहार दिए।

लदन मे काफी समय गुजारने के पश्चात् बर्नम, टॉम को पेरिस ले गया। उसे कई बार फ्रास सम्राट लुई फिलिप ने अपने महल मे निमन्त्रित किया और बहुत सारे कीमती उपहार दिए। अत मे टॉम स्पेन गया। वहा उसने महारानी ईसाबेला से भेट की।

यूरोप मे 3 वर्ष गुजारने के बाद टॉम अपने देश अमरीका लौटा। अब वह एक बहुत अमीर व्यक्ति था। सारी कमाई बर्नम और टॉम मे आधी-आधी बटती थी। सन् 1847 के अत मे टॉम ने बर्नम के साथ राष्ट्रपति पोल्क से व्हाइट हाउस मे भेट की।

टॉम ने एक पादरी एल्वानी को लिखा, "मैंने 40225 किमी (25 000 मील) की यात्रा की और लगभग 20 लाख महिलाओ के चुम्बन लिए, जिनमे इग्लेड, फ्रास, बेल्जियम और स्पेन की अनेक बेगमे भी शामिल हैं।

"मै प्रतिदिन बाइबिल पढ़ता हू। मैं अपने इश्वर की प्रार्थना करता हू और जानता हू कि वह हम सब पर कृपालु है। यद्यपि उसने मुझे बहुत छोटा बनाया है, परतु मैं समझता हू कि उसने मुझे दिल, दिमाग और आत्मा उदारतापूर्वक दिए है। मैं उस ईश्वर की हर समय प्रशसा करता हू।"

टॉम ने कई बार जीवन के अन्य क्षेत्रो मे भी प्रयास किए। व्यापार किया, नुक्सान उठाया। फिर सर्कस मे सम्मिलित हुआ और धन कमाया। सन् 1862 मे टॉम की आयु 24 वर्ष हुई। अब उसका वजन 23 59 किग्रा हो गया था और कद 25 4 सेमी (10) और बढ़ गया था। मूछ उग आई थी और अब वह पूर्णतया वयस्क था। यद्यपि 24 वर्ष की आयु तक उस प्रसिद्ध कलाकार ने धन ख्याति और दुनिया की हर चीज हासिल कर ली थी परतु एक चीज की उसे हमेशा कमी महसूस होती रहती थी। वह चीज थी—'प्यार अर्थात् प्रेम।' कितु इश्वर टॉम पर कृपालु था और आखिर एक दिन यह कमी भी पूरी हो गई।

एक दिन जब टॉम थम्ब अपने कृपालु मित्र और जीवन सरक्षक पी टी बर्नम से मिलने गया तो वहा

टॉम थम्ब अपनी पत्नी क माथ

उपस्थित दुनिया के एक आर अजूबे म मिलकर बहुत हैरान हुआ। वह थी एक लडकी—लविनिया वरेन।

लैविनिया सौंदय व सुदरता की खान तो थी ही, उसका कद भी छाटा था। वह अमरीका के एक स्थान मिडल बॅरो मे पदा हुई थी आर 10 वष की आयु मे उसकी वृद्धि रुक गई थी। जब जनरल टॉम की उसक साथ आखे चार हुइ तो उसका कद केवल 81 28 सेमी (32") आर वजन 13 15 किग्रा था।

लविनिया के माता-पिता दोना लम्ब कद के थे। उसके चार भाइ ओर दो वहन भी मामान्य कद की थी। परतु लैविनिया की तरह उसकी छोटी वहन मिनी' भी ठिग्न उसका कद तो लविनिया से भी छाटा था।

लैविनिया मिडलबॅरो के एक स्कूल मे बच्चो को पढाती थी। वस्तुत वह एक दृढ चरित्र वाली लडकी थी, क्योंकि उसका छोटे से छोटा शिष्य भी उससे कद म वडा होगा। बाद म वह सर्कस म शामिल हो गई।

लविनिया से भेट के बाद जनरल टॉम बनम के प्राइवेट कमरे मे गया और वडे रहस्यमय अदाज म कहने लगा, "मिस्टर वर्नम! यही वह मनमाहक छोटी महिला ह, जिसने मेरे मन के साजो को छेड दिया ह। मुझ विश्वास है कि यह छोटी महिला कवल मेरे लिए पदा की गई ह। सिर्फ इसीलिए कि वह मेरी पत्नी बन सक। तुम हमेशा मेरे मित्र रहे हो। म चाहता हू कि इस सिलसिले म तुम मेरे सदशवाहक बनो। मेरे पास बहुत धन हे आर अब म केवल विवाह करना चाहता हू। म शेष जीवन इस मनमोहक, महिला की बाहो मे बडी शाति आर आराम म गुजारना चाहता हू।"

बनम ने महसूस किया कि जनरल टॉम अत्यत भावुक हो गया ह। उसने कहा, "धीरज रखो आर धीर-धीरे आगे बढो, क्योंकि एक ही रात म लविनिया की चाहत आर प्यार प्राप्त नही किया जा सकता।" बर्नम न जनरल को यह भी बताया कि उसका एक उम्मीदवार कॉमॉडोर नट (Commodore Nutt) भी है।

कॉमॉडोर नट टॉम से मिलता-जुलता बोना था। उसका कद 73 66 समी (29) आर वजन 10 89 किग्रा था। बनम ने उसका नेवी की बर्दी पहना रखी थी आर उसे सबसे ज्यादा वेतन देता था। जिन दिना जनरल ने बनम से अपने मन की बात कही, वह बराबर अमरीकन म्यूजियम के चक्कर लगाता रहता आर उस छाटी लडकी स मिलन का कोई भी अवमर हाथ से न जान दता। बर्नम, टॉम को पहले ही बता चुका था कि कॉमॉडार को टॉम की माजूदगी बिल्कुल नही भाती हे आर वह उसकी नजरो मे खटकता रहता है। जब कभी कॉमॉडार, टॉम का देख लेता तो वह एक लडाकू मुर्गे की भाति टॉम क चारो आर मडराने लगता।

लविनिया भी टॉम का पसद करन लगी थी, परतु लविनिया की मा उनके आपस मे मिलन से चिढ़ती थी। इसीलिए टॉम लविनिया से एकात म मिलना चाहता था। उसने बनम म प्राथना की कि वह लविनिया को किसी प्रकार अपन घर निमंत्रित करे। बनम ने टॉम की इच्छा पूरी कर दी आर जब यह नन्हा जोडा मिला ता टॉम न उसे बताया कि वह काफी

धनवान और खुशहाल ह। टॉम ने कहा, "मैंने सारी दुनिया की सैर की है। अब मुझे घूमने मे कोई दिलचस्पी नही ह, परन्तु यदि तुम मेरी हमसफर और हमराही बन जाओ तो यह सफर बडा दिलचस्प हो जाए। क्या तुम्हे मेरा हमसफर बनना स्वीकार है?" लविनिया ने "हा' मे उत्तर दिया। टॉम की हिम्मत और बढी। उसने आगे कहा, "यह सफर और भी सुदर हो सकता है यदि हम पति-पत्नी की हैसियत से करें।" लाविनिया ने पहले तो इसे मजाक समझा, परतु जब टॉम ने उसे बडी गम्भीरता से बताया कि यह मजाक नही बल्कि मेरी जिदगी और मौत का प्रश्न ह, तो लेविनिया सहमत हो गइ और बोली, "मै भी तुम से प्रेम करती हू।

इस प्रकार जनरल टॉम थम्ब और लैविनिया वरेन के विवाह की बात तय हो गइ। विवाह की खबर सारे न्यूयॉर्क मे जगल की आग की तरह फैल गई। बर्नम ने जनरल को इस बात पर राजी किया कि मगनी की रस्म अमरीकन म्यूजियम मे अदा की जाए। हजारो दर्शक एकत्र हुए, व्यापार बढा और 30 हजार डालर कमाए गए।

10 फरवरी सन् 1863 का न्यूयॉर्क के ग्रेस चर्च मे टॉम थम्ब ने लविनिया को अपनी पत्नी के रूप मे स्वीकार किया। कॉमाडोर सहबाला बना था। इस उत्सव मे 2 हजार व्यक्ति शामिल हुए थे जिनमे करोडपति, सीनेटर गवर्नर जनरल और समाज के बडे-बडे लोग शामिल थे। राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन और उनकी पत्नी ने भी इस विवाहित जोडे को उपहार भेजे थे।

अब यह नवविवाहित जोडा हनीमून मनाने के लिए दक्षिण की ओर निकल पडा। फिलाडेल्फिया और बाल्टीमोर मे उनका भव्य स्वागत किया गया। वाशिंग्टन मे राष्ट्रपति लिंकन और श्रीमती लिंकन ने उन्हे व्हाइट हाउस आने का निमत्रण दिया और उनके सम्मान मे डिनर का प्रबंध किया गया। राष्ट्रपति के पुत्र टैड (Tad) ने निजी तौर पर उन्हे शराब के जाम पेश किए। लिंकन इस बात से काफी प्रभावित थे कि लविनिया की शक्ल उनकी पत्नी से काफी मिलती थी।

राष्ट्रपति लिंकन ने धीरे से जनरल के कान मे कहा, "इस समय तुम तमाम लोगो की दृष्टि के केन्द्र हो। तुमने मुझे पूर्णतया पीछे फेंक दिया है।"

बर्नम के साथ इस जोडे ने सन् 1864 से 1867 तक कॉमॉडोर और मिनी के साथ सारे यूरोप का दौरा किया। अनुमानित तौर पर इन्होने एक वर्ष मे 10 से 20 हजार पौंड कमाए होगे।

सन् 1869 मे ये नन्हे लोग आस्ट्रेलिया, जापान, भारत और मिस्र रवाना हुए। ये बनारस मे काशीनरेश के मेहमान भी बने, काशीनरेश ने टॉम थम्ब को एक शिकारी हाथी उपहार मे दिया था। मिस्र के शासक ने इन्हे अपनी प्राइवेट ट्रेन दी थी। वे आस्ट्रेलिया के शासक फ्रांज जोजफ, इटली के बादशाह विक्टर एमनुएल और पोप के मेहमान बने। जब वे 1872 मे अपने देश वापस हुए तो वे 90 104 किमी (56,000 मील) की यात्रा कर चुके थे और 1471 बार अपनी कलाओ के सार्वजनिक प्रदर्शन किए थे।

कई बार लोगो मे अफवाह फैली कि कॉमॉडोर ने लैविनिया की छोटी बहन मिनी से शादी कर ली ह, परतु ऐसा कभी न हुआ। कॉमॉडोर ने एक बार बर्नम से दबी जबान कहा भी था कि मेरे फूल को तोड लिया गया है। उसका इशारा जनरल की ओर था, जिसने कॉमॉडोर को लेविनिया से जुदा कर लिया था। वह 1881 मे 37 वर्ष की आयु मे कुवारा ही चल बसा। अतत मिनी ने 1874 मे एक अग्रेज से शादी कर ली। उन्होने अपना घर टॉम थम्ब के घर के पास ही बनाया, लेकिन दुर्भाग्य की बात कि मिनी ने एक बच्चे को जन्म दिया और जन्म के साथ ही जच्चा-बच्चा दोनो चल बसे।

टॉम के हाथ, बाप बनने का सुअवसर कभी नही आया। टॉम की मृत्यु 15 जुलाइ 1883 को मिडलबॅरा मे एक चोट लगने से हइ। मृत्यु के समय उसकी आयु 45 वर्ष, कद 101 6 सेमी (3 4") और वजन लगभग 32 किग्रा था।

जनरल टॉम थम्ब की मृत्यु के दो वर्ष बाद लविनिया ने काउण्ट प्राइमामगरी से शादी कर ली। वह लविनिया से 8 वर्ष छोटा और 114 3 सेमी (3 9") लम्बा था।

अत मे 25 नवम्बर 1919 को लविनिया की भी मृत्यु हो गइ। उस समय उसकी उम्र 78 वर्ष थी। यद्यपि उसने दूसरा विवाह अवश्य किया था, किन्तु अपने जीवन के अत तक उसने लॉकेट मे जडवाई हुइ टॉम थम्ब की तस्वीर को अपने सीने से कभी अलग न किया। जिस कब्रिस्तान मे लेविनिया की कब्र है उसी मे पी टी बर्नम भी दफन ह।

बौनापन एक समस्या

क्या कारण है कि कुछ लोग सामान्य कद के नही होते? यह प्रश्न काफी समय तक एक रहस्य बना रहा। पहले वैज्ञानिक यह नही जानते थे कि ठिगना या बोनापन पिट्यूटरी ग्लेंड की खराबी का कारण होता है। यह पता चल जाने के बाद भी अभी तक यह सभव नही हो सका कि इसान क इस शारीरिक दोष पर नियत्रण पाया जा सके।

पिट्यटरी ग्लैंड हमारे शारीरिक विकास ओर वृद्धि को नियंत्रित करती है। यह ग्लेंड एक अत्यत आवश्यक हार्मोन रक्त मे मिला देती है। यदि यह हार्मोन कम बनता है, तो बच्चा ठिगनेपन का शिकार हो जाता है और यदि यह अधिक बनता है, तो कद अधिक बढ़ जाता है।

प्राय सभी बोनो की शरीर-रचना समानुपातिक नही होती। यदि किसी की बाजू और टागे छोटी हें, तो सिर और चेहरा बहुत बडा होगा। अभी तक यह दोष एक समस्या बना हुआ है। डॉक्टरो के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति जो सामान्य कद से कम हे, ठिगना (बौना) कहलाता हे। आमतोर पर सामान्य कद 137 16 सेमी (4' 6) माना जाता हे ओर दस हजार पैदा हुए बच्चो म से एक बच्चा ठिगना होता है।

जिस प्रकार सामान्य कद के माता-पिता की सतान छोटे कद की हो सकती है, इसी प्रकार ठिगने माता-पिता की सतान भी (केवल कुछेक के) सामान्य कद की हो सकती है। टॉम थम्ब के माता-पिता के कद समानुपाती और सामान्य थे। टॉम थम्ब जन्म के समय एक सामान्य बच्चा था, परतु पाच महीने की उम्र मे कद बढ़ाने वाली ग्रंथिया ने सही तौर पर काम करना बद कर दिया, परिणामत उसका कद छोटा रह गया। कुछ बौने पेदाइशी तोर पर ही छोटे होते हें।

प्रत्येक बोने मे यौवन लक्षण भिन्न प्रकार के होते हें। प्राय 20 वर्ष की उम्र तक जननेंद्रिया क्रियाशील नही होती। बौनी स्त्रियो मे मासिकधम भी काफी देर पश्चात् प्रारभ होता है।

1930 के प्रारभ मे किए गए एक सर्वेक्षण क अनुसार अधिकाश बाने शादी नही करते, परतु ये अन्य व्यक्तिया की भाति इच्छाए आर भावनाए रखते हें। एक सर्वेक्षण के अनुसार केवल 4। प्रतिशत विवाहित बौने माता-पिता बन पाते हें।

बोने इसानो की उम्र पूर्णतया सामान्य होती है। यद्यपि टॉम थम्ब 45 वर्ष की आय म मरा किंतु उसकी पत्नी ने 78 वप की उम्र पाई आर उसका दूसरा पति 7। वप तक जीवित रहा। काउट वोरोलास्की जो एक प्रसिद्ध बोना था, 98 वप की उम्र पाकर सन 1937 म मरा।

बौना क लिए यह समार बहत विशाल लगता है। जी
हा। यदि आप बौन है तो जिस ससार म आप रहत है,
वह आपका बहुत बडा लगता हागा। आपकी
आवश्यकताए ता एक वयस्क के समान है परतु
आपका शरीर बच्चा जैसा है। आपका लगगा कि
आपक चारा आर की प्रत्यक वस्तु मकान स्टास,
थियटर फर्नीचर गाडिया सीढ़िया यानी हर वस्तु
सामान्य कद क व्यक्तिया क लिए है। यही कारण है
कि ठिगन व्यक्तिया क लिए यह ससार बिल्कुल
अलग-थलग आर अजनबी लगता है। हर वस्तु
असामान्य और कदम-कदम पर कठिनाइया। बिस्तर
म उतरन आर उसपर चढ़न म सावधानी बरतना कि
कहीं गिर न जाए। बड साइज क चाक, छुरिया और
चम्च छाट हाथा म सभाल कर थामना कघा आर
उस्तरा थामना भी एक समस्या। स्नान क टब म
उतरन और उसम स निकलन क लिए परी तरह स
याजना बनानी हाती है। कहीं थाडी सी भी
असावधानी हुई कि मुह क बल गिरन का डर। यहा
तक कि दैनिक जीवन क असख्य काम जा सामान्य
व्यक्ति बिना साच समझ कर लता है ठिगन व्यक्ति
क लिए पहाड बन जाते है। मान लीजिए आप
खिडकी खालना चाहते है अथवा बिजली का बल्ब
बुझाना चाहते है, लेकिन आपका हाथ वहा तक नहीं
पहुचता, इसलिए आपको स्टूल खीचकर लाना हागा।
टॉम थम्ब चूकि बहुत धनवान था, अत उसन अपन
लिए विशष प्रकार का घर बनवाया था, जिसकी
खिडकिया, दरवाज स्विच, सभी उसक कद क
अनुसार थे, परतु जब जनरल टॉम घर स बाहर
निकलता था, ता उस ससार की सभी वस्तुआ क
आकार चुनाती दत महसूस हाते थ।

पहल बाना का मुख्य काम सकस क माध्यम स लागा
का मनारजन करना हाता था, परतु आजकल बान
लागा की रुचि उस दिशा म कम हा गई ह क्योंकि
अब उनक लिए तमाशा बनन क अतिरिक्त अन्य
काय भी ह। द्वितीय विश्वयुद्ध म जहाजी व्यापार म
बाना की काफी सवाए ली गइ, क्योंकि व जहाज क
प्रत्यक कान म जहा जा पाना सामान्य कद क
व्यक्तिया क लिए कठिन हाता है, जा सकत है। इन्हीं
सब कारणा म अब बोना का हर दश म नाकरिया
मिल जाती है।

3

जुडवा इसान

स्यामी जुडवा चाग और इग

दुनिया मे स्याम (थाइलैंड) की तीन चीजे बहुत प्रसिद्ध हुई हैं– स्यामी बिल्लिया, सफेद हाथी और स्यामी जुडवा। चाग आर इग (Chang & Eng) इतिहास के सबसे मशहूर जुडवा हैं। इनके शरीर एक दूसरे से जुडे हुए थे। उन्होंने कइ बार यूरोप और अमरीका का दौरा किया आर अपनी नुमाइश की।

यह जुडवा बच्चे 11 मइ, सन् 1811 को स्याम की राजधानी बैंकाक से 96 54 किमी (60 मील) दूर मछुआरो के एक गाव मैक्लाग मे पैदा हुए। जब यह पैदा हुए तो उस छोटे से गाव मे शोर मच गया। दोनो बेटे थे, बहुत सुदर थ, परतु दो अलग जिस्म होते हुए भी आपस मे जुडे हुए थे। सीने की हड्डी के स्थान पर एक मास के लोथडे द्वारा वे एक दूसरे से जुडे थे और दोनो की नाभि एक थी।

इन दोनो के जन्म से उस पिछडे गाव मे भय की लहर दौड गइ। पुराने विचारों के बडे-बूढ़ा ने उन अभागे बच्चो के जन्म को प्रलय आने का सकेत समझा। यह समाचार सारे देश में जगल की आग की तरह फल गया। वहा के राजा न पहले उन्ह मार दने का फैसला किया, परतु फिर किसी कारण से इरादा बदल दिया।

समय गुजरने के साथ-साथ ये दोनो बच्चे बडे हुए, परतु साधारण बच्चो की भाँति नही। यदि एक चलने की चेष्टा करता तो दूसरा बैठा रहता, क्योंकि दोनो के मस्तिष्क अलग-अलग थे। दोनो अपनी इच्छानुसार सोचते थे और अपनी-अपनी इच्छानुसार चलते थे। यदि उनमे कोई एक चलना चाहता तो आपसी मास का लोथडा बीच म होता, जिसने दोना को एक दूसरे का मोहताज बना दिया था। उनके माता-पिता उनसे उस मास के लोथड को लगातार खीचने को कहत ताकि वह बडा हो जाए। अत म उनकी जीवित रहने की अनथक कोशिशा ने उन्हे खडा होने और चलने-फिरने योग्य बना दिया।

स्यामी जुडवा चाग और इग

देखने म चाग और इग एक दूसरे से बिल्कुल मिलते-जुलत थे, परतु उन दोनो की आदत काफी भिन्न थी। चूंकि उन्हें अपनी आदते एक दूसरे के अनुकूल ढालनी थी, इसलिए एक पथ-प्रदशन करता था और दूसरा उसका अनुकरण।

जिस गाव मे चाग और इग रहते थे, उसमे मछुआरा की सख्या अधिक थी, इसलिए लोगो का अपनी जिदगी गुजारने के लिए नदी का सहारा लना पडता था। दोना भाई भी घटा नदी के किनारे अपना समय गुजारते। लगातार परिश्रम और जीवित रहने की लगन ने उन्ह तैरना, गोते लगाना और एक छोटी नाव चलाना सिखा दिया। इस प्रकार व मछलिया पकडने के योग्य भी हो गए।

जब यह बच्चे आठ वष के हुए तो इनके पिता की मृत्यु हो गइ। दोनो भाइयों ने घर की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली ओर नारियल का तल बेचने लग। कोइ भी व्यक्ति उनके मुस्कुरात चेहरों से प्रभावित हुए बिना न रहता और उनका ग्राहक बन जाता। अत मे उन्हान बत्तखा का पालना शुरु कर दिया ओर एक पोल्ट्री फाम भी बना लिया।

सन् 1824 म नय बादशाह रामा तृतीय ने उन जुडवा *भाइया का अपन दरबार म बुलाया। वह उनस* मिलकर बहुत खुश हुआ। उन्हे सारे महल की सेर कराई गइ, बादशाह की 100 पत्नियो से मिलवाया गया ओर इनाम के तौर पर काफी धन भी दिया गया।

स्यामी जडवा चाग और इग अपनी पत्निया और 22 बच्चा म स 2 बच्चा क साथ

कुछ वर्षो क पश्चात् उन्ह हिन्द-चीनी दूतावास क प्रतिनिधिमडल क साथ हिन्द-चीन भेजा गया। इस प्रकार उन्ह दूसरे दश आर वहा क लागो का दखन का अवसर मिला। अप्रेल सन् 1829 मे स्कॉट व्यापारी राबट हण्टर और कप्तिन इन 17-वर्षीय जुडवा भाइया का यरुप ओर अमरीका क दार पर ले गए।

सन् 1839 म चाग और इग 28 वष क हा गए। व 10 वर्षो म विभिन्न दशा म लागा क सामन अपनी नमाइश करत आ रह थ ओर इस प्रकार उन्हान लगभग 60 हजार डालर कमा लिए थे। अब वे किसी शातिमय स्थान मे रहकर आराम करना चाहत थे। अत म वे उत्तरी करोलिना (स रा अ) क छोट स कस्बे मे रहने लगे आर वहीं उन्हान एक दुकान भी खोल ली।

अप्रेल सन् 1843 मे चाग ने एन से और इग ने एडलिड से विवाह कर लिया। विवाह के बाद उनके जीवन म एक नया ओर अजीब परिवतन हुआ। चाग तीन बटा *ओर सात बेटियो का बाप बना और इग सात बेटों ओर* पाच बेटियो का। दोनों भाइयो की सभी सतानें सामान्य बच्चो जेसी थीं।

जब उनका परिवार काफी बढ़ गया तो उन्होने जमीन खरीदी और दो मकान बनाए। चाग और इग तीन दिन एक मकान म रहत ओर तीन दिन दूसरे मे। इस दारान उन्होने खेती-बाडी करना सीख लिया। इतना ही नही दोनो भाई मिलकर पेड भी काट लेते थे।

जनवरी सन् 1874 मे चाग पर ब्राकाइटिस (सास के रोग) का हमला हुआ। एक रात दोनो भाई साये हुए थे कि चाग ने अपने भाई को जगाया। उसने इग स कहा कि मुझे सास लेने मे तकलीफ हो रही है, इसलिए हम खडे हो जाना चाहिए। दोना बिस्तर से उठ खड हुए। सर्दी स उन्हे कपकपी लगने लगी। सर्दी से बचाव क लिये उन्होने आग जलाइ। कई घटे आग क पास बेठने के बाद इग को नींद आ गइ। आधी रात गुजरने के बाद इग का पसीना आया। वह एकदम उठ पडा कि चाग को कुछ हो गया हे। उसने चाग के सास लन की आवाज सुनने की काशिश की, परतु चाग बिल्कुल खामोश हो चुका था। इग ने अपने बच्चो को आवाज दी आर कहा, "अपन चाचा को देखो।" जब उन्होंने इग को बताया कि चाचा चाग मर चुके है, तो इग न कहा कि मरा भी अंतिम समय आ पहचा है। उसक बेटे डाक्टर को बुलान दोडे। जब व डाक्टर को लकर लौट ता इग भी इस ससार मे विदा हो चुका था। इस प्रकार दोना भाई एक सम्मानपूण लेकिन मुश्किल जीवन गुजार कर इस दुनिया स विदा हो गए।

वॉयलट और डेजी हिल्टन दो जुडवा बहने

वॉयलट और डेजी दो जुडवा बहने थी। य कमर और रीढ़ की हड्डियो पर आपस म जुडी हुइ थी ओर इनका जन्म इग्लैंड के समुद्र तट बर्गहिगटन मे 5 फरवरी सन् 1908 मे हुआ था। इनकी मा एक व्यक्ति की रखैल थी। ऐसी औरत से यद्यपि अपने बच्चो की परवरिश की आशा नही की जा सकती, परतु उनकी मा मैरी हिल्टन ने उन लडकियो पर विशेष ध्यान दिया। वह एक दूरदर्शी किस्म की महिला थी। वह जानती थी कि इन बच्चियो की असामान्य बनावट को वह भुना सकती है। इसलिए जब यह 3 वष की हुइ तो इन्हे नुमाइश के लिए मेलो, सकसो और अन्य मनोरजक स्थलो मे पेश किया गया, चार वर्ष की उम्र मे जर्मनी ले जाया गया, 5 वष की उम्र मे आस्ट्रेलिया आर 8 वर्ष की उम्र मे अमरीका मे इनकी नुमाइश की गई।

वॉयलट ने पियानो और डेजी न वायलिन बजाना सीखा। मरी हिल्टन इस बात पर तुली हुइ थी कि इन्हे ज्यादा म ज्यादा करतब सिखाकर अधिक से अधिक धन कमा सके। उसने बाद मे इन्हे नृत्य करना भी सिखा दिया। दोना बहन अपनी मा की सख्तियो से काफी ऊब चुकी थी। वे इस बात की प्रतीक्षा म थी कि कब उनकी उम्र 18 वष पूरी हो ओर वे काननी तार पर स्वतन्त्र हो सके। मैरी हिल्टन 60 वर्ष की उम्र म मर गइ। वे उसके मृत और भावहीन चेहरे को देखत हुए सोच रही थी कि इस महिला ने कभी हमारे साथ प्यार नही किया, बल्कि हरदम अपने लिए पसा कमाने के एक साधन के रूप मे इस्तेमाल करती रही।

मा के अंतिम सस्कार के समय उनके मन मे भाग जाने का विचार आया। एक बहन ने दूसरी के कान मे कहा "आओ भाग चले।" अभी उन्होने एक ही कदम आग बढाया था कि मरी हिल्टन के पति ने भारी हाथो मे उन्हे दबोच लिया और यह सुअवमर उनके हाथ से जाता रहा।

जब यह लडकिया 17 वष की थी तो ये हजारो डालर प्रति सप्ताह कमा रही थी, लकिन अपने लिए नही, बल्कि अपने उन बरहम घर वाला के लिए, जिन्हाने इन बेबस परिदा को कैद कर रखा था।

जब यह लडकिया 23 वर्ष की हइ, ता हिल्टन परिवार के आपसी झगडे के कारण मैरी हिल्टन का दामाद

वायलट और डजी हिल्टन दा जडवा बहन

वॉयलट और डेजी का अटॉर्नी (न्यायवादी) क सामने ले गया। अवसर मिलत ही इन्होने वकील से कहा, "हम इन लागा की कद मे हैं। ईश्वर के लिए हम स्वतन्त्र करवाए।' एक घट मे वॉयलट ओर डेजी ने अटॉर्नी के सामन अपनी दुख-भरी कहानी सुना दी। अदालत मे वॉयलट आर डेजी का मुकदमा पेश किया गया। पत्र-पत्रिकाओ म समाचार प्रकाशित हुए ओर लागा का उन दा जुडवा लडकियो की असली व्यथा कथा मालम हइ कि हजारो डालर कमान के बाद भी क्या उन्ह एक-एक पसे क लिए मोहताज रहना पडा। अटॉर्नी क द्वारा लडकिया न अपना वर्षो की महनत स कमाया धन वापस पान का दावा किया। मुकदमे का फसला वॉयलट आर डजी के पक्ष मे हुआ आर उन्ह एक लाख डालर की धनराशि पाप्त हुई।

स्वतन्त्र हान क तुरत बाद, सन् 1932 म, वॉयलट और डजी न हॉलीवुड की 'फ्रीक' (Freak) नामक एक फिल्म म अभिनय किया। इसी बीच डेजी डान गालवान नामक एक गिटार वादक से प्रम करने लगी। अब वह एक दूसरे स आजादी स मिल जुल तो सकते थे परतु अब एक भिन्न प्रकार की समस्या सामन थी। प्रमी-यगल का अपनी भावनाओ के प्रदशन के लिए एकात वातावरण कैसे मिल। जब उस प्रमी जाडे ने सवप्रथम एक दूसरे का चुम्बन लिया तो इस घटना का वॉयलट न इस प्रकार वर्णन किया हे, जब डॉन मरी बहन का देखन के लिए आया ता वह एकटक खडा उस दखता रहा। हम दानो क शरीर मे बिजली सी दोड गइ। उस समय मन साचा कि किस प्रकार मै अपनी बहन की भावनाओ स अलग हो सकती हू। अत मे हम दोनो ने एक दूसर की भावनाओ स अलग होना सीख ही लिया। उस दिन मैं बहुत चिंतित और बेचैन थी आर दखना चाहती थी कि डॉन डजी को किस प्रकार चूमता हे। डॉन ने अपने बाजू आग डेजी की आर बढाए आर वह भी आगे बढ़ी, परतु डॉन ने उसके मस्तक का चुम्बन लिया। इस प्रथम चुम्बन ने हम दोनो को बहुत निराश किया। डॉन पुराने विचारा का युवक था। उसकी धारणा थी कि मगनी स पूर्व हाठो को नही चूमना चाहिए। उसकी यह भी इच्छा थी कि विवाह के बाद डजी थियेटर का छाड कर सदा के लिए उसके साथ रहे, परतु डजी एसा करना मेरे प्रति अन्याय समझती थी, क्योकि डजी के साथ मुझ भी स्टज को छाडना पडता।"

कुछ समय क बाद वॉयलट न भी ऑर्केस्ट्रा (वाद्य-वद) के प्रमुख (लीडर) मिस्टर मार्स लम्बट से मगनी कर ली। परतु किसी राज्य न उसे विवाह की अनुमति नही दी, क्योकि यह कानून आर रिवाज के खिलाफ था। अत म सन् 1936 म वॉयलट न मिस्टर जेम्स मर स टेक्सास मे विवाह कर लिया। टक्सास मे लम्बट न विवाह के लिए अनुमति नही मागी थी। कवल यही एक ऐसा अमरीकी राज्य था, जहा विवाह का एसा कोई कानून न था।

सन् 1941 म डजी न मिस्टर हयर आल्डाइस्टप से विवाह कर लिया। इन दिना वॉयलट आर डेजी अपने पश क शिखर पर थी। व प्रति सप्ताह 5 हजार डालर कमा रही थी। उन्ह एक फिल्म, 'चेण्ड फार लाइफ' (Chained for life) म काम करने के लिए भी चना गया था, कितु इसी दोरान जनवरी सन् 1949 म एक सुबह दाना न इस अपार ससार म विदा ल ली।

दो सिरो वाली वुलवुल मिली क्रिस्टाइन

दो सिरो वाली अद्भुत लडकी मिली क्रिस्टाइन (Millie Christine) कोलम्वस सिटी, उत्तरी करोलिना (स रा अ) म 11 जुलाइ सन् 1851 मे पदा हुई थी। उसके शरीर की बनावट वडे ही विचित्र ढग की थी। कमर से ऊपर उसके दो शरीर थे आर दोना शरीर रीढ की हड्डी के निचले भाग मे एक दूसरे से जुडे हुए थे। दोनो शरीरो का मलद्वार भी एक ही था। दोनो शरीर एक दूसरे क समानातर नही थ, वल्कि एक जरा सा वायी ओर तथा दूसरा दायी ओर झुका हुआ था। दोनो के हृदय एक दूसरे की विपरीत दिशा मे थे, जवकि वहुधा जुडवा के हृदय एक ही दिशा मे होते ह। दोना शरीरो के जुडने क स्थान से नीचे दोना के स्नायु-तत्र भी एक हो गए थे। इसके अतिरिक्त पूर्णरूप से वे दो अलग शरीर थे।

दोनो के दो-दो वाजू और टाग थी। इस प्रकार अब उन्हे दो सिरो वाली एक अद्भुत लडकी के बजाय अद्भुत किस्म की दो जुडवा लडकिया मानना ज्यादा सही रहेगा। मिली क्रिस्टाइन के माता-पिता मकवे नामक एक व्यक्ति के गुलाम थे। इनकी 32 वर्षीया मा का नाम था मिनीमिया।

मिली क्रिस्टाइन के जन्म के तुरत बाद ही इन्हे इनके माता-पिता सहित वेच दिया गया था। बाद मे कइ हाथो मे घूमते हुए वे अपने माता-पिता से भी विछुड गई। शारीरिक अजूवेपन के कारण वे बहुत अधिक मूल्यवान थी। इसीलिए जे पी स्मथ ने इन्हे 30 हजार डालर म खरीद लिया। इस नेकदिल व्यक्ति ने इन लडकियो के माता-पिता का भी खरीद लिया ताकि वे अपन माता-पिता की देख-रेख मे पल सकें।

जब ये लडकिया केवल चार वर्ष की थी, तभी सन् 1855 म लदन के मिस्री हाल मे इनकी नुमाइश की गई। इसके वाद इन जुडवा लडकियो ने अपने जीवन का अधिकाश हिस्सा सर्कसा आर अजायबघरो मे नुमाइश करत हुए ही गुजारा। सन् 1873-85 के दौरान वे यूराप म रही। महारानी विक्टोरिया ने

दा सिरा वाली अद्भुत लडकी मिली क्रिस्टाइन

गर्मजोशी से इनका स्वागत किया ओर ढेरा उपहार दिए। फिर वे अमरीका वापस लौट गई और सन् 1902 से मिली आर क्रिस्टाइन कालम्वस सिटी म स्थायी तौर पर रहने लगी। परिवार म माता-पिता क अतिरिक्त 14 वहन-भाई आर थे। स स। थ। घर पर भी अक्सर पयटक उन्ह देखन आत रहत थे।

इसी बीच मिली के शरीर म क्षय के लक्षण प्रकट हुए। क्षय राग उस समय तक एक असाध्य रोग माना जाता था। फिर भी मिली हताश नही हुई। वह रोग से बहादुरी के साथ लडती रही, लकिन भाग्य के लेख को टाल सकना उसक वश म नही था। अत मे 9 अक्तूवर मन् 1912 को वह इस ससार से विदा हा गइ। मिली की मृत्यु के 17 घण्टे पश्चात् क्रिस्टाइन अपनी बहन म जा मिली। इनकी कब्र पर ये शब्द लिखे गए थे "एक आत्मा, जिसके दो शरीर थे—दो हृदय जो एक साथ धडकते थे।"

मिली और क्रिस्टाइन का अधिकाश जीवन नुमाइश करत हुए गुजरा। वे आकर्पक, सुदर और घुघराले वाला वाली प्रतिभावान अजूबा थीं। अक्सर समाचार पत्र-पत्रिकाआ म उनक कारनाम प्रकाशित होते रहत थ। विज्ञापना म उन्ह एक चित्ताकषक शीषक दा सिर वाली बुलबुल स पश किया जाता था। लागो क अधरा पर उनक कामल-कामल सुरील गीत हर समय थिरकत रहत थ। आज वे अद्भुत लडकिया हमार बीच माजूद नही हे, लेकिन उनकी अजूबी स्मृतिया युगा-युगा तक हमारे हाथो मे शाश्वत रहगी। उनक गीत आज भी थियेटरा म प्रचलित हैं। सुमधर ओर भावविव्हलकर देने वाल बहत स गीता म स आओ एक गीत से आपका भी परिचय करा द —

It s not modest of one s self to speak
But daily scanned from hand to feet
I freely talk of everything
Sometimes to persons wondering

Two heads four arms four feet
All in one perfect body meet
I am most wonderfully made
All *scientific men have said*

None like me since day of Eve
None such perhaps will ever live
A marvel to myself am I
As well to all who passes by

I m happy quite because I m good
I love my Saviour and my God
I love all things that God has done
Whether I m created two or one

ऊपर दिए गए अग्रेजी गीत का भावार्थ इस प्रकार है "अपने बारे मे बताना कोई शम की बात नही। *प्रतिदिन मुझे सिर से पाव तक देखा जाता है।* मैं प्रत्यक वस्तु के बारे मे स्वतन्त्ररूप से बताती हू और लाग हैरान हो जाते हैं।

"दो सिर, चार बाजू, चार पाव—ये सब एक ही सम्पूर्ण शरीर म ह। म सबसे अधिक आश्चयजनक ओर अनोखी बनाई गई हू, जैसा कि सभी वैज्ञानिक कहते ह।

"सष्टि के प्रारम्भ से मझ जैसा कोई पैदा नही हआ, ओर न आगे कभी पैदा होगा। में स्वय अपन लिए एक आश्चर्य हू और उन लोगो के लिए भी, जा मरे समीप से गुजरते हैं।

"म खुश और सतुप्ट हू, क्योंकि म बहुत अच्छी हू। मैं अपन इश्वर ओर अपनी सुगध ओर महक से प्रम करती हू। भले ही इश्वर ने मुझे एक या दो शरीरा म गढा, फिर भी में हर उस वस्तु से प्रम करती हू जा ईश्वर ने रची हे।"

ये डच निवासी स्यामी जुड़वां जन्म के तुरंत बाद शल्य चिकित्सा द्वारा सफलतापूर्वक अलग कर दिए गए और अब ये बच्चे सामान्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

रैडिका डोडिका (Radica Doodica)

1890 म जब य सदर लर्डकिया चार-पाच वप की थी ता यरोप भर म इनकी नुमाइश की गई। य लर्डकिया 1885 म भारत मे उडीसा के एक स्थान पर पैदा हइ। वहा क रहन वाले देहातिया ने उन्हे प्रतात्माए समझा आर उनक सारे परिवार का बद कर दिया। परन्त शीघ्र ही व लोग हाश म आ गए आर उनकी जान बच गइ।

दाना बहन प्रतिभावान थी। जब एक बहन आहार खाती ता दसरी बहन की भूख दूर हो जाती। इस प्रकार एक दवा पीती ता उसका प्रभाव दसरी बहन पर हा जाता। इन बहना न विश्व क कई देशो म अपनी नमाइश की। बाद म डाडिका की अचानक मत्यु हो गइ परन्त राडिका दा वप तक जीवित रही। कुछ समय पश्चात वह भी क्षयराग का शिकार हा गई।

रोजा जोजफा ब्लेजेक (Rosa Josepha Blazek)

य दाना जडवा बहन 20 जनवरी 1878 म पदा हुइ। दाना बहन रीढ़ आर पीठ की हडिडया म जुडी हुइ थी। य बहन चकास्लावाकिया क नगर बोहमिया म रहती थी। 1891 म लदन आर पेरिस म इनकी नुमाइश की गइ।

इन दाना लर्डकिया का रक्त सचार तत्र एक ही था। इसलिए यदि एक का दवा मिल जाती ता दसरी बहन उससे प्रभावित हा जाती।

1890 म इन दाना बहना न शादी क बार म विचार किया। वह दाना कहा करती थी कि यदि हमारा हान वाला पति हम दाना की नमाइश रुपय कमान क लिए करगा ता यह काइ बरा मानन वाली बात नही, क्योकि उस हम दाना की कामवासना का पता करना है। उस नवयवक का एक आर लाभ यह हागा कि वह एक समय म दो पत्निया को रख सकगा, परन्त उसकी सास एक हागी।

शादी क पश्चात 1910 म राजा न एक पुत्र का जन्म दिया। 1922 म इन दाना बहना न अमरीका का दारा किया जहा उन्ह सार की शदीद तकलीफ हा गइ। 20 मार्च 1922 का उन दाना बहना की मत्य हा गइ।
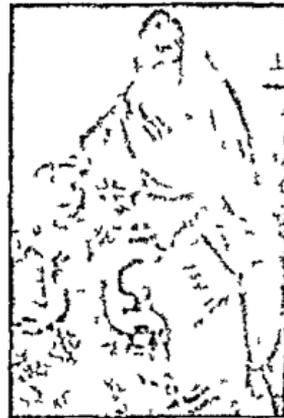
रडिका डाडिका भारतीय जडवा लडकिया

गोडीनो ब्रदर्स (Godino Brothers)

ये दानो भाइ सिम्पलक्यू आर लुइसया फिलिपाइन द्वीप-समूह मे पदा हुए। ये दोना पीठ पर जुड हुए थ। शीघ्र ही इन्हे अमरीका मे नुमाइश के लिए पश किया गया। 20 वर्ष की उम्र म उन्हान फिलिपाइन की दो आकर्षक लर्डकिया से शादी कर ली। हनीमन क पश्चात् उन्हाने समाचार पत्रो के सवाददाताओ का बताया कि उन्होन यह समय बडे ही आनद म गजारा है और उन्हे शारीरिक लाचारी स कोइ परशानी नही उठानी पडी।

28 वप की उम्र म लुइसयो का निमानिया हा गया। दूसर भाइ को भी उसक साथ बिस्तर पर लटना पडा परत् उस पर निमानिया का काइ प्रभाव नही हआ। एक रात्र का स्वस्थ भाइ न लगातार लटन की बआरामी क कारण उठने की काशिश की। उसन देखा कि उसका भाइ ठण्डा हो चुका है। उसन नस को बुलाया परन्त अफसास कि उसकी मृत्यु हा चकी थी। इन भाइया को अलग-अलग करने के लिए तरत आपरशन किया गया। प्लास्टिक सर्जरी क कारण सिम्पलक्य जीवित बच गया। अब उसक लिए जीवन उज्ज्वल था। परन्त शीघ्र ही उस एक मानसिक राग ने घर लिया आर 11 दिन पश्चात उसकी भी मत्यु हा गइ।

बिना टागो और बाज़ुओ के व्यक्ति

कार्ल अथन बिना बाजुओ का संगीतकार

वयाना (आस्टेलिया) निवामी एक नवयुवक, जिसने सगीत की दुनिया मे अपना एक अलग स्थान बनाया, बाजुओ के बगर पदा हुआ था, परतु इसने अपनी प्रतिभा को उजागर करने के लिए ऐसा मदान चुना, जिसके लिए हाथो का होना बहुत आवश्यक था आर हाथ इसके पास थे नही, फिर भी इस साहसी नवयुवक ने अपने शौक और लगन को भाग्य का लिखा कहकर नही टाला। बल्कि निष्ठुर प्रकृति की आखो मे आखे डालकर सामना किया। इस नवयुवक ने अपने पावो की मदद से ऑरकेस्ट्रा पर बहुत सुदर धुन तयार की आर बहुत लोकप्रिय हुआ। जिस व्यक्ति न भी इसे पाव की अगुलियो से वाद्यो को बजाते देखा, उसकी अद्भुत लगन की सराहना किए बिना नही रह सका।

कार्ल अथन अप्रल 1848 मे पूर्वी प्रशिया म जन्मा था। एक तेज आर स्वस्थ बच्चा था। जब उसक पडोसी आर रिश्तेदार उसे देखते तो उनकी आखो मे आसू आ जाते। इतना सुदर बच्चा, परतु बाजुओ से वंचित। प्रत्येक व्यक्ति अपनी हमददी जतलाता, परतु काल का पिता हर ऐसे व्यक्ति को बुरी तरह डाटता आर कहता कि इस बच्च पर हमदर्दी की कोई जरूरत नही। हमदर्दी इसे तबाह कर देगी। जब कार्ल एक वष का हुआ तो मा ने मोजे आर जूते पहनाने चाहे, लेकिन कार्ल के पिता ने कहा कि इसे जूते नही पहनने चाहिए, बल्कि यह अपने पैरो से बाजुओ का काम ले। जब इस बच्चे ने रेगना शुरू किया तो वह अपने पावो की उगलियो से ज्यादा से ज्यादा काम लेता। उसकी राने ओर टागे अन्य बच्चो की अपक्षा अधिक मजबूत आर लचकदार थी।

एक बार जब सारे घर के लोग रात्रि के भोजन पर एकत्र हुए ता काल के पिता फ्राथन ने काल के सामने एक शोरबे से भरा प्याला रख दिया। कार्ल तुरत अपने पाव की उगलिया शोरबे मे डुबोकर अपने मुह के करीब ले गया आर उगलियो को चाटने लगा, जिससे उसका सारा मुह शोरबे से लिथड गया। कार्ल की मा तुरत मुह साफ करने के लिए बढ़ी, परतु कार्ल के पिता ने उसे एसा करन से राक दिया और कहा कि इसे वही करने दो जो वह करना चाहता हे। इस समय इसकी सहायता करना इसक लिए हानिकारक हे। यदि अभी ऐसा किया तो शेष उम्र भी इसकी मदद करनी पडेगी। इस प्रकार बगर बाजुओ के उस बच्च ने बिना किसी की सहायता लिए अपनी जिदगी का सफर शुरू किया।

जब वह दो वर्ष का हुआ तो एक दिन सहसा उठ खडा हुआ आर गली मे निकल आया। इस प्रकार उसने गली के अन्य बच्चो स मित्रता बढाई और उनके साथ स्वय ही खलना सीखा। एक मकान के निर्माण के दौरान उसने मजदूरा को सीढ़ी से उतरते और चढते देखा। उसके मन म भी सीढी स उतरन ओर चढ़ने की इच्छा पैदा हुइ आर अत म वह अपनी कोशिश आर हिम्मत से सफल हुआ। उसका जीवन बिल्कुल एक सीढी की भाति था।

जिस घर मे कार्ल रहता था उसक साथ एक स्कूल था। वह प्रतिदिन चुपके से एक कक्षा म चला जाता और किसी को खबर हुए बगर शिक्षक से पाठ सुनता। वह विद्यार्थिया का अपने हाथो से स्लटो पर लिखते हुए देखता। एक दिन कार्ल भी अपन साथ स्लेट ले गया। एक पाव स स्लेट का पकडकर आर दूसरे पाव की उगलियो म चाक पकडकर लिखने की चेष्टा की और इस प्रकार वह जीवन की एक आर सीढ़ी पर चढ़ गया। जब वह 6 वष का हुआ ता उसके पिता ने उसे स्कूल म दाखिल करवा दिया।

उसके घर के करीब एक तालाब था जहा गर्मिया म बच्चे नहाया करते थ। काल उन्हे हसरत निगाहा से देखा करता, परतु उसके इसलिए स्वय इस तरह नहान म दिन काल पानी मे कूद पडा आ' पू'

बाजआ स वंचित कार्ल अथन

मीन पर बारी-बारी स जार डालकर स्वय का सतुलित रखा। उसन १ क दिन म तरना नही सीखा, बल्कि इस दारान कइ बार उसक फफडा म पानी भर जाता आर बुरी तरह खासी का आक्रमण हाता। फिर भी इस साहसी आर आत्मविश्वासी लडक न इस काय का अधरा नही छाडा और एक दिन अपनी उत्कट अभिलाषा का पूण करन म सफल हुआ, यानी कि उसन तरना सीख लिया।

वस्त्र पहनना या उतारना आम व्यक्ति क लिए ता साधारण बात है पर कार्ल क लिए यह काय भी पवतारोहण क बराबर था। जिस दिन कार्ल न अपन वस्त्र उतारन आर पहनन सीख लिए वह दिन उसक जीवन का स्मरणीय दिन था। एक स्या कार्ल न निणय लिया कि अब में काफी बडा हा गया हू आर मुझे स्वय कपड पहनना सीखना चाहिए। जब उस जैकट पहननी होती ता बठ जाता आर अपन पैरा क अगूठा का अपने सिर तक ले जाता। इस तरह कार्ल न जकट पहनना सीखा। जब वह पतलून पहनन लगा ता एक आर कठिनाइ ने उसका रास्ता रोका। पतलून म बटन लगे थे आर यह बहुत बडी समस्या थी कि उन्ह कस खाला आर बद किया जाए। अत म अपन पाव की उगलिया की सहायता स ही कार्ल न जीवन की यह बहुत ही साधारण, परत महत्त्वपूण सीढ़ी भी चढ़ ली।

बाजुआ स वंचित इस बच्चे का सगीत स बहुत लगाव था। ऐस बच्चे क लिए बाद्या (साजा) का इस्तमाल करना असम्भव सी बात लगती है लकिन कार्ल न सगीत न कवल सीखा, बल्कि दक्षता भी हासिल की।

Paris Nov 23^t 1893

Messrs Koster, Bial & Co New York

Gentlemen

I received both your cable & letter, containing Contract & I must say that you show such a considerable amount of "enterprising pluck" as to astonish me to perplexity.
My performance has been seen here & in London by H J Carney, Jo^n D Hopkins & various other America Managers, & every one of them was afraid to introduce me in the U S, "for fear of feet", so that I had come to the conclusion those useful lower members must have been rather neglected by the U S Public to cause such an animosity - Well, I shall come & see myself, & I trust that I'll do like Cesar: vene, vidi, vici I wish & hope that the New York Public will reward your courage & flock in by thousands to see my act you fully deserve it!

Most faithfully yours

C H Unthan

कार्ल अथन क पाव की महायता म लिखा हुआ एक पत्र

काल जब दस वष का हुआ तो उसने वॉयलन सीखना शुरू किया। वह घटा वॉयलन को अपने घुटनो मे लिए अभ्यास करता रहता। धीरे-धीरे वह सुरीली धुने बजाने लगा। 16 वष की उम्र म उसने विधिवत् सगीत का ज्ञान प्राप्त किया।

आखिर एक दिन काल को लागा के सामने अपनी कला का पश करने का अवसर मिल ही गया। उसने तनमयता म अपनी कला का प्रदशन किया। शो के बाद बहत म लाग इसलिए एकत्र हुए कि वह इस नवयवक कलाकार क साथ हाथ मिला सके, परतु वह यह दखकर चकित रह गए कि इस नवयुवक सगीतकार न उन्हे अपन पेर मे सलाम किया। वसे तो लाग इसम पूव अनक कलाकारा से मिले थे, परतु काल प्रथम व्यक्ति था जिसने अपन पर की उगलियो म अपनी कला का सम्मानित किया।

एक बार काल का सट पीटसबग मे सगीत का प्रोग्राम मिला। कार्यक्रम की समाप्ति पर एक रूसी पुलिस चीफ न उस पकड लिया आर कहा कि तुम धोखेबाज हो। वास्तव म तुम्हार पीछे एक आर आदमी वॉयलन बजा रहा था। काल उस अपन कमर म ले गया आर उसक सामन वॉयलन बजान लगा। शक्की मिजाज चीफ का चहरा विस्मयाभिभत हा गया ओर उसकी आखे आश्चर्य से फल गइ, जब उसने वॉयलन पर रूस का कोमी गीत बजते सुना। बाद मे कार्ल इग्लेंड, अमरीका आर क्यूबा भी गया, जहा उसन कई जगह पर अपनी कला का प्रदशन किया।

प्राग (चैकास्लोवाकिया की राजधानी 'प्राहा') म काफी समय अपनी कला का प्रदर्शन करने के दारान उसकी मुलाकात एक महिला एर्तनी बचता स हुई जो कि एक थियेटर मे गाया करती थी। वे दोना एक दूसरे की कला से प्रभावित हो गए आर वह एक साधारण सी मुलाकात अतरगता म बदल गई। कुछ समय पश्चात् स्वणिम पर्व सा वह दिन आ ही गया कि जब काल न उसके साथ शादी कर ली।

कार्ल अथन अब अपनी निपुणता के कारण सार ससार मे प्रसिद्ध हा चुका था। जमनी के प्रसिद्ध उपन्यासकार जराट हॉपट न उसके बार मे एक उपन्यास भी लिखा। जर्मनी मे काल के सबध म एक फिल्म 'बगर बाजुआ का इसान' (The Armless Man) बनाई गई, जिसमे कार्ल का चरित्र निभाने वाला अभिनेता नदी म डूबने वाली एक महिला को बचाता है। वह उस महिला को अपन घुटनो की सहायता स ऊपर लाता ह आर उसके ब्लाउज को अपन दाता मे दबाकर उसे किनारे पर ले जाता ह।

विना टागो और वाजुओ के व्यक्ति

ट्रिप और बॉउन

टिप और वॉउन दो ऐसे व्यक्ति थे, जा एक दूसरे का सहारा बने। दाना व्यक्तिया ने मिलकर एक सपूर्ण व्यक्तित्त्व बनाया। इन दोनो क पाम एक दूसरे की जरूरत के अग थे। एक के वाज नही थ, परन्तु टाग मौजूद थी। दूसरा टागो से वंचित था, परतु अपन वाजुआ से अपने मित्र की कमी का पूरा करता था। वाजुओ से वंचित व्यक्ति का नाम चाल्म टिप (Charles Tripp) और वगैर टागा वाले व्यक्ति का नाम एली वॉउन (Eli Bowen) था। अमरीकन सकसो म य दोना विख्यात हस्तिया मानी जाती थी। ये दानो मित्र अपने विनोदप्रिय स्वभाव के कारण वहुत लोकप्रिय थे। आपकी आख इस बात का वडी मुश्किल से विश्वास करेगी कि दा मध्य उम्र के प्रभावशाली व्यक्ति वहुत सुदर वस्त्र और टाइया और हैट पहने हुए, एक साइकिल चला रहे हा। एक ने अपन हाथा स हॅडिल को थाम रखा हो और दूसरा व्यक्ति अपने पाव से पैडल चला रहा हो। ट्रिप अपने वगैर टागो वाल मित्र मे कहता, "ब्राउन! अपने पैर ठीक तरह चलाओ।" बॉउन तुरत उत्तर देता, "पहले अपने हाथा को मेरे ऊपर से हटाओ।"

ट्रिप 6 जुलाइ 1855 को वुड स्टॉक (कनाडा) म पैदा हुआ। वह बचपन मे बहुत सुदर ओर स्वस्थ था, परन्तु एक चीज म पीछे रह गया आर व्रह थे उसक वाजू। कार्ल अथन की भाति उसने शीघ्र ही अपन पाव और अगूठो का इस योग्य बनाया कि वाजुओ की कमी को दूर किया जा सके। अपने माता-पिता के प्रोत्साहन से उसने भोजन करना ओर वस्त्र पहनना आर उतारना सीख लिया। उसन अपने दोना अगूठा की सहायता से लिखना भी सीख लिया। वह इन दो मजबूत अगूठा की सहायता स अपनी दाढ़ी भी स्वय साफ करता था।

नवयुवक ट्रिप अपनी टागो की असख्य योग्यताआ के कारण सारे गाव मे प्रसिद्ध था। उसके पडोसी कहा करत थे कि उसे सकस मे शामिल होना चाहिए ताकि वह अपनी कला का प्रदर्शन कर सके। इन्ही दिनो उसने पी टी बर्नम का नाम सुना जो अमरीका के

चार्ल्स टिप
वाजआ स वचित

सकस आर नुमाइशा की सुविख्यात हस्ती था। टिप न अपना फैसला अपने माता-पिता का सुनाया कि वह अपनी सवाए वनम क सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता है। उसे माता-पिता का आदेश मिल गया।

1872 मे ट्रिप न्यूयॉर्क पहुचा। उस समय उसकी उम्र केवल 17 वर्ष की थी। उसन बहुत बड नगर म स्वय को अकेला महसूस किया। आखिर वह बर्नम म्यूजियम म पहुच ही गया। जिस डेस्क पर बर्नम बैठा हुआ था, वेसा सुदर डेस्क उसन कभी नही देखा था। ट्रिप इस अत्यत शानदार व्यक्ति स इतना प्रभावित हुआ कि उसे कहने क लिए कोई शब्द ही नही मिल रहे थे। आखिर बर्नम ने कहा, "मरे बच्चे! इत्मीनान से बैठो और बताओ कि म तुम्हारे लिए क्या कर सकता हू।" काफी देर बाद उसे बोलने का साहस हुआ। उसन अपने पाव जूतो से निकाले आर बर्नम के सामने अपने आश्चयजनक करतबा को प्रदर्शित किया। बर्नम ने उसे नोकरी पर रख लिया।

टिप बर्नम के साथ कई वर्ष रहा आर इसी दा
उसकी भेट बॉउन से हुई। कुछ समय
शादी कर ली और शेप जीवन क
पत्नी के साथ नुमाइशो म गुजारे।
को वह निमोनिया का शिकार ह
उसकी उम्र 74 वर्ष थी।

एली बॉउन अपने परिवार के साथ

उसकी मृत्यु पर एक प्रसिद्ध अमरीकी समाचार पत्र 'साइंटिफिक अमेरिकन' ने सम्पादकीय में लिखा था कि उसके जीवन के शब्दकोश में असंभव शब्द कभी शामिल न हो सका। उसने अपने जीवन में अपंग होने के बावजूद ऐसे ऐसे कार्य किए जो हम हाथों-पांव वालों के लिए [illegible] हैं।

यह एली बॉउन बगैर टांगों वाला मदारी कहलाता था। बॉउन सर्कस के कुछेक सुंदर लोगों में से था। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें, कंधे और बाजू बहुत सुंदर थे, परंतु वह कहा करता था, "मेरे खड़े होने के लिए एक टांग भी नहीं।" बॉउन 19 अक्तूबर 1844 में अमरीका में पैदा हुआ। उसके 10 भाई-बहन

बिल्कुल सामान्य थे, परतु यह बगैर टागा के पैदा हुआ। फिर भी दा विभिन्न आकार के पेर कूल्हा की हड्डी के जोड स निकले हुए थे। जिस प्रकार चाल्स ट्रिप अपनी टागो से हाथो का काम लता था, इसी प्रकार एली बॉउन ने अपने बाजुआ को टागो क तौर पर इस्तेमाल किया।

13 वप की उम्र म बॉउन ने नुमाइशा म भाग लेना शुरु कर दिया। 1869 और 1897 मे वह इग्लेंड की सबस वडी नुमाइश म गया। वह चाल्स ट्रिप का घनिष्ठ मित्र था। बॉउन और उसका बगैर बाजुआ वाला मित्र दोना अपन करतबो स लोगा का आश्चर्यचकित कर दिया करते थे।

20 वर्ष की उम्र मे उसन एक 16 वर्षीय सुदर लडकी मेटीहैट स शादी कर ली ओर दोना कलिफोर्निया मे रहन लगे।

बॉउन का सर्कस म बगर टागा वाले मदारी के रूप मे माना जाता था। वह अपने करतब एक बास की सहायता से प्रस्तुत करता और अपने शरीर को छाट-छाट घरा म घुमाने लगता, फिर अपन दाय हाथ को खडे बास पर रखकर घेरे मे इतनी तेजी स घुमाता कि बास ओर उसका मध्य भाग 90 डिगरी का काण हो जाता था।

एक से अधिक, परतु दो से कम

इस ससार म एस व्यक्ति भी पैदा हुए हैं, जिनके पूर्ण शरीर क साथ अधिक अग जुडे हुए थे। इस प्रकार उनका शरीर एक स अधिक था, परतु दो से इसलिए कम था, क्योंकि वह चार ओर इग दो जुडवा भाइयो की भाति दो पूर्ण इसान नही थे।

कॉलोरेडो

दो शरीर परतु एक व्यक्ति! अतीत के विचित्र लोगो म सबस अधिक नाम कमाने वाला लजरस जोनस बपटिस्टा कॉलारडो (Lazarus Joannes Baptista Colloredo) था। वह सन् 1617 म जिनवा, स्विट्जरलेंड म पदा हुआ था। इसकी नुमाइश समस्त यूरोप म की गई ओर कई प्रसिद्ध वैज्ञानिको न उसका निरीक्षण किया।

कॉलोरेडो का एक छोटा भाई उसकी छाती से बाहर निकला हुआ था। बड भाइ का नाम लेजेरम ओर छाटे भाइ का जानम बपटिस्टा रखा गया क्योकि इस विचित्र व्यक्ति क दो सिर थे, इसलिए दोनो क अलग-अलग नाम रखे गए।

छोट भाइ की केवल एक बायी टाग ओर पाव था, जो नीच लटका हुआ था। इसक दो बाजू थे, परतु प्रत्येक बाजू की कवल तीन-तीन उगलिया थी। यदि इसकी छाती पर दबाव डाला जाता तो वह अपने हाथ, कान और होठो का हिलाता। उसे कोई आहार नही दिया जाता था, बल्कि वह अपनी भोजन सबधी आवश्यकताए अपन बडे भाइ लजेरस से पूरी करता था।

छोट भाइ का सिर पूर्ण था, जो बालो म पूरी तरह ढका हुआ था, परतु उसकी आख बद रहती थी। उसके सास लने की क्रिया अत्यत धीमी थी।

दोनो भाइयो क दाढी थी। बडा भाइ अपनी दाढी की ज्यादा देख भाल करता परतु छोटा उस बनाने सवारने म दिलचस्पी नही लता था। छोट भाइ जननेंद्रिया माजूद थी, परत पूर्ण न थी।

लेजरस एक सामान्य व्यक्ति था। वह विनोदप्रिय स्वभाव का मानव था। उसने शादी की और कइ बच्चो का पिता बना। जब कभी वह बाहर जाता तो छोटे भाई पर चादर डाल देता ताकि लोगो को दिखाई न द सके।

बार्थोलिनस ने लिखा है—"वह प्राय खुश और हसमुख रहता था, परतु किसी समय वह उदास भी हो जाता, जब वह अपने भविष्य क बारे म सोचता, यानी जब उसके छोट भाई की मृत्यु होगी तो क्या उसकी मृत्यु बड भाइ के शरीर मे प्रवेश कर जाएगी।"

दो सिर वाला अजूबा बच्चा

सन् 1791 म रॉयल फिलॉसोफिकल सोसाइटी क सामने एक विचित्र यादगार केस प्रस्तुत किया गया। यह बगाली बच्चा था, जो 1783 मे पैदा हुआ। उसक सिर के ऊपर एक दूसरा सिर मौजूद था, जैस सिर पर ताज रखा हो। उसका दूसरा फालतू सिर दायी ओर झुका रहता। इस बच्च को, सर एवराड होम (Sir Everard Home) ने प्रसिद्ध एनाटामिस्ट जान हण्टर के सामने पेश किया।

होम की रिपोर्ट इस प्रकार थी—बच्च की शारीरिक रचना बिल्कुल सामान्य ओर प्राकृतिक थी, परत एक मौजूद सिर के ऊपर दूसरा सिर जुडा हुआ था। जब बच्चा 6 महीने का हुआ तो दोनो सिरो पर काले बाल एक जसी सख्या मे उग आए। उसक निर्धन माता-पिता उस कलकत्ते की गलियो मे ल आए ताकि उस विचित्र बच्चे को दिखाकर पैस कमाए जा सक।

जब बच्चा सोकर उठता तो दोनो सिरो की आख एकसाथ कार्यशील होती। आस कवल ऊपर वाल सिर की आखो म बहते। कभी एसा नही हुआ कि नीच वाल सिर की आखो मे आस बहे हो। जब यह बच्चा मुस्कराता तो ऊपर वाल सिर के अग भी इसी प्रकार हिलते। जब उसक ऊपर वाले सिर को कष्ट पहुचाया जाता तो उस किसी प्रकार का कोइ कष्ट महसूस नही होता।

जब यह बच्चा 2 वर्ष का हुआ तो उसको काले नाग न काट लिया जिसक कारण उसकी मृत्यु हो गइ।

एक चिकित्सा-सबधी निरीक्षण क अनुसार ऊपर

वाले सिर का अपना मस्तिष्क ओर स्नायु-तत्र था। इस बच्चे की दोनो खोपडिया लदन के रॉयल कॉलेज आफ सर्जरी मे सुरक्षित हैं।

फ्रैंक लैंटिनी तीन टागो का अजूबा

आपने कुछ ऐसे व्यक्ति देखे होगे, जिनकी उगलिया अधिक होती हैं, परतु जब फ्रैंक लेंटिनी (Frank Lentini) पैदा हुआ था, तो एक पूरी टाग, दो टागो क अतिरिक्त उसकी पीठ से बाहर निकली हुई थी।

फ्रैंक हमेशा कहा करता था कि यह फालतू टाग कभी भी मेरे लिए रास्ते मे रुकावट नही बनी। बहरहाल वह इस फालतू टाग की सहायता से चल नही सकता था, क्योकि वह दूसरी टागो की अपेक्षा काफी छाटी थी।

हैरी लोस्टन जो उसके साथ सर्कस म काम किया करता था, ने बताया कि वह इस टाग को स्टूल के स्थान पर इस्तेमाल करता था। शायद विश्व मे वह अकेला व्यक्ति होगा, जो जहा चाहे जिस समय चाहे, बैठ सकता था। उसे कभी इस बात की आवश्यकता नही हुई कि कुर्सी या स्टूल को खीचकर लाए ओर फिर बेठे।

फ्रैंक इस टाग की सहायता से गेद का ठोकर भी लगा देता था, जो उसके सर्कस के अन्य साथिया के लिए आश्चर्यजनक था।

फ्रैंक लेंटिनी 1889 मे सिसली (Sicily) के एक कस्बे रोजोलिनी (Rosolini) मे पैदा हुआ। वह एक आकर्षक ओर सामान्य व्यक्ति था। जब लेंटिनी का परिवार अमरीका आया तो फ्रैंक उस समय बच्चा था। कई वर्षो तक फ्रैंक रिगलिग ब्रदर्स, बर्नम ऐण्ड बेली और कई दूसरो के साथ रहा। यद्यपि यह फालतू टाग उसके लिए रुपया कमाने का साधन थी, परतु फ्रैंक को कभी भी इस प्रदशन पूर्ण जीवन से सताप न था। इसलिए उसन टाग को कटवाने क लिए सोचा। परतु सर्जनो ने टाग का आपरेशन कराना अत्यत खतरनाक बताया, इससे मत्यु भी हो सकती ह ओर वह पूर्णत अपग भी हो सकता ह।

नवयुवक लेंटिनी के लिए यह अतिरिक्त टाग एक परेशानी बनी हुई थी। लाग उसकी टाग की आर देखत रहते। उसके कान सहानुभूतिपूर्ण शब्द सुन

फ्रैंक लैंटिनी जिसके तीन टाग थी

सुनकर पक चुके थे। उसे अपने आप से नफरत हा गई थी। उसक साथी उसक मन का बहलाने की कोशिश करत, परतु वह कभी इस बात को मानन के लिए तैयार न हुआ कि जीवन चाहे कसा हो गुजारने याग्य हे।

एक दिन उसे अपगो के एक अस्पताल मे जाने का इत्तफाक हुआ। उसन देखा कि किसी का जीवन अधेपन के कारण बिल्कुल अधकार म कट रहा है, तो कोई लगडपन के कारण चलन म मजबूर ह, परतु इन सब अपग बच्चा म कोइ भी भाग्य मे शिकायत नही

कर रहा था बल्कि वह बेहतर से बहतर काय करने मे तल्लीन थे। उसने अत म बताया, "इस अस्पताल को देखन म मुय दख अवश्य हुआ कि जीवन मे इतनी विपत्तिया और कष्ट ह परतु एक बात बहुत अच्छी हुइ कि मैंन बाद म कभी भाग्य का रोना नही रोया। मैं सोचता ह कि जिदगी समस्त मसीबतो और कष्टो क बावजूद सुदर है और जीवन व्यतीत करने के योग्य ह।

इस प्रकार ब्रोटनी न अपनी फालतू टाग को खुशी से स्वीकार कर लिया। वह कहा करता कि मैं हर काम कर सकता हू, जो एक साधारण (नार्मल) व्यक्ति करता है। चलना, दौडना, कूदना, घुडसवारी, साइकिल चलाना, सक्षप मे यह कि सभी कार्य वह सरलतापूर्वक कर लेता था। इन तमाम बातो क अतिरिक्त वह अन्य लोगो से इसलिए भिन्न था, क्योकि वह अपनी फालतू टाग को इस्तमाल म लाता था और उससे कई प्रकार के काम लेता था।

फ्रैंक न अपने लिए एक घर लिया और उसन अपनी शादी भी की। इतना ही नही तीन पुत्रो ओर एक पुत्री का पिता भी बना।

सर्वाधिक मोटे और पतले इसान

सर्वाधिक मोटे इसान

राबर्ट अल ह्यूज

रॉबर्ट अर्ल ह्यूज आधे टन का व्यक्ति

रॉबर्ट अल ह्यूज (Robert Earl Hughes) मन 1926 मे इलिनॉय (म रा अ) म पदा हुआ था। पैदाइश के समय उसका वजन 5 22 किग्रा था। अभी वह तीन महीने का ही था कि उसे खासी का दारा पडा। उसके माता-पिता समझते थे कि इम खामी क कारण उसके टॉसिलो म खराबी पैदा हो गइ है।

जीवन क कुछ ही वर्षो मे उसके वजन म इतनी वद्धि हुई, जो इससे पूर्व इतिहास म कभी नही हुइ थी। 6 वर्ष की उम्र म वह 92 08 किग्रा का था। चार वप बाद 171 46 किग्रा हो गया। 18 वप की उम्र म 314 34 किग्रा और 25 वर्ष की उम्र तक पहुचत-पहुचत उसका वजन 405 51 किग्रा हो गया।

फरवरी 1958 म ह्यूज का वजन 485 किग्रा था। चिकित्सा विज्ञान क इतिहास मे आज तक उमस अधिक वजन किमी भी व्यक्ति का नही हुआ। वह बड गव स कहा करता था कि उसकी कमर 309 0 समी (122), छाती 315 समी (124) 355 6 सेमी (140") चाडे ह।

ह्यूज ने खत म काम करना
ही वह इस काय के अयोग्य

व्यक्ति के लिए एक ही स्थान और काम उपयुक्त रह जाता है और वह है—सर्कस। यही वह स्थान था, जहा उसने अपने जीवन के शेष दिन गुजारे। वह बोरे जैसे ढीले-ढाले कपडे पहनता और अक्सर बगैर जूतो के नगे पैर चलता। इसलिए नहीं कि वह एक किसान का बेटा था बल्कि इसलिए कि झुक कर बूटो के फीते बाधना उसके लिए असभव था।

सन 1958 में जब यह बेहद भारी लडका अपनी सर्कस कम्पनी के साथ इंडियाना की यात्रा पर था, तो एक ट्रक के ट्रेलर में बैठा रहता था। जुलाई में ह्यूज को खसरे का ज्वर हो गया परतु ब्रमन कम्यूनिटी अस्पताल में उसके नाम का कोई बिस्तर नहीं था और कोई भी दरवाजा इतना चौडा न था कि वह उसमें से गुजर पाता। अत ह्यूज को अपने ट्रेलर ही में लेटे रहना पडा।

नर्सों और डॉक्टरों का एक पूरा जुलूस उसके ट्रेलर के आसपास रहता। किसी तरह उसे खसरे से तो मुक्ति मिल गई परतु एक और घातक बीमारी युरेमिया (Uraemia) उसे लग गई। इस बिमारी के कारण उसके गुर्दों ने काम करना बद कर दिया और उसके रक्त में जहर फैल गया। इस प्रकार 10 जुलाई 1958 को अल ह्यूज की मृत्यु हो गई।

13 जुलाई को ह्यूज के जनाजे का एक बेहद दर्शनीय दृश्य था। ह्यूज के चित्र हाथो-हाथ बिक रहे थे और मृत शरीर के फोटो धडा-धड खीचे जा रहे थे। उसे दफनाने के लिए पियॉनो केस के आकार का ताबूत बनवाया गया था, जो 215 9 सेमी (85") लम्बा, 132 05 सेमी (52") चौडा और 86 36 सेमी (34") गहरा था। यह ताबूत एक ट्रक पर क्रेन द्वारा लाद कर

रॉबर्ट अल ह्यूज

लाया गया था। कब्रिस्तान के चारो ओर सर्कस का खेमा खडा किया गया और 12 व्यक्तियो की सहायता से ह्यूज का भारी ताबूत रोलरो और तख्तो की मदद से कब्र में उतारा गया। एक समाचार पत्र के अनुसार, "इस प्रकार दुनिया के सबसे भारी-भरकम व्यक्ति का अंतिम सस्कार हुआ, जो न केवल वजन और माप में बडा था, बल्कि हृदय का भी बडा था।

जॉनी ऐली

जॉनी ऐली (Johnny Alee) को आज तक का ससार का सर्वाधिक वजनी व्यक्ति कहा जा सकता है। कहा जाता है कि उसका वजन 513 38 किग्रा अर्थात् रॉबर्ट अर्ल ह्यूज से भी 28 58 किग्रा अधिक था।

ऐली कार्बण्टन (Carbonton) उत्तरी केरोलिना (स रा अ) मे 1853 इ मे पैदा हुआ था। यद्यपि वजन से वह एक भारी लडका अवश्य था, परतु अन्य मामलो में वह बिल्कुल सामान्य ओर स्वस्थ था। 10 वर्ष की उम्र म उसकी खाने की आदत नियत्रण से परे चली गई, जिससे उसका वजन आकाश से बाते करने लगा। 5 वर्ष मे ही उसका डील-डाल इतना भारी हो गया कि अपने घर के मुख्य दरवाजे से गुजरना उसके लिए कठिन हो गया। उसकी जाघे इतनी मोटी थी कि एक व्यक्ति की दोनो बाहे उसकी एक जाघ को अपने मे समेट न सकती थी।

जॉनी ऐली के बेठने के लिए एक विशेष प्रकार की कुर्सी बनवाई गई थी, जो उसके वजन को सभाल ले। वह इतना भारी था कि अपने पावो के सहारे, बिना किसी की सहायता के उठ न सकता था।

1887 की बात हे। एक दिन वह अपनी छत पर चल रहा था कि उसके वजन के जोर से छत एकदम गिर पडी। उसके मित्र उसकी सहायता को दौडे, परतु इससे पहले कि उसे उठाया जाता, उसकी सास बद हो गई। डाक्टरो की रिपोर्ट के अनुसार भय के कारण उसके हृदय ने कार्य करना बद कर दिया था।

जैक इकर्ट

जेक का वजन 335 20 किग्रा और उसकी कमर का घेरा 474 38 मेमी (187) था। सर्कस म लोग उसे 'हसमुख जैक इकर्ट' कहा करत थ। परत् केसा हसमुख? भारी लटकती हुई छाती और लम्बा-चोडा पट, जो घुटनो तक लटका रहता था। क्या इस कुरूपता ने उसे कम परेशान किया होगा। जब वह बैठता था, तो मास के पवत जैसा लगता था, परतु फिर भी जैक लोगो के सामन हमेशा अपने चेहरे पर हसी ओर मुस्कान बनाए रखता था। ऐमा उस मजबूरन करना पडता था, क्योकि वह सर्कस का एक वेतनभोगी नौकर था। उसके दिल पर क्या बीत रही थी, यह शायद कोई नही जानता था।

फिर भी उस मोटे व्यक्ति ने सर्कसो और नुमाइशो मे अपना विशेष स्थान बनाया। 'बर्नम ऐण्ड बेली' के साथ उसने अटलाटिक महासागर की यात्रा की । वह शिकागो म होने वाले विश्व मेले ओर सान फ्रासिस्को की पनामा नुमाइश मे भी गया। इस प्रकार वह 10 वर्ष तक सर्कसो ओर नुमाइशो मे लोगो को हसाता रहा।

इकर्ट को चलने मे बहुत कठिनाई होती थी। उसने अपना घर एक टक पर बसाया था। फरवरी 1939 की बात है। एक दिन वह मारडी ग्रस सर्कस मे भाग लेने के लिए जा रहा था कि रास्ते मे उसका ट्रक एक दूसरे, तेज रफ्तार स आ रहे टक से टकरा गया, जिससे वह जख्मी हा गया। दूसरे इकर्ट को एम्बलेस मे डालना एक ओर मुसीबत बन गया। इसके लिए 10 व्यक्तियो को काम में लगाना पडा। यही नही, अम्पताल मे दो अधिक बिस्तरा की व्यवस्था भी करनी पडी। इस सबके बाद भी जेक इकट का बचाया न जा सका। कुछ

जैक इकर्ट—जिसका वजन 335 20 किग्रा था

बेबी रूथ पोण्टिको का वजन 369 68 किग्रा था

दिनो के पश्चात उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय वह 62 वर्ष का था।

जैक इकट के लिए ताबूत भी एक विशिष्ट आकार कर बनवाया गया था।

बेबी रूथ पोण्टिको

बेबी रूथ पोण्टिको (Baby Ruth Pontico) का वजन 369 68 किग्रा था। इसी विशिष्टता के कारण हजारों लोग उसे एक नजर देखने के लिए उसके खेमे के बाहर चक्कर लगाते रहते। उस समय वह रॉयल अमेरिकन शो के साथ ठहरी हुई थी।

बेबी रूथ 1904 में इण्डियाना (सं रा अ) में पैदा हुई थी। उसकी मां भी एक मोटी औरत थी जो उससे पूर्व रिंगलिंग ब्रदर्स के सर्कस में काम करती थी। उसका वजन 272 15 किग्रा था। इस प्रकार रूथ को मोटापा अपनी मां से विरासत में मिला था। उसने स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने के बाद टेलीग्राफ कम्पनी में नौकरी शुरू की परन्तु वह इतनी मोटी हो गई थी कि केवल सरकस और नुमाइशों के अलावा और कोई काम नहीं कर सकती थी। अन्त में रूथ को भी सर्कस में भरती होना पड़ा। वहां उसकी भेंट एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो शायद रूथ के लिए ही बनाया गया था। उस व्यक्ति का नाम जॉय पोण्टिको था जिसका वजन 316 15 किग्रा था। दोनों ने एक दूसरे को देखा और सोचा कि हम दोनों एक दूसरे के लिए बनाए गए हैं और उन्होंने शादी कर ली।

बेबी रूथ बहुत हंसमुख महिला थी। उसने 300 डालर प्रतिदिन की दर से धन कमाया, परंतु इसके बावजूद वह पूर्णतया खुश न थी। उसके भारी वजन ने उसे सामान्य लोगों जैसा जीवन व्यतीत करने से वंचित रखा। उसके उपयोग की लगभग प्रत्येक वस्तु विशेष आकार की, आर्डर देकर बनवाई जाती थी। घर के दरवाजे पलंग, कुर्सी, मेज, जूते, वस्त्र आदि सभी कुछ औरों से भिन्न प्रकार के थे। रूथ जब घर पर होती तो निरंतर कुर्सी पर बैठी रहती। अपने आप पहलू तक बदलने से लाचार थी। कमरे में कुछ कदम चलने तक के लिए वह बेचारी तरसती रहती थी।

जोली इरेन

2 दिसम्बर 1937 को न्यूयॉर्क टाइम्स में छपा था—"पिछली रात्रि ऐमाण्डा सिबर्ट (Amanda Siebert) सर्कस की मोटी महिला स्टिलवेल एवेन्यू (कोनी आइलैंड) में स्थित अपने कमरे में बिस्तर से गिर गई। पांच तगड़े-तंदरुस्त पुलिसमेनों की सहायता से उसे पुनः बिस्तर पर डाला गया। उसका वजन 294 83 किग्रा था।"

जोली इरेन (Jolly Irene) ऐमाण्डा के व्यावसायिक नाम से प्रसिद्ध थी। सर्कस शो में वह अपनी मुस्कान की बदौलत पहचानी जाती थी। हजारों लोग जिन्होंने उसे देखा उसकी मुस्कान को हमेशा अपने मन में बसाए रखेंगे।

जोली इरेन 1880 में पैदा हुई थी। शुरू में वह बिल्कुल सामान्य किस्म की थी। 1901 में, जब वह 21 वर्ष की थी, 54 42 किग्रा वजन की सुंदर युवती थी। अपनी शादी के एक वर्ष बाद उसने अपने पहले बच्चे को जन्म दिया और उसी समय से उसके हार्मोंस में खराबी आ गई। उसके वजन में तेजी से वृद्धि होने लगी। कम खुराक के बावजूद उसका मोटापा बढ़ता ही गया। इस मोटापे से केवल एक लाभ हुआ कि उसे सर्कस कम्पनी में उसे नौकरी मिल गई। अब वह कोनी आइलैंड में रहने लगी। वहां उसने दूसरी शादी की। जब वह 60 वर्ष की हुई तो बीमार पड़ गई और उसका वजन कम हो गया। नवम्बर 1980 में मृत्यु के समय वह 226 8 किग्रा की थी।

एक मोटी औरत सेलेस्टा गेयर

डॉक्टर ने पूछा, "खूराक या मृत्यु।" मोटी औरत ने बडे ध्यान से सुना। वह पचास वर्ष से बढ़ती भूख के अनुसार अपनी खूराक बढाती आ रही थी। अब यदि वह 2 27 किग्रा मास, चार बडे बन, आलुओ का बडा-सा ढेर, एक गेलन दूध, केक, पेस्ट्री, आइस्क्रीम *आदि इतना सब कुछ न खाती तो रात को सो न पाती।* खूराक की बढती मात्रा के ही कारण वह दिन प्रतिदिन इतनी मोटी होती चली गइ कि चद सासो के लिए अस्पताल मे पडी तडप रही थी। उसका ब्लड प्रेशर 240 हो गया था। पाच हृदय-विशेषज्ञ उसकी ECG रिपोर्ट देखत और निराशा से सिर झटक देते। उसका वजन 251 74 किग्रा था और यह भारी वजन ही उसके हृदय के लिए जहर के समान था।

डॉक्टर ने कहा, "खाना खाओ या जीवित रहो। दोनो काम एक साथ नही चल सकते।"

भूख और जिदगी के अतर्विरोध की यह घटना सेलस्टा गेयर के जीवन से सबधित है, जो 18 जुलाई 1901 को सिनसिनाटी, ओहायो (स रा अ) मे पैदा हुइ थी। जन्म के समय सेलेस्टा एक सामान्य और स्वस्थ बच्ची थी। उसका वजन 3 40 किग्रा था। उसे ग्लैण्ड सबधी किसी प्रकार की कोई बीमारी भी नही थी परतु उसकी मा जर्मन थी। जर्मन लोग खाने-पकान मे विशेष रुचि रखत ह। उस समय के माता-पिता समझते थ कि स्वस्थ बच्चा वह होता है, जो खूब मोटा-ताजा हो। अत सलेस्टा न भी ज्यादा खाने की आदत बना ली और खाना ही उसके जीवन का अभिशाप बन गया।

सलेस्टा जब 5 वर्ष की हुई तो उसका वजन 68 04 किग्रा हो गया। उसके साथी उसे 'मोटी-मोटी कह कर चिढ़ाते। मा उसे सात्वना देती कि अभी तुम बच्ची हो। परतु 11 वर्ष की उम्र मे जब उसकी टीचर ने कहा कि उसे वाई डब्ल्यू सी ए मे जाकर तैरना चाहिए, ताकि उसका वजन कम हो सके। सेलेस्टा न इस पर अमल शुरू कर दिया, परतु इस व्यायाम ने उसकी भूख मे और ज्यादा वृद्धि कर दी। वह पहले से भी अधिक खाने लगी। स्कूल मे उसके लिए बैठना मुश्किल हो गया। उसकी सीट उसके शरीर को देखते हुए बहुत छोटी लगने लगी। इसी तरह बढते-बढ़त 15 वर्ष की उम्र म 86 64 किग्रा और 21 वर्ष की उम्र म 118 39 किग्रा की हो गइ।

स्कूल छोडने के बाद सेलेस्टा ने कइ जगह नौकरी की। इस तमाम अर्से के दौरान उसका वजन तेजी से बढ़ता रहा जो अन्य लोगो के लिए मनोरजन का साधन बन गया। वह लोगो के मजाक सुनती तो हीनता से कुण्ठित हो जाती। घर जाती तो मा उसे बहलाने के लिए उसकी पसद के चटपट खाने दे देती जिससे उसका मन तो खिल उठता लेकिन वह बेचारी यह नही जानती थी कि वह अपन गले के नीचे जहर उतार रही है।

सेलेस्टा सुदर और आकर्षक तो थी ही, जल्दी ही फ्रैंक गेयर नाम का एक युवक साथी के रूप मे मिल गया और उन्होन 1925 ई मे विवाह कर लिया, लेकिन सेलस्टा की अधिक खान की आदत घटने के बजाय बढती ही गई। उदासी और गम मे अगर वह अधिक खाती तो खुश होने पर और अधिक। जब बीमा कम्पनी न उसकी प्रार्थना यह कहकर रद्द कर दी कि उसके जीवित रहने के अवसर बहुत कम है, तो उस दिन उसने खूब छक कर खाना खाया। जिससे उसे अत्यत आराम और शाति महसूस हुई।

अब वह अपने वजन के बारे म बहुत अधिक चिंतित रहन लगी। उसन डाइट पिल्ज (भूख कम करने की गोलिया) का इस्तेमाल शुरू कर दिया। उसकी ननद जो उसकी ही तरह मोटी थी डाइट पिल्ज इस्तेमाल किया करती थी। इन गोलिया का प्रभाव यह हुआ कि उसकी ननद की तो मत्यु हो गई। उसे पेशाब म विष और गुर्दो की बीमारी हो गई।

1927 की वसत ऋतु मे स्वस्थ होने के बाद सेलेस्टा अपने पति क सर्कस मे गई। वहा उसने एक और मोटी ओरत को देखा। सेलस्टा का वजन तब 155 38 किग्रा था। वह समझती थी कि वह उस औरत से कही अधिक भारी-भरकम होगी, परतु उसे निराशा हुई, क्योकि उस मोटी औरत जॉली पर्ल स्टीली का वजन 317 51 किग्रा था। उसने सेलस्टा को भी सर्कस शामिल होने का परामर्श दिया और उसने ...
सामन टिकट सेलर की नौकरी का ...
दिनो पश्चात् पति-पत्नी दोनो
प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और
दौरान उसकी गिनती म

उल्लखनीय मोटी महिलाओ म की जाती रही। सलस्टा न अपना व्यावसायिक नाम, 'जॉली डॉली गयर' रखा। अपने पेशे क कारण उसे सारे अमेरिका और कैनाडा म घूमन का मोका मिला। 1930 मे जब वह घर वापस आइ तो उसको एक ओर मोटी ओरत बर्बी स्थ मिली जो रिंगलिंग ब्रदस क सर्कस मे थी।

सन् 1939 म सलस्टा का वजन 226 08 किग्रा से भी काफी बढ़ चुका था। उस दुनिया की सबसे सुदर मोटी महिला क नाम स याद किया जाता रहा। इस बीच अपनी आय बढ़ान क लिए उस ज्योतिष का काम शुरू करन का विचार सझा। इसलिए शीत ऋतु म, जब नुमाइश न होती तो वह ज्योतिषी बन जाती।

अब सलस्टा न फ्लोरिडा म अपन शरीर के अनुकूल एक घर बनवाया जिसका फश ककरीट से बनाया गया ताकि गिरन की आशका न रहे। उसम विशष प्रकार का एक टॉयलट और फावारा भी था। घर का सारा फर्नीचर बहद मजबूत और ओसतन आकार से बडा था तथा दरवाज अधिक चौड थे।

सलस्टा क बड आकार और बडी सफलता ने उसक लिए अनक समस्याए भी पैदा कर दी। अब उस चलन म बहुत कठिनाइ होती। एक बार वह अपनी एक सबधी स मिलन गई तो उसक टखने बुरी तरह सूज गए और अचानक उसकी सास घुटन लगी। फैमिली डॉक्टर न उसकी जाच की और शीघ्र ही अस्पताल पहुचान की सलाह दी।

सलस्टा को जब फ्लोरिडा के ऑरज ममोरियल अस्पताल मे ल जाया गया तो वह लगभग बहोशी की हालत म थी। एक-एक सास क लिए वह तडप रही थी। उसी अवसर पर डॉक्टर न भाग्य का फैसला सुनात हुए कहा था—'सगक यानी मृत्यु। तुम्ह खुराक अथवा जीवन म एक का चुनना होगा।" अत सलस्टा को अस्पताल म बहुत सतुलित खुराक दी जान लगी। धीर-धीर उसका हृदय स्वस्थ होन लगा और वजन घटन लगा परन्तु वजन कितना कम हुआ इसका अनुमान लगाना कठिन था क्योंकि वजन लन क जो उपकरण तब अस्पताल म उपलब्ध थ, व सेलेस्टा के गिरे हुए वजन की तोल कर पाने म भी अक्षम थे। कई सप्ताह बाद उसे घर जाने की अनुमति मिली। घर के रास्ते मे सेलेस्टा और फ्रैंक ट्रकों को तोलने वाले सरकारी स्टेशन पर रुके। वहा उसका वजन 236 97 किग्रा निकला, यानी पहले से 14 06 किग्रा कम हो गया था। कितु दुनिया की उस अत्यत सुदर मोटी महिला के लिए यह मुश्किल था कि दिन म केवल 800 केलोरी की खुराक खाए, फिर भी उसे इस पर अमल करना पडा और इस प्रकार उसका वजन 226 8 किग्रा से भी कम हो गया। 5 महीने पश्चात् वह केवल 183 7 किग्रा की रह गई।

धीर-धीरे उसका वजन ओर कम होता गया। वजन घटाना अब उसके जीवन का मुख्य लक्ष्य बन चुका था।

जुलाई 1950 मे सलेस्टा ने अपनी बहन के घर म अपनी पचासवी वर्षगाठ मनाइ। उस अवसर पर उसका वजन 69 85 किग्रा था, जो धीर-धीर और कम होता जा रहा था। उसका सीना जो पहल 436 38 सेमी (172) था, अब केवल 96 52 समी (38') रह गया था और उसकी 157 48 समी (62") की कमर घटकर आधी हो गइ थी। उसक कूल्ह जो पहल 213 36 सेमी (84) थ, अब 106 68 समी (42) रह गए थे।

सलस्टा क वजन म यह आश्चर्यजनक कमी एक चमत्कार की तरह थी। अखबार वाला न जब इस सबध म सेलस्टा स भेट की, तो उसन कहा, "वस्तुत यह बहुत सरल ह, अर्थात् सभी को सतुलित भोजन लना चाहिए।" उसने उन्ह यह भी बताया कि वह सिर्फ सब्जियो, फलो और मास पर निर्भर रही है, चीनी और हर प्रकार की मीठी चीजो क पास तक नहीं गइ है।

सलस्टा गयर क वजन म 181 4 किग्रा की यह कमी वास्तव म अद्भुत और आश्चयजनक है। इस दृष्टि स इस बारे म उसन जो प्रयत्न किए उन्ह शरीर और आदत पर मानसिक शक्ति की विजय की कहानी कहा जा सकता है।

जीवित इसानी ककाल

क्लॉद सुरात

इग्लेंड मे 1820 मे एक प्रसिद्ध जीवित ककाल की नुमाइश की गई। उसका नाम क्लॉद सुरात (Claud Seurat) था ओर वह फ्रास का निवासी था। सन् 1798 मे उसका जन्म हुआ था। उसकी त्वचा हड्डियो पर इस प्रकार मढ़ी हुई थी जिससे उसका शरीर एक ककाल (ढाचे) की भाति बन गया था। उसके हृदय को धडकते हुए देखा जा सकता था। उसकी आवाज बहुत कमजोर आर बारीक थी। सुरात का स्वास्थ्य अच्छा था। भोजन मे वह थोडी सी शराब और एक रोल लेता था।

काल्विन एडूसन

काल्विन एडूसन (Calvin Edson) नामक और एक नर ककाल न मई 1829 मे टमेनी हाल (Tammany Hall), न्यूयॉर्क मे अपनी नुमाइश की। 44 वर्ष की उम्र मे उसका वजन केवल 27 22 किग्रा था।

आइजक स्प्रैग

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना कर सकते हैं, जिसकी बाह छडियो जसी प्रतीत हो ओर उसके घुटने उसकी सारी टाग में सबसे अधिक चाडे हो। ऐसे ही एक व्यक्ति का नाम आइजक स्प्रग (Isaac Sprague) है। स्प्रैग 21 मई को पूर्वी ब्रिजवाटर, मसाचुसट्स (स रा अ) मे पदा हुआ था। वह एक स्वस्थ बच्चा था। उस तरने का बहुत शोक था। 12 वर्ष की उम्र मे उसक वजन म असाधारण तोर पर कमी होनी शुरू हा गइ। सन् 1864 म उसकी हालत काफी खराब हा गई। अगले वर्ष वह अपने भाई के साथ सर्कस देखने गया। सकस वाल इस किस्म के अजूब एकत्र करते ही हैं। स्प्रैग को देखत ही उसे सर्कस म शामिल होने का आमंत्रित किया गया, जिस स्प्रैग ने स्वीकार कर लिया।

उस बर्नम के सर्कस म सुरक्षित स्थान मिल गया। स्प्रग उन दिनो बर्नम की अमरीकन म्यूजियम मे था, जब 1868 म वहा आग लगी थी, बनम के मुलाजिम एक आर म्यूजियम के लिए सामग्री एकत्र कर रह थे ओर स्प्रैग अपन लिए एक पत्नी की तलाश म था।

आइजक स्प्रैग अपन परिवार के साथ

स्प्रैग ने कई सर्कसा मे अपनी नुमाइश की। एक पुराने सर्कस क शाकीन ने इन शब्दो म उसका चित्रण किया था—"मने अत्यत पतल व्यक्तिया का दखा आर महसूस किया कि व चिडियो जितनी खूराक खात होग, परतु जब मेंने स्प्रग को देखा ता मुझ अपना विचार बदलना पडा, क्याकि स्प्रग क खान की मज पर इतन प्रकार का भोजन पडा था जा एक दत्याकार व्यक्ति के लिए भी अधिक हाता। जब स्प्रग खा-पी चुका ता
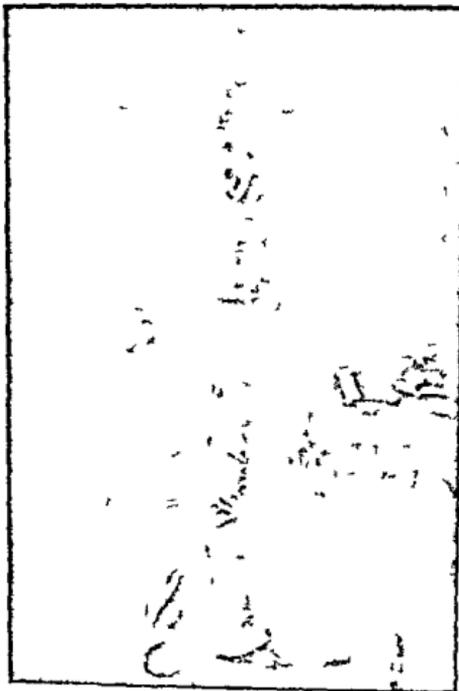
जम्स डब्ल्यू कोफी

सारी मेज साफ पड़ी थी। जम्बू हाथी को दिए जाने के लिए बचाए गए रोटी के एक टुकड़े के अलावा उसने कुछ भी न छोड़ा था।

स्प्रग की उम्र जब 48 वर्ष, वजन 23 59 किग्रा और कद 167 64 सेमी (5 6") था, तब उसने शादी की और दो पुत्रों का पिता बना।

जेम्स डब्ल्यू कोफी

एक और जीवित ककाल जेम्स डब्ल्यू कोफी (James W Coffey) के नाम से प्रसिद्ध था। वह अत्यंत शाहाना लिबास पहनता, जो उसके पतले शरीर पर चुस्त होता, जिससे उसके शरीर की हड्डिया ज्यादा स्पष्ट दिखाई देती। जेम्स 11 मार्च 1852 मे ओहायो (Ohio) मे पैदा हुआ। उसका कद 167 64 सेमी (5 6) और वजन लगभग 32 किग्रा था।

काफी कई वर्षो तक अमरीका और यूरोप के सर्कसो में अपनी नुमाइश करता रहा। वह कहा करता था–' मै शादी करना चाहता हू, परतु कोई महिला यह नहीं चाहती कि उसका काफी इतना पतला हो।'

पैट रॉबिसन

सर्कस के प्रचार विभाग से सबधित लोग हमेशा यह चेष्टा करते हैं कि किसी प्रकार एक दीर्घकाय आदमी और एक ठिगनी औरत या मोटी महिला और जीवित नर ककाल की शादी हो जाए। यदि वे अपनी कोशिश मे सफल भी हो जाए तो वह शादी अधिक समय तक कायम नही रहती।

सन् 1924 मे इसी प्रकार की शादी हुई थी, जो बहुत ही सफल सिद्ध हुई। यह शादी पैट रॉबिसन (Pat Robinson), जिसका वजन 26 31 किग्रा था और बनी स्मिथ (Bunny Smith) नामक एक मोटी महिला, जिसका वजन 211 83 किग्रा था, के बीच हुई थी। शादी के बाद कोनी आइलैंड मे समाचार पत्रो के सवाददाताओ ने उन्हे नाश्ते के अवसर पर एक-दूसरे की मदद करते हुए देखा था।
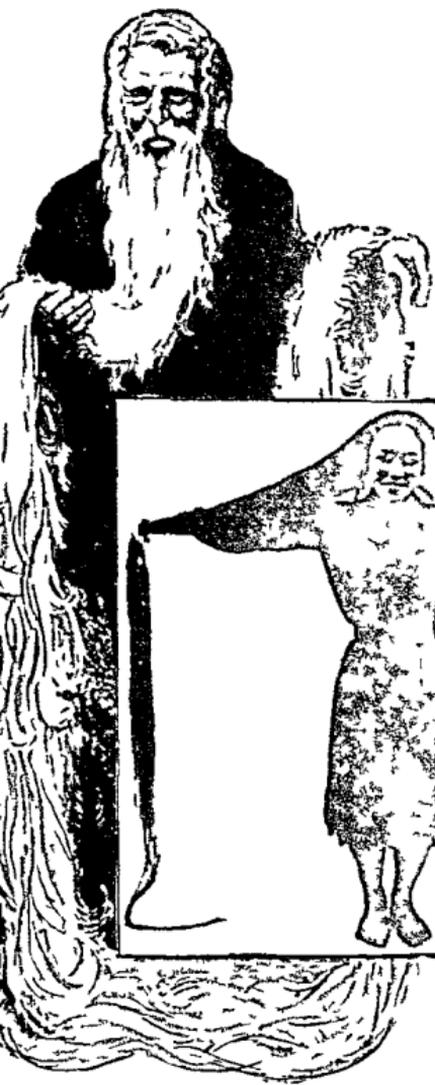
बालो वाले लोग

कुछ लोगो की पूरी की पूरी नस्ल दूसरे व्यक्तियो की अपेक्षा अधिक बाला वाली होती है। आस्ट्रेलिया के प्राचीन निवासी और होक्केदो नामक जापानी द्वीप के आदिवासी आइनू (Ainus) इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

इस प्रकार के कइ लोग हमे प्राय दिखाइ देते हे, जिनके चेहरे ओर गरदन आदि पर इतने वड-बड बाल उग होत हैं कि वह किसी शेर या अच्छी नस्ल के कुत्ते से मिलते-जुलते दिखाई देते हैं। ऐस ही कुछ प्रसिद्ध लागा का विवरण नीचे दिया जा रहा ह।

बारबरा उर्सलर

सौ वर्ष पूर्व ओग्जबग (जर्मनी) मे बारबरा उर्सलर (Barbara Ursler) नामक एक अजीबोगरीब महिला हुई, जिसका सम्पूर्ण चेहरा बडे, घने ओर मोटे बालो से ढका हुआ था। उसके समस्त शरीर पर बाल ही बाल थे। उसकी दाढी, उसकी कमर तक लटकी हुई थी। बारबरा ने एक व्यक्ति से विवाह भी किया था।

कुत्ते की शक्ल का लडका

सन् 1884 म 'बनर्म एण्ड बेली' नामक स[illegible] कम्पनी एक बालो वाला लडका अमरीका लाइ थी। सिर से पर तक लम्बे-लम्बे बालो वाल उस लडक का नाम फदार जेफ्तिचिउ (Fedor Jeftichew) था, जिसे 'कुत्ते के चेहर वाला रूसी लडका' कहा जाता था। फदोर के पिता का शरीर भी बाला स भरा हुआ था। उसक सबध म कहा जाता था कि वह मध्य रूस के जगलो म रहा करता था। एक शिकारी किसी तरह उसकी गुफा तक पहुच गया, जहा उसने उस जानवरनुमा व्यक्ति को देखा वहा बाप आर बेटा दोना छाट-छोटे जगली जानवरो का पत्थर म मारकर अपना पट भरते थे। यह देखकर शिकारी न अपने गाव क कुछ व्यक्तियो का साथ लिया आर गफा का घेरकर उन दाना को पकड लिया।

फेदोर जब न्यूयॉर्क मे लोगा क सामन लाया गया ता वह रूसी फोजी वर्दी पहन हुए था। वह रूसी आर जर्मन भापाए बाल लेता था। अमरीका म उसने थोडी अग्रेजी भी सीख ली थी। जब वह नाराज हा जाता था, तो कुत्ते की तरह भाकता आर चिल्लाता था। इन सब बाता के बावजूद वह एक इसान था।

बर्मा क इस परिवार क तमाम सदस्या क अत्याधिक बाल थ

जूजू कत्ते की शक्ल का लड़का

लॉयनल जो शेर की शक्ल का था

'लॉयनल' शेर की शक्ल का आदमी

लॉयनल (Lional) का असली नाम स्तेफिन वैब्राविस्की था। सन् 1890 म पोलड के बिल्जगोरा नगर म वह पैदा हुआ था। अपने 6 बहन-भाइयो म वह चौथे नम्बर पर था। उसके माता-पिता बिल्कुल सामान्य किस्म क थ लकिन उसक चेहर पर इतने अधिक बाल थ कि वह शेर की तरह दिखता था। उसका सम्पूर्ण चहरा बालो म इस प्रकार ढका हुआ था कि उसकी त्वचा का कोई भाग दिखाई नही देता था। उसक दाढ़ी नही थी और उसकी भाह व पलके बिल्कुल सामान्य थी। केवल उसक सिर पर बालो का एक कबल जैसा था, जिसम बाल बहुत घन और लम्बे थे। उसके कानो और नथनो म इतने अधिक बाल थ कि सेकडो की सख्या मे बाहर निकले दिखाइ देते थ। लायनल क दात केवल दो ही थ, एक ऊपर वाले जबडे मे और एक निचले म।

लॉयलन को यूरोप मे भी कई नुमाइशो मे प्रदर्शित किया गया। सन् 1923 मे वह फिर अमरीका वापस लौट गया। उसका वजन लगभग 70 किग्रा व कद 170 18 सेमी (5 7) था और वह 5 भाषा बडे प्रवाह से बोल लेता था। उसकी आय एक सप्ताह में 500 डालर स कम न थी। लॉयनल आजीवन कुवारा रहा और सन् 1931 म बर्लिन के एक अस्पताल म उसकी मृत्यु हो गई।

सबसे बडी दाढ़ी

लुई गोला (Louis Goulon)

लुई गोला अपने समय का ससार का सबसे लबी दाढ़ी वाला व्यक्ति माना जाता है। उसकी दाढ़ी 251 46 सेमी (8'3") लम्बी थी। वह फ्रास के एक स्थान मोतेकिन का रहने वाला था। गोला ने 12 वर्ष की उम्र मे दाढ़ी बनानी शुरू कर दी थी। उसकी मूछे इतनी तेजी से उग रही थी कि वह उसके काबू से बाहर हो गई। 16 वर्ष की उम्र तक आते-आते उसकी दाढ़ी 30 48 सेमी (1') हो गई थी आर 20 वप की उम्र म यह लम्बाई तिगुनी हो गइ थी।

ऐडम करफेन (Adam Kerffen)

सन् 1870 म शिकागा के ऐडम करफेन ने यूराप का दौरा *किया और अपनी दाढ़ी की नुमाइश की। उस* दौरान उसकी दाढ़ी 289 56 सेमी (9'6") लम्बी थी।

हैन लैंगसेथ (Han Langseth)

वाशिंगटन क स्मथ-सोयनन इस्टीट्यूट मे एक दाढ़ी को सुरक्षित रखा गया ह। यह दाढ़ी हैन लैंगसेथ की ह, जिसने अपने जीवन के अतिम 15 वर्ष अमरीका मे विताए थे। सन् 1927 म उसकी मत्यु हुई आर तब उसकी दाढ़ी की लम्बाइ 532 14 सेमी (17'6) थी।

सबसे बडी मूछ

मसुरियादीन

उत्तर प्रदेश (भारत) के मसुरियादीन को यह सम्मान प्राप्त हे कि उसकी मूछ दुनिया की सबसे वडी मूछ हे। सन् 1962 मे मसुरिया की मूछ 259 08 सेमी (8' 6) लम्बी थी।

सबसे लम्बे केश

पुरुषो न यदि लम्बी दाढ़ी और लम्बी मूछो मे कीर्तिमान स्थापित किए ह तो महिलाए सिर के केशो म अग्रणी रही ह। *सन् 1890 मे इस प्रकार की कई* महिलाओ के नाम सामने आए। उनम से एक का नाम मिस जेन ओवेस (Miss Jane Owens) था, जिसके सिर क बाल 251 46 सेमी (8 3) लम्बे थे।

हैन लैंगसथ जिसकी दाढ़ी की लम्बाई 17 6" थी

सूतरलैंड की सात बहने

यह सात बहन सारा, इजाबेला, नामी, मेरी ग्रेस, डोरा ओर विक्टारिया-लॉक्पाट (न्यूयॉर्क) की रहने वाली थी। साता बहना के बाल जमीन छते थे। सन् 1880 म उन्होने 'वर्नम ऐण्ड वली' नुमाइशी यात्रा की। उनके बालो की

भारत का मसरियादीन

1122 68 समी (36 10") थी। बाला क टॉनिक बनान वाली एक कम्पनी न उनके नाम को अपना ट्रेड मार्क भी बनाया था। उल्लखनीय है कि सात म से कवल दा बहना न विवाह किया था।

26 फुट लबे केश

सन 1949 म भारत का एक व्यक्ति लम्बे बालो क लिए बहत प्रसिद्ध हुआ उसके बाल 792 48 समी (26) लम्बे थ उसका नाम स्वामी पद्र साधी था।

हिराको यामाजाकी जिसके बालो की लम्बाई 2 32 मीटर थी

दाढी वाली औरते

इतिहास म एसी महिलाआ का उल्लख भी आता है, जिनक दाढ़ी थी ओर जिन्हाने लाककला, धर्म, इतिहास और थियटर क क्षेत्र म उल्लेखनीय कार्य किए। इस सदर्भ म सबस उल्लखनीय नाम नीदरलैंड की शासिका मारग्रट आफ पार्मा का है। एक ओर दाढ़ी वाली महिला स्वीडन की चार्ल्स सप्तम् की सेना म थी। जब वह रूसिया की कैद म गई ता रूस क जार क सम्पर्क म आई। जार उस बहुत प्रम करता था।

चिकित्सा-शास्त्र म इस प्रकार क दाष का हिरसूटियम, हाइपरट्राइकासिस (Hirsutium, hypertrichosis) अथवा पालिटाइकासिसि (Polytrichosis) कहत हैं। यह बीमारी वशानुगत ह जा किसी जन्मगत या वशागत कारण स होती है।

मैडम जोजफिन क्लोफुलिया

जन्म 25 माच 1831 का वरमुडक्स स्विट्जरलड म हुआ था। उसक जन्म पर उसक माता-पिता बहुत खुश हुए परतु जब उन्हान अपनी बटी क चहर पर दाढ़ी उगत हुए दखी ता उनकी खुशी जल्दी ही चिन्ता मैं बदल गई।

जब वह लडकी 8 वर्ष की हुई ता उसकी दाढ़ी दो इच लम्बी हा चुकी थी। उसक माता-पिता उस डाक्टरा क पास ल गए, परतु डाक्टर इस आश्चर्यजनक बीमारी का कोइ इलाज न कर सक।

जाजफिन बिना शेव किए ही स्कूल जाती थी। जब वह 14 वष की हुई ता उसकी दाढ़ी 12 7 समी (5") लम्बी हा चुकी थी। इसी दौरान उसकी मा का दहात हा गया ओर उसक पिता का अपन दूसरे बच्चा की देखभाल क लिए जाजफिन की शिक्षा समाप्त करानी पडी।

मैडम जोर्जफिन क्लोफुलिया

कुछ समय पश्चात् स्टेज शो वालों को इस लडकी का पता चला। उन लोगो ने उसके पिता क समक्ष जोजफिन के स्टेज शो करने का प्रस्ताव रखा। पहले तो जोजफिन का पिता इसके लिए तैयार न हुआ, किंतु अत मे सन् 1849 मे 'लाइज' के एक स्टेज शोमैन ने जोजफिन के पिता को काफी बडी रकम का प्रलोभन देकर तैयार कर लिया।

जोजफिन सबसे पहले जेनेवा, स्विट्जरलैंड मे लोगो के सामने आई, बाद मे वह फ्रास के कई नगरो मे भी गई। टर्विस मे जोजफिन की मुलाकात फरचू क्लोफुलिया (Clofullia) नाम के एक नवयुवक से हुई जो प्रसिद्ध पटर था। दोनो एक दूसरे को पसद आए और परस्पर शादी हो गई।

शादी के बाद जोजफिन के पिता उसे पेरिस ले गए। वहा अपनी धम मचाने के बाद जोर्जफिन लदन गई।

26 दिसम्बर 1851 को जोजफिन ने एक लडकी को जन्म दिया। वह लडकी कुल 11 महीने तक जीवित रही, किंतु उसकी मृत्यु के 6 सप्ताह बाद ही वह एक बेटे की मा बनी।

सन् 1853 म उसे 'बर्नम' सर्कस कम्पनी ने अमरीकन म्यूजियम न्यूयॉर्क मे पेश किया। उल्लेखनीय है कि जोजफिन का बेटा अल्बर्ट भी अपनी मा के शारीरिक प्रभावो से मुक्त न रह पाया। एक वर्ष की उम्र हाते-होते उसके चेहरे पर भी एक इच लम्बी दाढ़ी उग आई थी।

ऐनी जोस (Annie Jones)

यह दाढ़ी वाली लडकी स्मथ काउटी, वर्जीनिया (स रा अ) के एक स्थान मीरयान मे 14 जुलाई सन् 1965 को पैदा हुई थी। जन्म के समय चेहरा बालो से भरा हुआ था। 'बर्नम' ने इस लडकी की नुमाइश के लिए 150 डालर प्रति सप्ताह पर अनुबध कर लिया।

जब ऐनी ने सोलहवे साल मे प्रवेश किया तो उसकी दाढ़ी 15 24 सेमी (6) लम्बी थी। इसी बीच उसने शो के एक कर्मचारी रिचर्ड एलेट के साथ गुप्त रूप से विवाह भी कर लिया, जा 15 वर्ष तक सफल रहा। बाद मे उसने विलियम डोनवान से विवाह किया। इस दौरान एनी की ख्याति बहुत अधिक फैल चुकी थी। वह यूरोप के दौरे पर रवाना हो गई जहा उसने बहुत सा धन अर्जित किया।

अपने पति की मत्यु के बाद ऐनी की खुशिया समाप्त हो गई। ऐनी के लिए जीवन साथी के बिना जीवन का सफर जारी रखना कठिन हो गया।

कुछ समय बाद एनी बीमार हो गई। उसे तेज खासी आने लगी थी। पेरिस के एक अस्पताल मे इलाज के

ऐनी जास

फलस्वरूप उसे अस्थायी तौर पर कुछ लाभ पहुचा, लेकिन उसका स्वास्थ्य ज्यादा दिन ठीक न रहा और फिर खासी हो गई। मई 1902 म वह ब्रुक्लिन मे अपनी मा के पास चली गई। मा उसकी हालत देखकर बहुत चिंतित हुई। ऐनी ने अपनी मा से कहा, "मै समाप्त हो रही हू। मुझे अब आशा नही रही कि ज्यादा दिन जीवित रह सकूगी।" और ऐसा ही हुआ। 22 अक्तूबर 1902 को वह सदा-सदा के लिए इस ससार से विदा हो गई। इस समय उसका पार्थिव शरीर ब्रुक्लिन के एवरग्रीन कब्रिस्तान म मीठी नीद सो रहा है।

लेडी ओल्गा

लेडी ओल्गा 1871 मे उत्तरी करोलिना (स रा अ) के एक स्थान विल्मिग्टन (Wilmington) म पैदा हुई थी। उसका पिता जार्ज बानल एक रूसी यहूदी था और उसकी मा इण्डो-आयरिश थी। जब ओल्गा पैदा हुई तो उसके चेहरे पर बाल मौजूद थे। उसकी मा ने जो पढी-लिखी न थी, यह समझा कि लडकी मनहूस है परतु उसका पिता अधिक चिंतित न था। उसने मा से बढकर अपनी बेटी की देखभाल की। इस प्रकार सर्कस और नुमाइशो की दुनिया म एक और दाढ़ी वाली महिला ने पदार्पण किया। लेडी ओल्गा ने रिंगलिंग ब्रदर्स के सर्कस म काम किया। उसकी दाढ़ी 34 29 सेमी (13½") लम्बी थी जो उसकी छाती तक लटकती रहती थी।

दाढ़ी के अतिरिक्त ओल्गा के बडी-बडी मूछ भी थी, लेकिन बालो की इस विलक्षणता के अलावा वह अन्य सभी स्त्रियोचित लक्षणो से युक्त थी।

लेडी ओल्गा को सर्वप्रथम चार वर्ष की उम्र म नुमाइश के लिए पेश किया गया और उसके बाद 65 वर्ष तक वह नुमाइशो और सर्कसो की शोभा बनी रही। इस दौरान वह रिंगलिंग ब्रदर्स, बर्नम ऐण्ड बेली तथा रॉयल अमरिकन शो के साथ सबद्ध रही। सन् 1932 म उसने एक अमेरिकन फिल्म निर्माता टॉड ब्राउनिंग (Tod Browning) की अपने समय की, प्रसिद्ध फिल्म 'फ्रीक्स (Freaks) म एक दाढ़ी वाली महिला का अभिनय भी किया था।

ओल्गा ने अपना दाम्पत्य जीवन सर्कस के ही एक सगीतकार के साथ प्रारम्भ किया। उसके दो बच्चे भी हुए, किंतु उनम से जीवित कोई न बच सका। अत म उसके पति ने भी उसका साथ छोड दिया।

ग्रेस गिल्बर्ट

अपने पति की मृत्यु के बाद ओल्गा उदास हो गई। उसने एक अन्य सर्कस कम्पनी म नौकरी कर ली। वहा उसने सर्कस के ही एक और व्यक्ति से शादी की, परतु यह साथ भी छूट गया। ओल्गा की तीसरी शादी भी असफल रही। इस प्रकार एक वर्ष पश्चात् वह अपने चौथे भावी पति थॉमस बॉयल के अतरग सम्पर्क म आई और दोनो ने 1931 मे विवाह कर लिया।

ग्रेस गिल्बर्ट (Grace Gilbert)

सुनहरी दाढ़ी मूछ वाली यह लडकी सन् 1880 म कल्कास्का, मिशिगन (स रा अ) मे पैदा हुई। वह एक किसान की बेटी थी। जब वह पैदा हुई तो उसका सम्पूर्ण शरीर लाल रंग के बालो मे लिपटा हुआ था। छोटी उम्र म ही उसे नुमाइश म एक ऊनी बच्चे के रूप मे पेश किया गया।

स्टेला मैक ग्रगर

ग्रस की हल्क रग की दाढ़ी 15 24 सेमी (6) लम्बी थी। वह बिल्कुल पुरुपा की भांति सख्त स सख्त कार्य कर सकती थी, परतु वह पुरुप नही थी, क्योकि बालो क अतिरिक्त उसम सभी स्त्रियोचित लक्षण थे। अन्य महिलाआ की तरह ग्रस न भी शादी की थी। उसका पति मिशिगन का एक सफल किसान था। सन् 1925 म ग्रस की मत्यु हुई।

स्टेला मैक् ग्रेगर (Stella Mac-Gregor)

स्टेला मिशिगन म पैदा हुइ थी। उसकी बडी प्यारी-प्यारी भूरी आखे थी और भूरे रग की ही दाढ़ी थी, जो बहुत आकर्पक ढग से तराशी गई थी। उस दो बार शादी की थी। वह एक बहुत ही आकर्पक महिला थी। कर्नल जरी लिप्का की नुमाइशो और सर्कसो मे उसने काम किया था ओर ख्याति अर्जित की थी। वह न केवल नुमाइशो का आकपण बनी, बल्कि उसन अन्य पेश भी किए। सना म काम किया, कालामाजू कालज मिशिगन के अस्पताल मे नर्सिंग का प्रशिक्षण लिया ओर जब इससे भी सताप न हुआ तो मिशिगन विश्वविद्यालय म पढाना प्रारम्भ कर दिया ओर 'मास्टर' डिगरी प्राप्त की। उसन प्रतिभाशाली बच्चा के प्रशिक्षण का विशप अध्ययन भी किया था।

बदसूरत ससार

बदसूरत ससार

सर्वाधिक बदसूरत औरत जूलिया पैस्ट्राना

एक शताब्दी पूर्व जूलिया पेस्ट्राना (Julia Pastrana) का नाम बदसूरती के लिए प्रसिद्ध था। सारे यूरोप मे लोग किसी की बदसूरती को देखकर उसे 'जूलिया पैस्टाना' कहकर छेडते थे।

जब सन् 1850 मे सर्कसो और म्यूजियम आदि मे पहली बार वह अपनी नुमाइश के लिए लोगो के सामन पेश हुई तो लोगो पर भय आर कपकपी छा गई। कुछेक एस भी थे, जिन्होने इसके पूर्व इतना भयानक दृश्य दखा ही नही था।

जूलिया सन् 1832 मे पदा हुई थी। उसका कद कवल 137 16 सेमी (4½') था। उसके चेहरे का अधिकाश भाग और माथा चमकीले काल बालो से ढका हुआ था। उसके बाज ओर वक्षस्थल भी बाला से भरे हुए थे। उसके कान बहुत बडे-बडे थे। उसकी नाक बहुत चौडी ओर नथन बहुत बडे थे। उसके हाठ बहुत माटे ओर बुरी तरह विगडे हुए थे। उसका मुह नीचे से बहुत मोटा ओर भारी था। देखने म वह हू-ब-हू गोरिल्ला जसी लगती थी। उसके दात ऊच-नीचे बडे ही भयानक आकार के थे।

उसके नारी स्वरूप का परिचय-सूत्र एकमात्र वह नाजुक फूल था, जो जूलिया अपने हाथ मे थामा करती थी।

'बेचारी औरत !' दर्शक उसे देखकर उसके बारे मे यही शब्द कहते, परतु यही वह बेचारी ओरत थी, जिसने अमरीकन शोमेन लेट का धनवान बना दिया था।

स्टज पर जूलिया की नुमाइश को ज्यादा दिलचस्प बनान के लिए उसे लोला मोण्टेज (Lola Montez) के स्टाइल मे इस्पानवी नृत्य सिखाया गया, जा उन दिना बहुत ही लोकप्रिय था। वह अपने देश मेक्सिको क गीत भी गाया करती। जब वह नृत्य करती या गीत गाती तो अपनी नजरे दशका से चुरा लेती आर उनक सिरो से ऊपर देखती। उसकी अपनी नजर घुटी-घुटी सी होती। उसक चेहरे पर किसी प्रकार का कोई भाव न हाता।

जूलिया पस्टाना का करीब मे जानन और समझने मे बहुत कम लोग सफल हुए। जो उस जानत हे उनके अनुसार वह गर्मजोश आर अत्यत भावुक स्त्री थी। वह अपन चारो आर क ससार के बार मे बहुत जिज्ञासु थी। उसे पढ़न-लिखने का भी बहुत शौक था।

क्युजरिऑसिटीज आफ नेचुरल हिस्टरी (Curiosities of Natural History) का लेखक फ्रासिस टी बकलेंड (Francis T Buckland) 1857 म जूलिया स मिला और उसके साथ बातचीत की। जब उसकी नुमाइश रीजेण्ट स्टीट लदन मे हा रही थी। बकलेंड ने लिखा, "उसकी आख गहरी काली आर उभरी हुइ थी। उसकी आखो क पपोटे ओर पलक बहुत बडी-बडी थी। उसके सभी लक्षण माथ पर घन बालो और दाढ़ी के कारण अत्यत भयानक हो गए थे, परतु उसका शरीर अत्यत सुडौल आर स्वस्थ था। उसकी मीठी आवाज, सगीत म गहरी दिलचस्पी ओर नृत्य ने उसके व्यक्तित्त्व को सभाल रखा था। वह तीन भाषाए बाल लेती थी।"

जूलिया ने न केवल इग्लेंड बल्कि सारे यूरोप का दौरा किया ओर लागा म अपनी नुमाइश की। वह अपने मनेजर पर निर्भर थी आर उसके लिए अत्यत चाहत का इजहार करती। एक दिन उसके मेनेजर लट (Lent) न उससे शादी की प्राथना की। इ ने कहा, "क्योकि लट उसक कारण कमा रहा है, इसलिए वह उसस र की चिडिया को हमेशा के लिए रखना चाहता है।"

लट को शादी क लिए दुबारा न

सर्वाधिक बदसूरत औरत जूलिया पैस्टाना

की ईर्ष्या उसका कुछ भी नही बिगाड सकी। उसका विवाह जूलिया के साथ हो गया। शादी के दूसरे दिन जूलिया ने कहा था, "वह मुझे केवल मेरी खातिर प्रेम करता है।"

कुछ समय पश्चात् जूलिया गर्भवती हो गई। वह उन दिनों मास्को में अपनी नुमाइश कर रही थी। जब उसने पहले बच्चे को जन्म दिया वह बहुत प्रसन्न थी। जूलिया ने अपने पुत्र को देखने के लिए अधिक

प्रतीक्षा नहीं की। उसे आशा थी कि उसका पुत्र अपने पिता जैसा होगा। परंतु जब उसने अपने पुत्र पर प्रथम नजर डाली तो उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया। उसके पुत्र का शरीर भी बिल्कुल काला था इतना ही नहीं उसके काले शरीर पर अपनी मां की भांति बाल ही बाल उगे हुए थे।

जूलिया यह गम सहन न कर सकी। उसने अंतिम सांस ली और इस संसार से विदा हो गई। प्रकृति उसके साथ अंतिम समय तक अन्याय और निर्दयता से पेश आई। उसका पुत्र उसकी मृत्यु के बाद कुछ घंटों तक जीवित रहा। वह अशुभ वर्ष 1860 था। जूलिया की उम्र उस समय केवल 28 वर्ष थी।

जूलिया और उसके पुत्र की मृत्यु के कारण लेंट को बहुत हानि हुई। यह हानि व्यक्तिगत थी अथवा आर्थिक जैसा उसके विरोधी कहते हैं। परंतु इस घटना के दौरान उसके जेहन में बहुत ही विचित्र विचार उत्पन्न हुआ। वह जानता था कि मास्को में एक प्रोफेसर सोकोलाफ (Sokoloff) लाशों का परिरक्षण करने में दक्ष है। वह लाशों को इस तरीके से मसाला लगाता है कि वह बिल्कुल जीवित प्रतीत होती हैं। लेंट ने प्रोफेसर की सेवाएं प्राप्त कर लीं। सोकोलोफ ने जूलिया और उसके पुत्र की लाशों को अत्यंत दक्षतापूर्ण ढंग से परिरक्षित किया। लेंट ने अपनी स्थगित की हुई यात्रा पुनः प्रारम्भ की।

यद्यपि अब वह नृत्य और गाने के योग्य न थी, परंतु उसका विचित्र बालों वाला चेहरा कांच के केस से अत्यंत प्रभावित करने वाला दिखाई देता। अब उसमें एक विशेषता परिलक्षित होने लगी थी, वह यह कि अब वह अपने कारण नहीं, बल्कि अपने पुत्र के कारण अधिक से अधिक दर्शकों को प्रभावित करने लगी

फरवरी 1863 में बकलैंड ने इस परिरक्षित लाश को देखा तो वह चकित रह गया। उसने अपने विचार लिखे, "वह शरीर आम नुमाइशी वस्त्रों में ढका हुआ था और उसे मेज पर सीधा खड़ा किया गया था। टांगें और बाजू किसी प्रकार भी सिमटे या छोटे नहीं हुए थे। उसके बाजू छाती आदि अपनी असली हालत की ही तरह गोल और अच्छी तरह बने हुए थे। चेहरा मोम (Wax) के बने हुए पोर्टेट की भांति लगता था। परंतु वह मोम का बना हुआ नहीं था। बहुत ही करीबी अध्ययन से पता चला कि उसकी त्वचा बिल्कुल असली थी। बड़े-बड़े बिगड़े हुए होंठ और चौड़ी नाक हू-ब-हू वैसे ही थे। उसकी दाढ़ी और घने बाल पहले जैसे ही चमक रहे थे।

इंसानी विचित्रता में दिलचस्पी रखने वाले लोग हमेशा इस बात पर सोचते रहे कि जूलिया पेस्टाना का आखिर भाग्य क्या था? क्या उसे कभी भी किसी कब्रिस्तान में दफन किया गया ताकि उसे शांति और आराम मिल सके?

जेनोरा

जूलिया की मृत्यु के 20 वर्ष बाद 1889 में म्यूनिख (पश्चिम जर्मनी) में एक नुमाइश हुई जिसमें एक और पेस्टाना जैसी महिला पेश हुई। उसका नाम मिस जेनोरा (Zenora) था और उसे जूलिया की बहन कहा जाता था हालांकि वह जूलिया की बहन नहीं थी।

जेनोरा के घनी दाढ़ी थी और उसका सारा शरीर बालों के गुच्छों से ढका हुआ था केवल उसकी छातियां के। उसका चेहरा बहुत रूपवान था। उन दिनों वह 20 22 वर्ष की थी। जूलिया की भांति वह नृत्य करना जानती थी। वह अपने कार्य में बहुत दिलचस्पी पैदा करती। संगीत का उसे अच्छा ज्ञान था और विदेशी भाषाएं भी वह जानती थी।

वास्तव में जेनोरा का असली नाम मारिया बारटोल्स और उसके पिता का नाम फ्रान्सिस था। उसकी एक पारम्परिक कहानी के अनुसार मारिया की मां गर्भ के दौरान एक बहुत बड़े कुत्ते से डर गई थी और इस भय का प्रभाव उसकी पुत्री पर हुआ। मारिया का पिता इसे जर्मनी में बड़े स्तर पर पेश करता। एक दिन जब उसकी उम्र 18 वर्ष की थी वह अपने बाग में टहल रही थी कि सहसा टॉफियां और मीठी गोलियों का पैकेट उसके ऊपर आ गिरा। उसने दीवार की दूसरी ओर झांका जहां से यह पैकेट आया था। वहां उसे एक व्यक्ति खड़ा हुआ मिला। उस व्यक्ति ने मधुर आवाज में कहा कि मेरा नाम लेंट है और मैं चाहता हूं कि तुम मेरे साथ विश्व यात्रा पर चलो। बाद में लेंट बारटोल्स से भी मिला और उससे शादी करने की अनुमति चाही यह प्रोग्राम बिल्कुल नहीं है जाए। मारिया के माता खुश हुए और इस प्रकार शादी के बाद लेंट ने उसे

और उसे दाढ़ी बढ़ाने के लिए कहा। कुछ समय पश्चात वह उसे अपने साथ सफर पर ले गया। लैंट ने उसका नाम बदलकर जनारा पस्टाना रख दिया ताकि जूलिया की प्रसिद्धि से लाभ उठाते हुए मारिया को नुमाइश के लिए पेश किया जा सके।

सबसे पहले यह दंपति इंग्लैंड और फ्रांस गया। वहां उसने अपनी दाढ़ी वाली पत्नी की नुमाइश की। लैंट ने अपनी पत्नी को घुड़सवारी भी सिखाई।

दोनों पति-पत्नी ने अपनी यात्रा जारी रखी और काफी धन समेटा। रूस में लैंट ने एक म्यूजियम का प्रबंध किया।

बाद में वह अजीबोगरीब व्यवहार करने लगा। एक दिन वह सेंट पीटर्सबर्ग में एक पुल पर से गुजर रहा था कि सहसा उसने रुपये निकाल कर फाड़ने शुरू कर दिए और फेंकने लगा। उसने कई और पागलपन की हरकतें कीं। उसकी मृत्यु 1884 में दिमागी बीमारी के कारण हो गई।

मारिया अब काफी धनवान हो चुकी थी। मारिया के पिता ने उसे कहा कि वह घर वापस लौट आए, परंतु अपने पिता के दुर्व्यवहार के कारण उसके साथ दुबारा रहना उसके लिए असहनीय हो चुका था, इसलिए वह ड्रेस्डन (Dresdon) में रहने लगी। 46 वर्ष की उम्र में उसने एक 20 वर्षीय नवयुवक से शादी की, जो उसका मैनेजर भी था।

सन् 1900 का वह अभागा वर्ष आ ही गया कि जब मारिया इस संसार से सदा-सदा के लिए चली गई।

खच्चर जैसी शक्ल की औरत ग्रेस मक्डेनियल

ग्रस मक्डनियल (Grace McDaniel) एक खच्चर जसी शक्ल की औरत थी। जर्री हाल्ट मन (Jerry Holt Man) की पुस्तक 'फ्रीक शा मैन' (Freak Show Man) में हैरी लास्टन न ग्रस क स्टज पर आने का एलान किस प्रकार किया जाता था इस सदभ म स्मृति की तस्वीर अतीव रोचक शैली म प्रस्तुत की थी। उसका नमूना इस प्रकार है –

"एक मिनट म मैं ग्रेस को कहने वाला ह कि वह अपने चेहर स नकाब उतार द ताकि आप दख सक कि वह आपको कैसी लगती है। आप इस अधिक दर दखना नही चाहेंगे। इसके अतिरिक्त आप यह सोचना पसद करेंगे कि हम कितन भाग्यवान हैं जो इसकी तरह नहीं, आप सुदर हैं या कवल सरल आप आकर्षक हैं या साधारण। आप अपन भाग्यशील सितारों का शुक्रिया अदा करेंगे कि आप खच्चर जैसी शक्ल की औरत ग्रेस मक डेनियल नहीं।

"जैसे ही ग्रस अपन चेहरे स नकाब उलटती है तो दर्शकों म आह आ आ ! का शोर उठता है क्योंकि वह एक ऐसा भयानक दृश्य होता था जिस देखकर रोंगटे खड होना स्वाभाविक बात हो जाती थी। सही और पूर्णतया रूप म पेश करना तो असम्भव ही ह, मैं कवल कोशिश कर सकता ह। उसका चेहरा लाल सडल मास की भाँति और उसकी ठोडी की शक्ल बुरी तरह बिगडी हुई थी। वह बडी कठिनाई स अपने जबडो को हिला सकती थी, उसके दात ऊच-नीच और नकील, उसकी नाक लम्बी और टेढ़ी-मेढ़ी सी थी। वह भाग जो सबसे ज्यादा उसको खच्चर का रूप दता था, उसक होठ थे। सक्षेप म वह एक ऐसा चेहरा था, जिसे देखकर लोग भय से कापने लगते थे।"

लास्टन के अनुसार कई दशक जिनम पुरुष भी शामिल थे, उसे देखते ही हतप्रभ हो जाते। स्लिम कली (Slim Kelly) ने कहा, "मैंने आज तक इतनी भयानक औरत कहीं नहीं देखी।" परतु ग्रस अपनी भयानक शक्ल क बावजूद भी जिस व्यक्ति स मिली, उस अपन शिष्टाचार और मनोहर व्यक्तित्व से प्रभावित ही किया।

ग्रस मक्डनियल जो खच्चर जैसी शक्ल की औरत थी

एडवर्ड मलोन ने ग्रस के सदर्भ में लिखा है आज तक मैं जितनी दिलचस्प चित्ताकर्षक और शिष्ट महिलाओ स मिला ग्रस उनम से एक ह। वह कई पुरुषों के लिए आकर्षक थी। आप विश्वास कर या न कर उस शादी की कई प्रार्थनाए मिली।'

ग्रस ने आखिर शादी की एक प्रार्थना स्वीकार ही कर ली। वह एक नवयुवक था। शादी के कुछ समय पश्चात ग्रेस को पुत्र रत्न लाभ प्राप्त हुआ। सच! इतना खुश हुआ था ग्रेस का नारी-हृदय पुत्र को पाकर कि मानो उस अपने जीवित होने का संपूर्ण सुफल प्राप्त हो गया हो। उसका पुत्र जब बडा हुआ तो उसने बडी ही कुशलता के साथ अपनी मा की नुमाइश का प्रबंध अपने हाथों म सभाल लिया

बदरनुमा सिर वाला व्यक्ति जिप

बर्नम म्यूजियम के एक विज्ञापन मे जिप का चित्रण इस प्रकार किया गया है—"वह एक जगल की पृष्ठ भूमि मे खडा है—खुरदुरी दृष्टि, जिसका चेहरा मनुष्य के बजाए बदर से ज्यादा मिलता है। उसके हाथ, उगलिया और नाखून बहुत अधिक बढे हुए हैं। उसका शरीर बालो से ढका हुआ है। वह अकथनीय है और एक नयी जाति का प्रतीत होता है।"

हेण्डबिल म लिखा है—"उसे शिकारियो की एक पार्टी ने पकडा, जो एक गोरिल्ले की तलाश मे गम्बिया नदी के किनार जगल मे घूम रहे थे। वे सख्या म 6 थे। ऐसे लोग इन शिकारियो ने पहल कभी नही देख थे। वे सब पूर्णतया नगी हालत मे थे और बदरो तथा बनमानुष स मिलते-जुलते अदाज मे वृक्षो की टहनिया पकडकर उछल कूद रहे थ। बडी कोशिशो के बाद शिकारी उनमे स तीन का कब्जे म लने मे सफल हो सके। उनमे से एक व्यक्ति वर्तमान है, शेष दोनो की मृत्यु हो गई। जब वह पहली बार यहा आया तो वह अपनी प्राकृतिक हालत यानी चारा हाथो पाव पर चलता था। प्रारम्भ मे वह कच्चा मास, स्वादिष्ट सेब, सतर और सूखे फल खाता था और रोटी को हाथ नही लगाता था।"

वस्तुत जिप अमरीकन हब्शी था। उसका सिर शक्वाकार था। वह सिर के बाल प्रतिदिन उस्तर से साफ करता था, जिससे उसका शक्वाकार सिर और भी ज्यादा स्पष्ट हो जाता था।

एक ऐसा व्यक्ति जिसका सिर और माथा जिप की भाति छोटा हो, उसे मेडिकल भाषा मे 'माइक्रोसफस' (Microcephaus) कहते हैं, आम भाषा म उस पिन हेड (Pin head) या सुई जेसा सिर कहा जाता है। खोपडी की ऐसी आकृति कमजोर मस्तिष्क से सबंधित होती है, परतु जिप की बुद्धि से यह सिद्ध नही होना,

जिप जिसकी शक्ल बदर जैसी थी

हाथीनुमा इसान

'हाथीनुमा इसान' नाम था उसका मेरिक (Merrick)। उसने बहुत ही छोटा जीवन पाया था। वह अपने 27 वर्षीय जीवन मे उन लोगो के लिए भय का कारण बना, जिन्होने उसे देखा। उसके सारे शरीर पर त्वचा के नीचे और हड्डियो मे स्नायु-तत्र के चारो ओर असख्य ग्रथियाँ थी। उसका शरीर इतना विचित्र और भद्दा था कि वह गलियो मे अपने आपको दिखाने का साहस नही कर सकता था। जब वह बाहर निकलता तो अपना चेहरा एक बहुत बड़े हेट मे छुपा लेता और अपने शरीर के चारो ओर कम्बल लपेट लेता।

मेरिक की बीमारी आनुवशिक (Genetic) जैसे परिवर्तन के कारण थी। उसका इलाज करना असम्भव था। खानाबदोश सर्कस वाले उसे लेकर जगह-जगह घूमते रहे और उसकी नुमाइश करते रहे। 1884 मे मेरिक का अभागा सितारा चमका। उसकी सर फ्रेडरिक ट्रवेस (Sir Frederick Treves) से जान पहचान हो गई। फ्रेडरिक ट्रवेस बहुत योग्य और प्रसिद्ध सर्जन और शाही परिवार का डॉक्टर था। यह डॉक्टर मेरिक का सरक्षक बन गया। इस प्रकार मेरिक के जीवन के अतिम 5 वर्ष अत्यत खुशी के वातावरण मे व्यतीत हुए। मेरिक की मृत्यु के पश्चात फ्रेडरिक ट्रवेस ने अपनी पुस्तक The Elephant Man and Other Reminiscences मे उसके जीवन से सबधित अतिरोचक वर्णन किया है।

माइल ऐण्ड रोड पर लदन अस्पताल के सामने छोटी-छोटी दूकानो की एक पक्ति थी। उनमे एक दूकान पर कैनवस का पर्दा लटका हुआ था जिस पर हाथीनुमा इसान की नुमाइश के सम्बन्ध मे एलान लिखा हुआ था। पर्दे पर उस व्यक्ति का चित्र पेंट किया गया था। उस चित्र से यह अनुभव होता था कि वह एक ऐसा भयानक जीव था, जिसे केवल स्वप्न मे ही देखना सम्भव था, परन्तु उस जीव मे दरिन्दगी के बावजूद इसानी रग स्पष्ट था। इस ऐलान मे उसके सौदर्य से सहानुभूति तक मनुष्य की विचित्रता कहीं नहीं मिलती थी, परतु इस व्यक्ति को गदे और घटिया शब्दो से जानवर के रूप मे पेश किया गया था। चित्र की पृष्ठभूमि मे बहुत बड़े-बड़े झाड़ीदार पेड़ थे, जिससे जहन मे जगल का विचार लाना और यह बताने का उद्देश्य था कि इस दरिन्दानुमा इसान का वास्तविक स्थान और मजिल जगल था।

मेरिक हाथीनुमा इसान

जब मुझे इस नुमाइश के सम्बंध में पता चला तो वह नुमाइश समाप्त हो चुकी थी। परंतु एक मलाजिम लड़के के द्वारा कुछ अधिक दिन पर मैं इस हाथीनमा इसान को देख सका। दुकान खाली थी परंतु धूल और मिट्टी से अटी हुई। प्रकाश बिल्कुल धीमा और धुंधला था। दुकान के अंतिम सिरे पर एक लाल रंग का पर्दा लटका हुआ था। कमरा बहुत ठंडा और सीलन युक्त था। उन दिनों नवम्बर का महीना था और वर्ष 1884 का था।

शोमैन ने जैसे ही पर्दा उठाया, दिखाई पड़ा कि एक स्टूल पर गर्म कम्बल ओढ़े हुए और झुकी कमर के साथ सरिक बैठा हुआ है। जब पर्दा उठाया गया, मैं बिल्कुल अपने स्थान से नहीं हिला। एक खाली दुकान में धीमे और धुंधले प्रकाश की छाया में झुकी हुई यह प्रतिमा एकांत और अकेलेपन का उदाहरण थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह दरिंदों से डर कर एक अंधेरी गुफा में छुपा हुआ है। दुकान के बाहर सूर्य चमक रहा था और उसकी किरण प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता मित्रता और संताप का संदेश दे रही थी।

शोमैन बिजली की तरह कड़का, ' खड़े हो जाओ।' और वह एकाकी झुकी हुई प्रतिमा धीरे-धीरे खड़ी हो गई, कम्बल को अपने सिर और कमर से अलग करते हुए। उस क्षण मेरे सामने मानवता का सर्वाधिक भयानक नमूना खड़ा था। मैंने डॉक्टर बनने के पश्चात् अस्पताल में सैकड़ों डरावने चेहरे देखे, परंतु कभी भी ऐसी भयानक शक्ल नहीं देखी थी।

वह कमर तक नंगा था और उसके पांव भी नंगे थे। उसने धागों का बुना हुआ पाजामा पहन रखा था, जो शायद किसी मोटे आदमी का ड्रेस सूट रह चुका था।

उसका बदसूरत सिर

गली में लगी हुई पेंटिंग से मुझे यह विचार आया था कि वह हाथीनुमा इसान काफी भारी-भरकम शरीर का होगा, परंतु वह सामान्य कद का व्यक्ति था, जो झुकी हुई कमर के कारण और छोटा दिखाई दे रहा था। उसके शरीर में सबसे आश्चर्यजनक बात उसके बहुत बड़े और अजीब तरह के बिगड़े सिर से सम्बन्धित थी। उसके माथे पर हड्डी जैसा उभार और सिर के पीछे कोमल त्वचा लटकी हुई थी, जिसकी सतह गोभी के फूल जैसी थी। उसकी खोपड़ी की चोटी पर कुछ लम्बे-लम्बे ढील बाल उगे हुए थे। माथे पर हड्डी के उठने से उसकी एक आंख लगभग छुप चुकी थी। उसके सिर की गोलाई एक नवयुवक की कमर से किसी प्रकार कम न थी। ऊपर के जबड़े से एक और हड्डी उसके मुंह से बाहर निकली हुई थी, जिसने ऊपर के होंठ को बाहर की ओर मोड़ रखा था, जिससे उसका मुंह एक छेद में परिवर्तित हो गया था। पोस्टर में जबड़े की उस बाहर निकली हुई हड्डी को सूंड की तरह दिखाया गया था। नाक केवल निशान तक सीमित थी। चेहरे पर किसी प्रकार के भाव नहीं थे। उसकी कमर अत्यंत भयानक थी। उस पर थैलानुमा मांस उभरा हुआ था, जिसने उसकी सारी कमर को घेर रखा था।

हाथ की बजाए पंख

दायां हाथ काफी बड़ा, शक्ल और बनावट से वंचित था। त्वचा पर गोभी के फूल जैसे उभार स्पष्ट थे। हाथ के पीछे और हथेली में कोई अंतर नहीं था। अंगूठा मूली जैसा और उंगलियां मोटी जड़ों की भांति थीं। उसका एक हाथ बेकार था। दूसरा हाथ अजीबोगरीब विशेषताओं से परिपूर्ण था। यह केवल सामान्य और समानुपाती, बल्कि उस पर बहुत अच्छी त्वचा चढ़ी हुई थी, जिसे देखकर महिलाएं भी रश्क करतीं। टांगें बिगड़े हुए बाजू जैसी थीं। इन सारी कठिनाइयों और दुखों में एक और वृद्धि उसके लंगड़ेपन की थी। बचपन में उसकी पीठ के जोड़ पर बीमारी का आक्रमण हुआ था, जिससे वह सदा के लिए लंगड़ा हो गया था। अतः वह केवल छड़ी की सहायता से चल सकता था। उसकी त्वचा पर फफूंदी (Fungus) जैसी झिल्ली उभर आई थी। शोमैन से उसके बारे में मुझे केवल इतना पता चला कि वह ब्रिटेन का निवासी है और उसका नाम जान मेरिक है, उसकी उम्र 21 वर्ष है।

जब मैंने इस हाथीनुमा इसान को देखा, उन दिनों मैं लंदन के अस्पताल मेडिकल कालेज में एनाटॉमी का प्राध्यापक था। मैं चाहता था कि उसके शरीर का अच्छी तरह निरीक्षण किया जाए, इसलिए मैंने शोमैन के द्वारा कालेज में अपने कमरे में उसका निरीक्षण करने का प्रबंध किया। भीड़ से बचने के लिए एक बहुत बड़ा काला कम्बल हासिल किया गया, जिसे उसके चारों ओर लपेटा गया। सड़क को पार करने के लिए मैंने एक मोटर का प्रबंध किया और

कालेज म दाखिल के लिए उसे अपना कार्ड दे दिया। मने उसका अच्छी तरह निरीक्षण किया। बाद म वह अपनी नमाइश के स्थान पर वापस चला गया और मेरे विचार से मुझे उसके सम्बन्ध मे सभी जानकारी हो गई थी। मरिक अत्यत योग्य और भावुक व्यक्ति था। सबसे ज्यादा दुखद थी उसकी रोमानी कल्पनाए। यह इस हाथीनमा इसान की सक्षिप्त कहानी थी।

अगले दिन मझे खबर मिली कि पुलिस ने उन्हे नमाइश करने स मना कर दिया है। अत उन्हे दकान खाली करनी पडी।

दो वर्ष बाद बहुत ही नाटकीय स्थिति म मेरी उससे दबारा भेंट हुई। इग्लेण्ड मे शामैन और मेरिक का जगह-जगह से पुलिस ने भगाया, जो इस नमाइश को निम्न स्तरीय और घणापण समझते थे। सरकार ने एक आर्डर जारी किया कि मरिक की नुमाइश तुरत बद होनी चाहिए।

मेरिक का दुर्भाग्य

शामैन निराश होकर दरबदर की ठोकर खाता रहा। अत मे वह ब्रुसिल्ज पहुचा। यहा आकर उसे पन निराशा का सामना करना पडा। यहा भी उसकी नुमाइश पर प्रतिबध लग गया, क्योंकि यह नुमाइश मानवता पर एक दाग थी। इसलिए उसे बेल्जियम की सीमा मे नुमाइश की अनुमति नही मिली। शामैन के लिए मरिक किसी कीमत का न रहा, बल्कि वह उसके लिए बोझ बन गया। अब वह मेरिक से जान छुडाना चाहता था। मरिक मे कुछ कहने का साहस न था इसलिए शामैन ने उसे लदन जाने का एक टिकट दिया और गाडी म सवार करा दिया।

वह लदन पहुच तो गया परत वह यहा करता क्या? समस्त ससार मे उसका एक मित्र भी न था। वह निवास स्थान कहा खोजता और कौन तयार होता उसे थोडी सी जगह देने के लिए। इतने बडे जीवन म उसने एक ही कामना की थी कि वह कही छुप जाए, छुपा रहे। उसे सर्वाधिक भय खुली गली से होता, जहा हजारो नजरे उसका पीछा करती और यह नजरे जमीन की गहराइया तक भी उसका पीछा करतीं। उसकी कठिनाइयो का अत कही न था—कवल वद्धि ही वृद्धि थी।

लिवरपूल स्ट्रीट म वह एक भीड के काबू आ गया। पुलिस के सिपाहियो ने उसे बचाया और एक तीसरे दर्जे के वेटिग रूम मे ले गए। यहा वह एक अधकारमय कोने मे ढेर हो गया। पुलिस इस बात से परेशान थी—वह इसका क्या करे? उन्हे बडे-बडे गदे और घृणित आवारा कुत्तो का तो सामना करना पडा होगा, परतु ऐसे व्यक्ति स कभी न मिले होगे। वह इतना बेबस था कि अपनी इच्छा भी न बता सकता था। उसकी आवाज बहुत धीमी थी, परतु उसके पास एक चीज थी, जिससे उसके लिए आशा की किरण उत्पन्न हुई—वह था मेरा कार्ड।

उस कार्ड ने सारी समस्या सुलझा दी। एक व्यक्ति को लदन अस्पताल भेजा गया। सौभाग्य स मैं उस समय वहा मौजूद था। तुरत ही म रेलवे स्टेशन पहुचा। वेटिग रूम मे मरिक तक पहुचाने के लिए पुलिस ने बडी मुश्किल से भीड को हटाया। वह फर्श पर एक कोने म बिल्कुल किसी ढेर की भाँति पडा हुआ था। जब उसने मुझे देखा तो वह धीरे से मस्कुराया। पुलिस ने उसे मोटर तक ले जाने म मेरी सहायता की। मैं तुरत ही उसे अस्पताल ले आया। मोटर मे बठते ही उसकी घबराहट दूर हो गई और सफर के अत तक वह सोता रहा।

मेरिक अस्पताल मे

अस्पताल म उसे एक बेड के वार्ड म रखा गया, जो आपातिक स्थिति मे इस्तेमाल आता, जब किसी सन्निपात के रोगी को दाखिल किया जाता, जिसे अचानक पागलपन का दौरा पडा हो। यहा इस दुखी इसान को आराम और भोजन मिला। मैं ऐसे केस को अस्पताल म दाखिल करके अस्पताल के नियम तोड रहा था। यहा केवल वही रोगी अस्पताल म दाखिल किए जाते है, जो इलाज के योग्य हो। इसलिए मैंने मेरिक के केस को मानवता के आधार पर कमेटी के चयरमैन मिस्टर कारगाम के सामने पेश किया। जिन्होने न केवल मेरे इस कार्य की सराहना की, बल्कि 'The Times' को एक पत्र भी लिखा। उस पत्र म इस अनाथ, मुसीबतजदा का उल्लेख था और उसकी माली सहायता के लिए लोगो स अपील की गई थी। अग्रेज लोग इस सम्बन्ध मे काफी उदार सिद्ध हुए है। कुछ ही दिनो म काफी रुपए एकत्र हो गए। अत मेरिक अस्पताल पर किसी प्रकार का बोझ न बना। उसको अस्पताल की सबसे निचली मजिल मे एक कमरा दिया गया। जिसके साथ स्नानगृह भी था। मेरिक दिन मे एक बार अवश्य स्नान करता, जिससे

उसकी त्वचा मे दुर्गंध काफी हद तक दूर हो जाती।

मेरिक ने ऐसे जीवन के बारे मे कभी स्वप्न मे भी नही सोचा होगा। उसे यह बात हमेशा असम्भव नजर आती कि उसका कोई घर होगा और वह वहा पर सुरक्षित जीवन व्यतीत करेगा। परतु मेरिक के अच्छे दिनों का प्रारम्भ हो चुका था। मैं उसे प्रतिदिन देखने जाता और हर रविवार को उसके साथ दो घटे गुजारता।

जैसा कि मैं पहले बता चुका हू कि मुझे वह अत्यत प्रतिभावान दिखाई दिया था। उसने पढना सीखा। वह बाइबिल और दुआ की पुस्तक को बडी दिलचस्पी से पढ़ता, परतु अधिकाश समय वह समाचार पत्र पढने मे लगाता। उसने कई कहानिया पढी, परतु उसके जीवन का अरूद और सतोष रोमास की कहानियो म ज्यादा उजागर होता। इन कहानिया म उसे वास्तविकता झलकती। ससार के सम्बन्ध मे उसका दृष्टिकोण एक बच्चे जैसा था। वह एक प्राचीन और बुनियादी व्यक्ति था। जिसके जीवन के 23 वष एकात और उदासी की अधेरी गुफा मे व्यतीत हुए थे।

मेरिक की मा

उसे शुरू के जीवन की बहुत कम जानकारी थी। अपने पिछले जीवन के बारे मे बात करते समय उसको अत्यत दुख होता। वह लीसेस्टर (Leicester) मे पैदा हुआ। अपने पिता के बारे मे वह कुछ भी नही जानता था। मा की उसे धुधली सी याद थी। सम्भव है उसकी मा बहुत प्यारी हो, जिसने उसे बहुत ही कमीनगी से दुतकार दिया होगा, क्योकि उसकी बचपन की यादे एक बुरी जगह से सम्बन्धित थी, जहा उससे दिन-रात काम लिया जाता था, परतु उसकी मा चाहे कैसी ही पत्थर दिल हो, वह उसके बारे म बडे गर्व और आदर से बात करता था। वह कहता—"यह वास्तव मे अजीब बात है कि मा इतनी सुदर थी।"

वह केवल अधेरे में बाहर जाता

मेरिक के मन से यह परेशानी दूर करने मे मुझे अधिक समय नही लगा। में चाहता था कि वह लोगो से घुल मिले और अपने आपको भी इन जैसा इसान और मानवता का एक सदस्य समझे। धीरे-धीरे उसका भय, छुपने की इच्छा कम होती गई। उसने यह भी महसूस किया कि यह लोग केवल मित्रता की नजरो से देखते है। वह रात्रि को बाहर सैर के लिए निकलता। उसका सबसे बडा कारनामा यह था कि एक रात वह अकेला अस्पताल के बाग तक गया और वापस आया। मेरिक के मस्तिष्क का सामान्य बनाने के लिए आवश्यक था कि वह स्त्री और पुरुषो से मेल-जोल बढ़ाए, जो उसे एक सामान्य और योग्य व्यक्ति की हैसियत देकर मिले और उसे कोई जगली जानवर जैसा इसान न समझे। मेरे विचार मे इस परिवर्तन के लिए स्त्रिया ज्यादा उचित थी, परतु स्त्रिया उससे बहुत भयभीत थी। मेरिक स्त्रियो की हमेशा प्रशसा करता। यह उसका निजी अनुभव न था, बल्कि किस्से-कहानिया पढने से उसके मन मे स्त्रियो के प्रति प्रेम जाग्रत हो चुका था। इनमें उसकी सुदर मा की भी कल्पना थी।

उसकी नर्स

अस्पताल म उसके प्रवेश के समय एक अत्यत अफसोसनाक घटना घटी। उसे एक बिस्तर के अलग वार्ड म जगह दी गई थी और एक नर्स को उसके लिए भोजन आदि पहुचाने के लिए हिदायत की गई थी। दुर्भाग्य से मेरिक के विचित्र शरीर के सम्बन्ध म उसे बताया न गया था। जैसे ही वह कमरे म दाखिल हुई, उसने देखा कि बिस्तर पर एक अत्यत बदसूरत शरीर का इसान लेटा हुआ है। जिसके शरीर की त्वचा गोभी के फल की भाति उभरी-उभरी थी। उसके हाथ म भोजन की ट्रे एकदम गिर पडी और वह चीख मारकर वहा से भाग खडी हुई। मेरिक काफी कमजोर हालत मे था। शायद उसने इस बात पर ध्यान नही दिया, परतु ऐसी घटनाए उसके लिए नयी न थीं। बाद म उसकी देखभाल के लिए कई नर्से मौजूद रहती। मेरिक यह बात अच्छी तरह समझता था कि वे वही कुछ करती है, जैसा उन्हे करने के लिए प्रबधक आज्ञा देते है। वास्तविकता यह थी कि वे उसे इसान ही नही समझती थी और यही एहसास उसके दुख का कारण था। यह महसूस करते हुए मैने अपनी एक मित्र को जो एक जवान सुदर विधवा थी को इस बात के लिए राजी किया कि वह मेरिक के कमरे म मुस्कराते हुए जाया करे, उससे बिना झिझक हाथ मिलाया करे और उससे बात किया करे। उसने यह कहा कि वह यह कार्य अच्छी तरह कर सकेगी।

एक दिन जैसे ही मेरिक ने हाथ [illegible]
हाथ छोडा, तो वह [illegible]

लगा। अत म मेरिक न मभ्फ बनाया कि आज तक किसी महिला ने मर साथ एसा प्रमपण व्यवहार नही किया आर न ही कोई महिला मरी आर देखकर मुस्कुराई है। इस दिन क बाद मरिक के जीवन म विशेष परिवतन शुरू हा गया।

बडे लोगो से भेट

समाचार पत्रा म मरिक व केस का बहत अधिक महत्त्व दिया जान लगा। इसलिए उसम मिलन वालो म नित्य वद्धि हान लगी। वह उच्चवग की प्रतिष्ठित महिलाआ स बात करता। व उसक लिए उपहार लाती आर उसक कमर का चित्रा आर सजावट की वस्तुआ स मनारम बना देती। सर्वाधिक खशी ता उस पस्तको स मिलती थी जा उसके लिए वे लाती थी। अब मरिक का अधिकाश समय पढन म गजरता था।

उसका सामाजिक जीवन असाधारण था। एक बार महारानी एलक्जण्डर आर फिर प्रिस आफ वल्ज उसे विशेषरूप से मिलने के लिए अस्पताल आए। जब महारानी न मुस्करात हुए कमरे का दरवाजा खोला आर बढत हुए उसस हाथ मिलाया, ता मरिक खुशी आर भावकता म डूब गया। महारानी न कइ लागा को खुश किया होगा परत जो खशी उसन मेरिक को दी उसका कोई अनुमान नही लगाया जा सकता।

हसने या गाने से वचित

म कह सकता हू कि अब मरिक ससार का सतुष्ट व्यक्ति था। उसन कइ बार मुझस कहा, "म नित्य हर क्षण खुश रहता हू।"

मेरिक की उम्र के लाग अपनी खुशी ओर शाति का प्रदर्शन अक्सर म गाना गाकर या सीटी बजात हुए करत, परतु दुर्भाग्य स मेरिक का मह एसा बिगडा हुआ था कि वह गा नही सकता था। अपनी खशी का इजहार वह तकिए का हाथा मे बजात हुए करता। एक आर चीज जिसन मुझ कइ बार चौका दिया वह यह कि वह हसन क योग्य न था खशी चाह किसी प्रकार की होती उसका चहरा भावहीन हाता। वह रो तो लता था परत हसना उसके भाग्य मे न था।

महारानी कइ बार उस मिलन क लिए आइ आर कइ बार अपने हाथ म लिख कर क्रिसमस काड भज। एक बार उसने अपना चित्र जिस पर उसक हस्ताक्षर थे भजा। मरिक खशी क कारण काब स बाहर था। इतना ही नही मझ भी चित्र का बडी मुश्किल स हाथ लगाने दिया। मैन उसस कहा कि उस महारानी का शुक्रिया अदा करन क लिए पत्र लिखना चाहिए। अत उसने पत्र लिखा। उसन पत्र की शुरुआत--'मेरी प्यारी राजकमारी' आर समाप्ति 'आपका हमशा सद्भावक' के शब्दो स की।

महारानी के इस नेक काय को देखत हुए प्रतिष्ठित महिलाओ न भी अपने चित्र मरिक को भेज। वही मेरिक जिस उम्र भर दतकारा आर घणित समभा गया था, अब उसकी मेज असख्य सुदर महिलाआ क चित्रो से भरी पडी थी।

मेरिक का शरीर बुरी तरह बिगडा हुआ था। इसलिए न तो वह हट पहन सकता आर न ही कॉलर या टाइ लगा सकता था। एक महिला न उस अगूठी आर एक नाबल लाड ने बडी सुदर घडी दी परतु यह सब चीज उसक इस्तेमाल मे नही आ सकती थी। इसी प्रकार वह उत्तम टथ ब्रुश व कघ आदि को भी इस्तमाल करने के योग्य न था। हा! एक बच्चे की तरह उन्ह दखकर खुश अवश्य हो जाता था।

उसके जीवन के सबसे अच्छे दिन

मेरिक की प्रबल इच्छा थी सारे दश दखन की, हरियाली म चलने-फिरन की आर वहा भाति-भाति के फूलो आर पत्तो को दखने-सूघन की। उसकी यह भी इच्छा थी कि आजाद दुनिया मे पशु-पक्षियो क रहन-सहन को दखे। क्योंकि वह आज तक कभी भी मदानो आर हरे-भरे खतो फूलो आर सरसब्ज फसलो के बीच से नही गुजरा था। उसन कभी भी अपन हाथो स महान फूलो का गुलदस्ता तक नही बनाया था। ग्राम्य-जीवन क सदर्भ मे किताबो म उसन पढ तो बहुत कुछ रखा था, लेकिन आखो मे देखा कुछ भी न था। अब वह उस महान फलो के देश को अपनी आखो से देखना चाहता था।

उसकी इस इच्छा को एक दयालु आर खबसूरत महिला लडी नाइटली न पूरा किया। उसन मरिक को अपनी जागीर म आमत्रित किया। मरिक को बद गाडी मे रेलवे स्टेशन ल जाया गया आर उसके लिए टेन म अलग कम्पाटमट बुक कराया गया। वह उस महिला की हवेली म पहचा। उस महिला की उसक भयानक हाल के सम्बन्ध म पूर्ण जानकारी नही थी जसे ही उसन मेरिक को देखा वस ही वह भय म चिल्लाती हुइ भाग गइ परतु अत म वह महिला और

उसका पति मेरिक से परिचित हो गए। अब वह जहा जाना चाहता, जा सकता था। उन्हाने मेरिक से बहुत अच्छा व्यवहार किया आर उसकी हर प्रकार की आवश्यक्ताआ का ध्यान रखा।

वह वक्षो और फूलो की दुनिया मे अकेला था। गाव की उन्मुक्त हवा ने उसके शरीर पर स्वास्थ्यपूण प्रभाव डाला। वह यहा पूणतया सतुष्ट था। वहा रहने के दौरान उसने मुझे कइ पत्र लिखे, जिसमे उसकी खुशी का इजहार होता था। उसने वहा के प्राकृतिक दृश्यो और पक्षिया के बारे मे लिखा ओर कइ बार फूल भी भजे।

जब वह लदन वापस आया तो उसका स्वास्थ्य काफी अच्छा था। वह 'दुबारा' अपने घर आने पर बहुत खुश था ओर एक बार फिर वह अपनी पुस्तको मे खो गया।

गाव म वापसी के 6 माह पश्चात् वह अपने बिस्तर पर मत पाया गया। वह अपनी पीठ से लेटा हुआ था। एसा लग रहा था कि जेसे वह सो रहा हो। उसके बिस्तर पर कोइ सिलवट न थी। उसकी मृत्यु भी बडे अजीब ढग मे हइ थी। हुआ यू कि जसे ही वह लेटने के लिए झुका वेसे ही उसका भारी आर बडा सा सिर पीछे की ओर लुटक गया। वह तकियो के सहारे पीछे की ओर झुका हुआ था।

वह मुझस कहा करता था कि वह अन्य लागा की भाति पीठ का सहारा लेकर साना चाहता हे आर उनकी तरह सीधा लटना चाहता ह। मरा विचार ह कि उसन अपनी अंतिम रात म अपनी इस इच्छा का पूरा करने की काशिश की होगी। तकिया बहुत नम था आर जब उसने उसपर सिर रखा हागा तो वह पीछे की ओर लुटक गया हागा। सम्भवत सास घुटने क कारण वह मर गया होगा। इस प्रकार उसकी इस इच्छा ने अप्रेल 1890 का उस मोत की नींद सला दिया।

वह इच्छा जो उसक मन म अन्य लोगो की भाति रहन ओर जीवन व्यतीत करन की काशिश पेदा करती यद्यपि एक इसानी नमून की हसियत म वह तच्छ आर बदनुमा था परतु मेरिक की आत्मा हीरा थी। उसक हर काय म वीरता थी। उसने जीवित रहना सीखा आर उस जीवित रहन की अमर इच्छा न उसकी आखो मे हिम्मत और वीरता की चमक कायम रखी।

इस प्रकार उसक जीवन की कठिन यात्रा समाप्त हा गइ। वह हम जैसे सामान्य ओर पूण लोगा क लिए दपण ह आर हम जस कठिन इसानो म जीवन की लहर दोडाता हे।

मेढक-बच्चा सैमुएल डी पार्क्स

मक्स क परान शाकीना का वह बोड अच्छी तरह याद हागा जा ममुएल डी पार्क्स (Samuel D Parks) क सम क बाहर लगा था। उसम एक बहुत बडा मढक दिखाया गया था, जिसका सिर इसानी था। हो सकता ह कि यह वास्तविकता से ज्यादा अत्युक्ति हो, लकिन पार्क्स वास्तव म स्वय का इस प्रकार पश करता था।

उसकी पत्नी स ज्यादा काइ आर व्यक्ति उसे नही जानता था। सौभाग्य से एक पत्र सुरक्षित है जो उसकी पत्नी न मिस्टर बिल बाड को लिखा था। बिल बाड कइ वर्षा म शा बिजनस की आवाज रहा है। उस पत्र म सपादक से उसक पति की मत्यु को ऐलान करन की प्राथना की गइ थी। यह पत्र पार्क्स क सम्बन्ध म था जिस दशक 'मढकनुमा लडका' की हसियत से जानत ह। 26 अक्तूबर का वह काला दिन कि जब मढकनमा बच्च की अपने घर मे मत्यु हा गइ।

समएल 20 अक्तूबर 1874 को बोस्टन म पैदा हआ था। उसने फ्रीक (Freak) की हसियत से सवप्रथम 1893 म विश्व मल के अवसर पर शिकागो मे मडिकल विद्यार्थिया क सामन अपनी नुमाइश की। वह अमरीका और यूरोप क सभी बड-बडे विश्वविद्यालया क विद्यार्थिया क सामने पेश हआ। बाद म बनम आर सेल सक्स म दाखिल हो गया। उस समय स वह अमरीका आर यूरोप क बडे-बड सकसा आर मला म शरीक हाता रहा।

दुनिया म वह अपन प्रकार का एकमात्र इसान था। उसका सिर, हाथ और पाव सामान्य व्यक्तिया की भाति थ—शष शरीर इस प्रकार बिगडा हआ था कि वह एक मढक की तरह था। जब वह जमीन पर चारा हाथ आर पग स चलता ता वह एक बहुत बडा मढक लगता था।

1906 म समएल न नाटी सर की मिस इडा ग्रानविल (Miss Ida Granville) स शादी की और दो बच्चा का पिता बना। अफसोस कि इडा अपने दूसर बच्च को जन्म दत हुए मर गइ। उसका दूसरा बच्चा अभी तक जीवित ह आर उसकी उम्र 71 वर्ष है।

समएल डी पार्क्स मढक बच्चा जा अपनी बानी पत्नी क साथ बहुत खुश था

1910 म जब वह ग्रट पीटरसन शोज म साथ था, तो उसन कॉनेक्टिकट (Connecticut) की एक बौनी महिला हलन हिमल (Helen Himmel) से शादी कर ली। वह अपनी मत्यु तक उसक साथ हसी खुशी जीवन व्यतीत करता रहा। मृत्यु क समय वह 49 वष का था।

ऐसे भी लोग है !
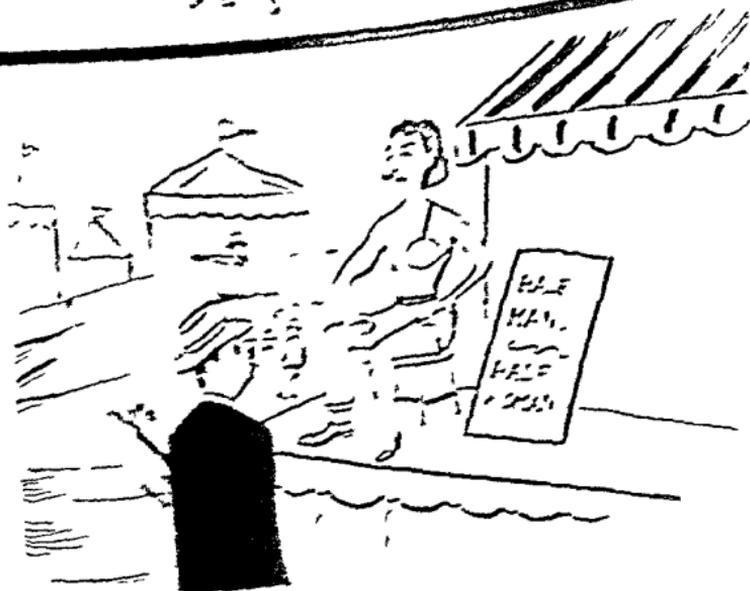
बिली क्रिस्टीना (Billie Christina)

जार्ज डब्ल्यू लुइ ने, जिसने सर्कसो मे काफी साल व्यतीत किए थे, बिली क्रिस्टीना नामक एक द्विलिगी का चित्र इन शब्दो मे खीचा ह—"वह एक ऐसा गाउन पहनती थी, जिसमे उसकी पुरुष छाती (बिली) बिल्कुल सपाट आर दूसरी स्त्री छाती (क्रिस्टीना) उभरी हुई दिखाई देती थी। क्रिस्टीना के बाल लम्बे और बिली के बाल छोटे-छोटे रखे गए थे। बिली की ओर के चेहरे का भाग प्रतिदिन शेव करता था। इस नुमाइश के दौरान बोलने वाला व्यक्ति गेबी बार-बार पुकारता था कि सज्जनो ! आप एक ऐसे व्यक्ति को देख रहे हैं, जिसे कभी भी अपने अकेलेपन का दुख न उठाना पडा, और इसने कभी विरोधी लिग के साथी की कामना नही की। इसलिए कि इसमे दोनो लिग एक साथ मिले हुए हैं। मै यकीन दिलाता हू कि यह सत्य है। यदि दर्शको मे कोई व्यक्ति इस बात का विश्वास करना चाहता है, तो वह 50 सेट सरचार्ज देकर परदे के पीछे आकर देख ले और यदि आप इसका अपने हाथो से निरीक्षण करना चाहते है, तो 50 सेट ओर सरचार्ज देकर अपनी यह इच्छा भी पूरी कर सकते हैं।"

मोना हैरिस

मोना हेरिस (Mona Harris) एक अन्य प्रकार की द्विलिगी थी। हैरी लोस्टन के अनुसार, जिसने उसे सर्कस मे शामिल किया, वह एक औरत थी, परतु उसकी विशेषताए विरोधी लिग के ज्यादा करीब थी।

मोना के केश भूरे थे और वह विशेष सुदर न थी। उसकी छातिया काफी बडी-बडी थी, परतु इन छातियो पर चूचुक (Nipple) नही थे। लोस्टन के अनुसार उसकी योनि के साथ 12 7 सेमी (5) मर्दाना शिश्न भी लगा हुआ था। उसे मर्द और औरत दोनो मे दिलचस्पी थी, यद्यपि उसका शिश्न इस्तेमाल के योग्य न था।

मोण्डू

1920 मे ऐसे ही एक और आधे पुरुष-आधी स्त्री की नुमाइश अमरीका और ब्रिटेन मे की गई। उसके बारे मे विज्ञापन मे लिखा गया था—"ससार का नवा आश्चर्य एक शरीर मे मौजूद बहन और भाई।"

मोण्डू का जन्म 1905 मे ब्लैक पाल (ब्रिटेन) मे हुआ था। 12 वर्ष की उम्र तक उसमे लडकी के लक्षण मुख्य

थे। उसका आपरेशन हुआ, जिससे उसके शरीर मे लडके के लक्षण उत्पन्न हो गए। उस विज्ञापन मे *मोण्डू से की गई बातचीत के कुछ अश दिए गए थे।* कुछेक प्रश्न निम्नलिखित हैं —

"तुम पुरुष हो या स्त्री?"
"मै दोनो हू—यानी आधा पुरुष और आधी स्त्री।"
"कौन सा लिग तुम मे ज्यादा स्पष्ट है?"
"पुरुष।"
"क्या तुम विवाहित हो?"
"हा।"
"क्या तुम मे दोनो लिगो की वृद्धि हुई है?"
"हा।"
"क्या तुम अपना शरीर एकात मे दिखाओगे?"
"नही।"

उसे 100 से 500 डालर तक देने का प्रस्ताव किया गया, परतु मोण्डू ने अपना शरीर दिखाने मे इन्कार कर दिया।

लचकीली त्वचा का व्यक्ति जेम्स मॉरिस

जेम्स मॉरिस

कुछ लोगों की त्वचा इतनी लचकीली होती है कि वह 30 48 (1') या इससे भी ज्यादा खीची जा सकती है और छोडने पर फिर अपनी जगह वापस चली जाती है। डाक्टर इस दशा को क्यटिस हाइपरलास्टिका (Cutis Hyperlastica) कहते हैं।

लचकदार त्वचा प्राय त्वचा के रेशो के अक्रियाशील होने के कारण होती है। इस हालत को ठीक करने मे मेडिकल साइस अभी तक असफल रही है। इस प्रकार की त्वचा कोइ हानि नही पहुचाती, बल्कि यह लोगो के मनोरजन का कारण बनती है। ऐसी त्वचा वाले कई लोगों ने नुमाइशा म भाग लिया और 'भारतीय रबड का आदमी' (The Indian Rubber Man), 'लचकदार त्वचा का आदमी' (The Mlastic Man) के नामो स स्टेज पर आए। इस प्रकार का एक उल्लेखनीय व्यक्ति जेम्स मॉरिस (James Maris) था, जिसने कई वर्षा तक बर्नम ऐण्ड बेली सर्कस के साथ यात्रा की थी। मॉरिस जुलाई 1859 का न्यूयॉर्क म पैदा हुआ था। उसने अपना कैरियर एक नाई की हैसियत से प्रारम्भ किया।

सन् 1882 मे वह बर्नम के साथ था और 150 डालर प्रति सप्ताह कमा रहा था। उसने अमरीका और यूरोप की यात्रा की। साइड शो के कुछ लोगा के अनुसार वह जुआ और शराब का शौकीन था। वह अपने सीने की त्वचा को सिर के ऊपर तक खीच सकता था और अपनी एक टाग की त्वचा को दूसरी टाग के चारो ओर लपेट सकता था।

सूरजमुखी अधेरे मे रहने वाले लोग

सूरजमुखी क्या होते है?

सरजमुखी (Albino) ऐसे व्यक्ति का कहते हें जिसकी त्वचा बिल्कुल सफद दिखाई द, चाह वह किसी भी जाति म सम्बध रखता हा। उसकी आख नील या गलाबी रग की आर पतलिया गहरे लाल रग की हाती हे। उसक बाल सफद या रगहीन हात ह। सूय का प्रकाश उनकी आखा के लिए कष्टदायक सिद्ध होता ह। डॉक्टर रजकहीनता (Albinism) को पदायशी राग कहत ह। यह हालत जा त्वचा आखा आर बालो मे रग (Pigment) क न होने के कारण उत्पन हाती ह वशानुगत ह।

यदि आप सरजमखी ह तो आप उत्तरी यराप क लोगो म घुल-मिल कर रह सकत ह क्योकि आप आर उन लागा के रग म काइ विशष अतर न हागा। परतु यदि आप नीग्रा भारतीय या चीनी ह ता आप उनम एकदम अलग थलग दिखाइ दग आर वह आपको किसी अन्य जाति का इसान समझग।

रजकहीनता प्राय गहरे रग की जातिया म पाइ जाती ह। नायजीरिया म तीन हजार लागा म एक सरजमखी हाना ह। अमरीका म नो हजार म एक सूरजमखी (अलबीना) हाता ह।

प्राय काली जाति के सरजमखिया की नमाइश की जाती ह। 1840 स 1850 क दारान उन्ह सकसो ओर मला म बहुत अधिक महत्त्व दिया जाता था। वह स्टज पर परिवार आर ग्रुप क रूप म पश हात थ।

अजा... जा आस्ट्रलिया का निवासी था

उन्ह 'विशष जाति' का नाम ता दिया ही जाता ह, इतना ही नही उन्ह 'निशा-मानव' कहा जाता ह। वे दिन को जमीन की गहराइया मे छुपे रहते ह, क्योकि सूय का प्रकाश उनक लिए विशेष कष्टदायक हाता ह। हा! जब सूय का अजय रथ सारथी अस्ताचल का पहुच चुका हाता हे, आर रात का साम्राज्य छा चुका होता ह, तब वे लाग बाहर आत ह। एस व्यक्ति विशषत पनामा (Panama) मे अधिक दिखाइ दते ह।

अजाई (Unzie) आस्ट्रेलिया का सूरजमूखी

शो बिजनस मे रजकहीन लोगा मे सबस अधिक नुमाइश अजाइ की हुइ। वह आस्टलिया का निवासी था। उसका जन्म न्य साउथ वेल्ज म 1869 म हआ था। उसकी त्वचा अपने माता-पिता की भाति गहरे रग की हानी चाहिए थी परतु एसा नही हआ। उसकी त्वचा आर उसके बाल कागज की भाति सफद थ। लोग अजाइ को 'प्राचीन निवासी' कहकर पकारत थ क्योकि आस्टेलिया के प्राचीन लोगा की त्वचा आर बाल हू-ब-हू अजाइ जसे ही हात थ। इसलिए कुछ लागा न अजाइ का मात के घाट उतारन की कोशिश की, परतु साभाग्य म अजाई का पिता पुलिस चीफ था। एक अग्रज न उस देखा ओर मेलबान ले गया जहा उसकी परवरिश की। वहा से वह पश्चिमी देशो म चला गया।

अजाइ की आखे सूरजमुखी लागा मे भी ज्यादा विचित्र थी। न कवल वह असाधारण तार पर उज्ज्वल थी बल्कि वह उस रग की हा जाती थी जिस रग का प्रकाश उन पर डाला जाता। साधारण प्रकाश म उसकी आखा का रग हल्का लाल हाता, लकिन कम प्रकाश म व नीला-सलटी रग धारण कर लती। सूर्यास्त के बाद वे गुलाबी रग की हा जाती थी। तज प्रकाश उसकी आखा क लिए कष्टदायक सिद्ध हाता। सम्पूण अधेरे म वह सरलतापूवक चीजा का दख सकता था। सबस अधिक विचित्र उसक बाल थ बफ की भाति सफद घुघराल आर घन। उसकी मछ बहुत लम्बी आर सुदर थी।

1890 म अजाइ न सवप्रथम अमरीका का दारा किया। वह शानदार इसान था। वह हमेशा स्टज पर हट आर सूट पहनकर पश हाता था इतना ही नही वह एक जिन्दादिल आर दिलचस्प वक्ता भी था।

गिनेस बुक आफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स भाग 2

• जीव जगत पशु जगत व वनस्पति जगत (The Living World Animal and Plant Kingdom) • प्राकृतिक जगत (The Natural World) • ब्रह्माण्ड एव अतरिक्ष (The Universe & Space) • विज्ञान जगत (The Scientific World)

☐ 'जीव जगत' अध्याय मे सभी प्रकार के जल-थलवासी जीव-जतुओ, पेड-पौधो, पशुओ जैसे लक्षणो वाले पौधो, फफूदी वर्ग के पौधा, बैक्टीरिया तथा वाइरस, उद्यानो चिडियाघरो, जीव-शालाओ आदि क रिकॉर्ड दिए गए हैं। जैसे

- –सबसे बडे सबस छाट सबस भारी व सबस हल्के जीव जन्त
- –सबम तज व सबसे धीमी चाल वाल तथा सबस कीमती व सबस सस्ते जीव जत
- –सबसे अधिक बच्चे देन वाला जीव
- –सबसे अधिक बोलने वाला तोता
- –सबसे पहला जीवन का रूप
- –सबसे जहरील ककरमत्त
- –सबसे जहरील जीव जन्त व पड पौधे
- –सबसे दूर तक सनाई दने वाली कीड की आवाज
- –सबसे बडे पार्क व चिडियाघर
- –सबस बडा टिड्डीदल
- –सबस बडी फूला की माला
- –सबसे बड फल फूल व बीज तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक रिकॉर्ड

☐ 'प्राकृतिक जगत' के अतर्गत जल-थल वायुमडल के तापमान और दाब, आधी-तूफान आर ओला स सबधित रिकॉर्ड दिए गए हैं। जैस

- –सबस अधिक वर्षा धप कोहरा व तापमान
- –सबस बड इन्द्रधनष तडित तफान व झझावात
- –सबसे बडी मरीचिका
- –सबस भयकर जलजला व ज्वालामखी विस्फोट
- –सबस बड व सबस छोट सागर महासागर
- –गर्म पानी का सबसे उचा चश्मा
- –सबसे बडी झील नदी व जलडमरू मध्य
- –सबस गहरे सागर महासागर नदी व झील
- –सबस ऊच पर्वत व झरने
- –झील म स्थित सबस बडा द्वीप
- –सबस तीव्र आला वृष्टि

तथा एस ही और बहत से रिकार्ड

☐ 'ब्रह्माड एव अतरिक्ष' के अतर्गत ग्रहा-उपग्रहा, सूर्य चन्द्र तथा उनक ग्रहणो उल्कापिड ध्रुवीय प्रकाश, क्वसार-पल्सार तथा अतरिक्ष सबधी खाजो उनके दौरान घटी दुर्घटनाओ तथा सबसे कम व सबसे अधिक उम्र के अतरिक्ष यात्रिया क अत्यत दुर्लभ व ज्ञानवर्धक रिकॉर्ड दिए गए हैं। उदाहरणार्थ

- सबस बड और सबस प्राचीन उल्कापिड
- –सबसे ऊच चद्रपर्वत व सबस गहरा क्रटर
- –सबस बड सूर्यकलक व हर नील चन्द्रमा
- –सबस अधिक व सबस कम तापमान
- –सबस दूरस्थ क्वसार पल्सार
- –आकाशगगाआ का निगल सकन वाल काल छद
- –पृथ्वी सूर्य और विश्व की आय क नवीनतम अनमान
- –पृथ्वी और चद्रमा तक का पचा जान वाल राह
- –मनष्य द्वारा चद्रमा पर बिताया गया सबसे अधिक समय
- –सबस नवीन अतरिक्ष यात्राए तथा अन्य बहत से रिकॉर्ड

☐ 'विज्ञान जगत' म उन तत्वो और यौगिका के नवीनतम रिकॉर्ड ता दिए ही गए हैं, जिनसे हमारे इस ससार की रचना हुई है साथ ही अनेकानक दुर्लभ कणा द्रवो गैसो व रसायना की नवीनतम खाजा के रिकॉर्ड भी हैं। फोटाग्राफी दूरबीन, स्लाइड रूल, भौतिक तुला, लेसर बीम पवन सुरग आदि स सबधित नवीनतम ओर आश्चर्यजनक रिकॉर्ड भी इसम आपको मिलग। जैसे

- –सबस नय सबस हल्के व सबस भारी सब न्यक्लियर पार्टिकल
- –सबस चिरस्थायी व सबस क्षणभगर पार्टिकल
- –सबस सूक्ष्म पदार्थ सबस महगी सगधि
- –सबस जल्दी असर करन वाली दवाऍ व सबस आम प्रचलन वाली दवाऍ
- –सबसे परानी शराब सबस तेज व सबस हल्क असर वाली बीयर
- –सबस प्रारम्भिक व सबस बडे टलिस्कोप तथा दनिया का सबसे बडा रेडियो
- –सबस पुरानी वेधशाला व ताराग्रह
- –सबस परान सबस बड सबस छोट व सबसे महग कैमरे
- –सबस उचा व सबस नीचा तापमान सबस शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शी
- –सबस तेज शार सबस शक्तिशाली विद्युत करट व लसर बीम आदि क बहत स रिकॉर्ड

मूल्य 20/- डाकखर्च अलग

पृष्ठ सख्या 150

गिनेस बुक आफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स भाग 3

• कला एव मनोरजन (The Arts and Entertainments) • भवन एव सरचनाए (The World s Structures)
• मशीनों की दुनिया (The Mechanical World) • व्यापार जगत (The Business World)

□ **'कला एव मनोरजन'** अध्याय मे पेंटिंग, मूर्तिशिल्प, भाषा और साहित्य, सगीत ग्रामोफोन, सिनमा, रगमच रेडियो व दूरदर्शन प्रसारण स सबधित दुनिया भर क दुर्लभ व राचक रिकॉर्ड दिए गए हैं, जिनकी थाडी सी बानगी यह है

- सबसे अधिक मूल्य (दस करोड डॉलर) की पेंटिंग
- सबसे लम्बी (5000) पेंटिंग
- सबसे बडी आर्ट गैलरी
- सबस पुरानी मूर्ति 22000 ई पू की
- सबसे प्राचीन और सबसे नवीन भाषाए
- सबस अधिक भाषाए जानन वाला व्यक्ति
- सबस अधिक अक्षरों वाला शब्द
- सबस बडा वाक्य–4284 शब्दों का
- सबस भारी किताब–252 किग्रा की
- सबस बडा पुस्तकालय
- सबस प्राचीन पत्र व पत्रिकाए
- सबस अधिक बिकन वाले ग्रामोफोन रिकॉर्ड
- सबसे पहली बोलती फिल्म
- सबस अधिक व सबस कम लागत की फिल्म
- सबस लबी सबस अधिक लाभ व सबस अधिक घाटे वाली फिल्म
- जिस देश मे सबस अधिक सिनमाघर हैं
- जिस देश म एक भी सिनमाघर नहीं है

तथा इसी प्रकार क अन्य बहुत से रिकॉर्ड

□ **'भवन एव सरचनाए'** अध्याय मे दुनिया भर की सभी प्रकार की विशिष्ट ओर उल्लखनीय इमारतो, मीनारो व टावरो किलो दुर्गों व राजमहलो, होटलो-नाइटक्लबो व मदिरालयो पुलो, नहरो, बाधो व सुरगो आदि क अजीबोगरीब व ज्ञानवर्धक जानकारियो से युक्त रिकॉर्ड सजाये गए हैं। उदाहरणार्थ

- दुनिया की सबस पुरानी सबसे बडी व सबस उची इमारत
- सबस पुराने किले, दुर्ग व राजमहल
- सबस महगे सबसे बडे व सबसे उचे होटल
- सबस पुराने सबसे लबे चौडे व सबसे मजबूत बाध
- सबसे बडा फुटबाल स्टेडियम
- सबस प्राचीन मेला व सबस बडी चक्री
- सबसे बडी सैरगाह व सराय
- सबस पुराने नाइटक्लब व शराबघर
- सबस बडे नाइटक्लब व शराबघर
- सबस पुराने व सबस लम्बे पुल
- सबस पुरानी व सबस लबी चौडी नहर
- सबस लबी और सबस सगीन सुरग
- सबस उची चिमनी व सबस बडी लिफ्ट
- सबस बडा इडोर स्टेडियम आदि

□ **'मशीनों की दुनिया'** अध्याय मे यातायात के विभिन्न साधनो, जगी बेडो, विमानवाही पोतो, टैंकरो पनडुब्बियो, भारवाही जलयानो, विभिन्न प्रकार की रेलो, एयरक्राफ्ट, इजीनियरी, घडियो, कम्प्यूटरो आदि स सबधित नानाप्रकार क, चमत्कार-पूर्ण जानकारियो से युक्त रिकॉर्ड दिए गए हैं। यथा

- सबस प्राचीन नाव सबस पहला स्टीमर व सबसे बडा जहाज
- सबस बडा जगी जहाज व सबस तीव्रगामी पनडुब्बियो
- सबसे बडा टैंकर व मालवाही पोत
- सबस पहली सबसे बडी सबस महगी व पेट्रोल की सबस कम खपत वाली कारे
- सबस पुरानी व सबस महगी मोटर साइकिल
- सबसे पुरानी सबसे लम्बी सबस छोटी सबस बडी व सबस तेज चलन वाली साइकिलें व यूनिसाइकिल
- सबस पुरानी सबस तीव्रगामी बिना रुके सबस अधिक दूरी तय करन वाली ट्रेन
- सबस अधिक दूरी तय करन वाली व सबस पुरानी ट्राम मोनोरेल
- वायुयान की सबस पहली उडान
- सबस पहली सुपरसोनिक उडान
- सबस बडे सबस छोटे सबस उचे व सबस तीव्रगामी हेलीकॉप्टर
- सबस पुरानी सबस बडी सबस छोटी सबस महगी व सबस ठीक टाइम बताने वाली घडियो
- सबस शक्तिशाली व सबस तेज कम्प्यूटर आदि

□ **'व्यापार जगत'** के अतर्गत कपनियो, जायदादो, लाभ-हानि बिक्री नीलामी विज्ञापन-सस्थाओ उत्पादको व निर्माताओ, बैंकिंग, बाइसिकिल फैक्टरियो, पुस्तक-विक्रेताओ, शराब व शराब सबधी व्यवसायो मछली होटल, बीमा रसायन मोटरकार, तेल कम्पनियो, कागज मिलो, औषधिनिर्माण, प्रकाशन, साझा बाजार तथा अन्य अनक प्रकार क उद्योग धधो क रिकॉर्ड दिए गए हैं। जैसे

- सबस प्राचीन उद्योग धधा सबस पुरानी कपनी सबस अधिक लाभ हानि व सबस बडा दीवाला
- सबस बडे बैंकिंग सस्थान व सबस उची बैंक बिल्डिंग
- सबस बडे शराब उत्पादक सबसे बडे औषधि विक्रेता व सबसे बडी चाकलेट फैक्टरी
- सबस बडी कम्प्यूटर कपनी व सबस बडी डिस्टिलरी
- सबस बडी तेल कपनी व सबस बडी पेपर मिल
- सबस बडी औषधि निर्माता कपनी व सबस बडी प्रकाशन सस्था
- सबस अधिक फटाफट बिक्री वाली फर्म व सबस बडी [illegible] कपनी
- सबस बडा व सबस भारी बिस्तर सबस बडा [illegible] सबस [illegible] व सबस भारी मोमबत्ती सबस पुरानी व सबस महगी [illegible] सबस बडी व सबस महगी कमीज सबस [illegible] व सबस महगा [illegible] सबस महगा [illegible] सबस [illegible] सबस महगी [illegible] सबस पुराने व [illegible] सबसे महगा फर्नीचर सबस कीमती [illegible] सबस महगा [illegible] सबस बडा शीशा सबस महगा [illegible] सबस कीमती [illegible] प्रकार क अन्य बहुत स रिकॉर्ड

मूल्य 20/- डाकखर्च अलग पृष्ठ सख्या 150

गिनेस बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड्स भाग 4

• **खेल जगत** (Sports, Games & Pastimes)

□ '**खेल जगत**' के अंतर्गत दुनिया के सभी प्रकार के आउटडोर इनडोर खेलो तथा मनोरंजक कलाओ के ज्ञानवर्धक व रोचक रिकॉर्ड दिए गए हैं। तीरंदाजी बैडमिंटन, बेसबाल बास्केटबाल, बिलियर्ड्स व स्नूकर, बुलफाईटिंग, नौका दौड, क्रिकेट, साईकिल सवारी फुटबाल (एसासियशन रग्बी) जुआ, गोल्फ, जिम्नास्टिक, हॉकी, घुडदौड, हर्लिंग, आइस हॉकी, आइस स्केटिंग शतरंज, कांटेक्ट ब्रिज चौपड,जूडो-कराटे लॉन टनिस, पटाथलान, मोटर साइकिल दौड, मोटर दौड पर्वतारोहण नटबाल, पेगशूटिंग पोलो निशानबाजी, तैराकी, टेबल टेनिस, एथलेटिक टग आफ वार, वॉलीबाल, भारोत्तोलन, कुश्ती आदि की विश्व प्रतियोगिताओ के सभी प्रकार के रिकॉर्ड आप इसम आसानी से ढूढ सकते हैं। ओलिम्पिक खेलो के रिकॉर्ड अलग स भी दिए गए हैं। बानगी के तौर पर देखिए

- दुनिया के सबस पहल सबस तज व सबस धीम खेलक
- सबस बडी पिच
- सबस कम व सबसे अधिक आय के विश्व रिकॉर्ड बनाने वाल
- सबस कम व सबस अधिक आय क विश्व चैम्पियन
- सबस अधिक विश्व रिकार्ड तोडन वाला खिलाडी
- खेलो द्वारा अर्जित सबस अधिक धन
- सबस खर्चीला सबस लोकप्रिय खेल
- तीरंदाजी की सबस प्राचीन प्रतियोगिता तथा अब तक के विश्व रिकॉर्डों की सूची
- बैडमिंटन क ऐतिहासिक रिकार्ड व टॉमस कप उबेर कप काउंटी चैंपियनशिप सर्वाधिक टाईटिल व सबस लबे मैच सबधी रिकॉर्ड
- फुटबाल सर्वाधिक पुराना उल्लेख सर्वाधिक टाईटिल सर्वाधिक स्कोर सबस कम स्कोर सर्वाधिक बार खेलने वाल खिलाडी सर्वाधिक दर्शक सीनियर मैच कप फाइनल टर करन वाली टीमो का रिकॉर्ड स्कोर सत्र म सर्वाधिक ट्राइ खेल जीवन म सर्वाधिक ट्राइ सीजन म सर्वाधिक गाल व्यक्तिगत अतर्राष्ट्रीय रिकॉर्ड कप के फाइनल मे सर्वाधिक बार हिस्सा सबस कम उम्र का खिलाडी सर्वाधिक आमदनी एक पक्ष म सात खिलाडी वाले मैचो की शुरुआत सबस उचा गाल पोस्ट सबस लम्बी किक सबस तेज व सर्वाधिक ट्राइ स्कोर सबस लम्बी टाइ अतर्राष्ट्रीय रग्बी लीग फुटबाल म दोनो टीमो क सर्वाधिक सयुक्त स्कोर की तालिका तथा फुटबाल सबधी और बहुत स रिकॉर्ड
- बेसबाल सर्वप्रथम खेल बल्लेबाजी का सर्वोच्च औसत सबसे लम्बा होम रन व थ्रो सबस तेज पिचर तथा सबस कमउम्र खिलाडी
- शतरंज ऐतिहासिक रिकॉर्ड सर्वाधिक विश्व टाईटिल चैम्पियनशिप के रिकॉर्ड सर्वाधिक धीमी व लम्बी बाजिया सर्वोत्कृष्ट भारतीय प्रदर्शन
- मुक्केबाजी सर्वप्रथम उल्लेख सबस लम्बे मुकाबले सबस लम्बा खेल जीवन विश्व हैवीवेट चैम्पियन व अपराजित मुक्केबाज
- जुए क खेल म सबस अधिक धनराशि की जीत व हार
- चुनाव व फुटबाल के नतीजे पर लगाई गई जुए की बाजिया
- बुल फाइटिंग सर्वाधिक सफल मटाडोर व सर्वाधिक धन कमाने वाला मटाडोर
- कांटेक्ट ब्रिज या ताश सर्वाधिक विश्व टाइटिल सर्वाधिक मास्टर प्वाइंटस सबसे लम्बा खेल
- गोल्फ की शुरुआत के रिकॉर्ड सबसे पुराने व सबस बडे क्लब सर्वाधिक उचाई पर स्थित गोल्फ का मैदान सबसे नीची जगह पर स्थित गोल्फ का मैदान सबस बड़ा बकर सबस लम्बी दूरी का मैदान सबसे लम्बी ड्राइव पुरुषो द्वारा सबस कम स्कोर म 9 होल और 18 होल के रिकॉर्ड सबसे कम स्कोर म 36 होल सबस कम स्कोर म 72 होल सबस अधिक स्कोर सर्वाधिक तेज राउण्ड के व्यक्तिगत व टीम रिकॉर्ड गोल्फ की गेद फेकने के रिकॉर्ड व चैंपियनशिप क रिकॉर्ड तथा गोल्फ के खेल सबधी और भी पचासो रिकॉर्ड व तालिकाए
- हॉकी (पुरुष) शुरुआत सर्वाधिक ओलिंपिक मेडल विश्व कप अतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता म सर्वाधिक स्कोर अतर्राष्ट्रीय मैच मे सबसे अधिक बार खेलने वाला खिलाडी सिर्वाधिक गोल स्कोर करने वाले खिलाडी सर्वोत्तम गोलरक्षक सबसे लम्बा मैच
- हॉकी (महिला) शुरुआत सर्वाधिक स्कोर सर्वाधिक दर्शक सबसे लम्बे समय तक खेलने का रिकॉर्ड
- घुडदौड सबसे बडा रेसकोर्स सबसे बडा पुरस्कार सबसे लम्बी दौड एक दौड म सबस अधिक घोडे सबसे अधिक सफल घोडे सबसे कीमती घोडा घोडो द्वारा जीती गई सबसे बडी रकम सबसे कम व सबसे ज्यादा उम्र के जॉकी सबस सफल जॉकी तथा अनेकानेक रिकॉर्ड चार्ट
- क्रिकेट प्रारम्भिक इतिहास सबधी रिकॉर्ड प्रथम श्रेणी की क्रिकेट टीमो की बल्लेबाजी क रिकॉर्ड इंग्लैंड की सर्वोच्च पालिया सबस कम रनो की पालिया महानतम विजय एक दिन मे सर्वाधिक रनो का विश्व रिकॉर्ड एक दिन मे सर्वाधिक रनो का टेस्टमैच रिकॉर्ड सबसे तीव्र गति से 200 या अधिक रन बनान का रिकॉर्ड सर्वोच्च पालियों वाला बल्लेबाज मई मास म 1000 रन बनान का रिकॉर्ड एक क्रिकेट सीजन म सर्वाधिक रन पूरे खेल जीवन म सर्वाधिक रन टेस्टमैचो मे सर्वाधिक रन एक ओवर में सर्वाधिक रन एक ओवर म सर्वाधिक चौके एक गेद पर सर्वाधिक रन एक पाली म सर्वाधिक छक्के एक मैच में सर्वाधिक छक्के एक पाली म सर्वाधिक चौके एक सीजन म सर्वाधिक शतक सबस तेज स्कोरिंग तथा एस ही क्रिकेट क सैकडो अन्य रोचक व सूचनापरक रिकॉर्ड तालिकाए व आपके प्रिय खिलाडियो के चित्र।

मूल्य 20/- डाकखर्च अलग

पृष्ठ सख्या 150

101 विश्व-प्रसिद्ध व्यक्तित्व

प्रस्तुत पुस्तक में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों कलाकारों खिलाड़ियों धर्मगुरुओं राजनेताओं क्रान्तिकारियों साहित्यकारों अपराधियों आदि सभी का जीवनवृत्त संक्षेप में उनके चित्रों सहित दिया गया है।

डिमाई साइज
मूल्य 12/
डाकखर्च 3/

विश्व प्रसिद्ध व्यक्तित्व एक ऐसा लघु एनसाइक्लोपीडिया है जिसमें हिटलर सुनील गावस्कर, नेपोलियन, रविशंकर, न्यूटन, शेक्सपीयर, कालिदास, सुकरात, से लेकर चार्ल्स शोभराज जैसे कुख्यात व्यक्तियों तक की जीवनी मिल जायगी।

डिमाई साइज
के 142 पृष्ठ
मूल्य 12/
डाकखर्च 3/

विश्व-प्रसिद्ध युद्ध

युद्धों से एक ओर जहां विनाश और तबाही हुई वहीं दूसरी ओर विकसित हुई एक नयी वैज्ञानिक टेक्नालॉजी। तीर भाले तलवार से लेकर न्यूट्रॉन बम तक का लम्बा सफरनामा

दुर्लभ चित्रों सहित

विश्व-प्रसिद्ध खोजें

● कैसे मूर्ख व जनपढ ड्रेक ने खोज निकाला मिट्टी का तेल? ● कैसे वैज्ञानिक राण्ट्जन को पड़ी सी पा गई एक्स रे? ● कैसे अचानक फ्लेमिंग के हाथ लग गई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दवा पेनिसीलीन ● क्या पेड़-पौधों को भी बेहोशी की दवा देकर मूर्च्छित किया जा सकता है? ● सूर्य चन्द्रमा मंगल प्लूटो यूरेनस आदि ग्रहों की खोज के अतिरिक्त अन्यान्य कितनी ही खोजों का रोचक विवरण।

दुर्लभ चित्रों सहित

विश्व-प्रसिद्ध
अनसुलझे रहस्य

● बरमूदा ट्राइएंगल का रहस्य क्या है? ● क्या पिरामिडों का निर्माण अंतरिक्ष से आई किसी सभ्यता ने किया था? ● रक्त मिलाकर शराब पीने वाले सीथियन घुड़सवार? ● क्या भूत प्रेत व आत्माओं का अस्तित्व है? ● माया इन्का और नाज्का सभ्यताएं? ● क्या धरती पर कोई ऐसी जगह है जहां सोने के पहाड़ हैं? आदि कितनी ही रहस्य कथाएं।

हिन्दी में पहली बार अनसुलझे रहस्यों में उलझाने वाली एक अनूठी पुस्तक!

डिमाई साइज के 134 पृष्ठ
मूल्य 12/ डाकखर्च 3/

सचित्र

● थोर हैरदाल ने सरकण्डे की नाव से कैसे पार किया 13000 मील लंबा और 4500 मील चौड़ा अधमहासागर? ● युद्धबंदी शिविर से भाग 76 सैनिकों द्वारा बनाई गई हैरी नामक सुरंग की कहानी। ● नाजी गुप्तचर, जिसने हिटलर को ही धोखा दे दिया। ● कैसे 1500 यात्रियों को लेकर डूबा 'टाइटैनिक'? आदि अनेक रोमांचक कारनामे।

अपने निकट के या रेलवे तथा बस अड्डा पर स्थित बुक स्टालों पर मांग करें। न मिलने पर वी पी पी द्वारा मंगाने का पता

महल
▶ 10 B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
▶ खारी बावली, दिल्ली 110006 फोन 239314 268293

बडे साइज के
108 पृष्ठ
मूल्य 12/
डाकखर्च 3/

विश्व के विचित्र इंसान

कुछ शीर्षकों की झलक

- शरीर से जुडे हुए स्यामी भाई चाग और इग कब और कहा पैदा हुए?
- कमर से जुडी हुई बहन कलाकार कैसे बनीं?
- दो सिर वाला अजूबा बच्चा कैसा था?
- कितने अजीब होते हैं दैत्याकार इसान?
- बौने कब कहा पैदा हुए और कैसा होता है उनका ससार?
- तीन टागों वाला व्यक्ति कैसे चलता था?
- क्या कोई व्यक्ति आध टन का था?
- कैसे थे जीवित इसानी ककाल?

उपर्युक्त तथा अन्यान्य विचित्र इंसानों के बारे में मनोरजक जानकारी, लगभग सभी की जीवनी चित्रों सहित।

हम जीव-जन्तु

हम जीव-जन्तुओं की कहानी हमारी जबानी

- हम किस जात बिरादरी के हैं?
- हमारी दिनचर्या क्या है?
- हम क्या खाते पीते हैं?
- हमारी उम्र क्या है?
- हम कहा और कैसे रहते हैं?
- मनुष्य हमारा दुश्मन है या दोस्त?
- हमारे सुख दुख क्या-क्या हैं?
- हमारा चलना उठना दौडना बैठना उडना कैसा है?

हमारे बारे में अन्यान्य जानकारियों के लिए प्रस्तुत हैं—हमारी आत्मकथाए—हम जीव जन्तु

जीव जन्तुओं के विशाल ससार के 50 सदस्यों की आत्मकथाए।

लेखक—रवि लायटू
भूमिका—रामेश बेदी

बडे साइज के
116 पृष्ठ
मूल्य 12/
डाकखर्च 3/

जूडो कराटे

(हिन्दी एव अंग्रेजी में)

डिमाई साइज के
128 पृष्ठ
सैकडों चित्र
मूल्य 15/
डाकखर्च 4/

गुण्डों से अपना बचाव और बिना हथियार मारधाड की जापानी कलाए

हिन्दी में पहली बार प्रकाशित 300 से अधिक दाव-पेचों का सचित्र कोर्स। इसकी मदद से आप चाकू, लाठी भाला आदि के वार से अपना बचाव करके अपने से चार गुना ताकतवर हमलावर को चुटकियों में धराशायी कर सकते हैं।

अपना कद बढाइये
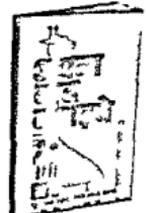
Also available in English
डिमाई साइज पृष्ठ 96
मूल्य 15/ डाकखर्च 4/

लडकियों की पसन्द लम्बा कद पुलिस मिलिट्री व बडी कम्पनियों में प्राथमिकता भी लम्बे कद वालों को। लडकी पसन्द करते समय भी लम्बा कद—अर्थात ठिगने स्त्री पुरुष हर दौड में पीछे रह जाते हैं। प्रस्तुत है कद लम्बा करने का आजमाया हुआ वैज्ञानिक अनुसधान। इसमें यूरोप और अमरीका में टेस्ट किया हुआ ऐसा सचित्र कोर्स दिया गया है, जिसकी मदद से आप केवल 15 मिनट प्रतिदिन अभ्यास द्वारा कुछ ही हफ्तों में अपनी हाइट 10 सेमी तक तो निश्चित रूप से बढा ही सकते हैं।

इगलिश-हिन्दी मॉडर्न लैटरिंग

लेखक ए एच हाशमी

- अक्षरों की बनावट का वर्गीकरण तथा बेसिक बनावट स्ट्रॉक्स लगाने के तरीके, पैन स्टील तथा फ्लैट ब्रुश द्वारा लैटरिंग करना।
- अक्षराकन के मूल सिद्धान्त। सभी तरह की अंग्रेजी हिन्दी लैटरिंग करने की विधियां तथा सैकडों आकर्षक नमूने।
- अंग्रेजी हिन्दी के मोनोग्राम तथा बोलते शब्दों के ढेर सारे नमूने।

बडे साइज के 172 पृष्ठ
मूल्य 24/ डाकखर्च 4/

... के या रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुक स्टॉलों पर मांग करें। न मिलने पर वी पी पी द्वारा मगाने का पता

क महल
▶ 10 B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गज, नई दिल्ली 110002
▶ खारी बावली, दिल्ली 110006 फोन 239114 268293

युवक-युवतियों का प्रिय शौक

बाटिक कला

बाटिक कला का सम्पूर्ण प्रक्रिया-क्रम विस्तार से सैकडो चित्रों की सहायता से घर-बैठ सिखाने वाली पुस्तक

बड़े साइज के 120 पृष्ठ मूल्य 15/ डाकखर्च 4/

आप भी अपन खाली समय म घर की सजावट क साज समान म लकर पहनन क वस्त्रा तक पर बाटिक कला का प्रयाग कर खिडकी व दरवाजा क पर्दे मजपाश टीकाजी रडिया क्वर चादर कशन थैल टाई साडी ब्लाउज कमीज कर्त आदि पर विभिन्न प्रकार क रग बिरग डिजाइन बना सक्त हैं।

20 दिन में

मोटापा घटाइये

मोटापा भयकर बीमारिया की जड है, मैक्स क्रीडा म बाधक है सहत क लिए अभिशाप है। कवल 15 मिनट नित्य का काम लगातार 20 दिन तक करिए आपका आश्चर्यजनक फर्क नजर आएगा— आपका मोटापा कम हा जाएगा और आपका शरीर छरहरा व सुडोल हा जाएगा। अमरीका, इग्लैंड जर्मनी जापान आदि देशा म लाखा द्वारा आजमाए हए सफल परीक्षणा स भरा योजनाबद्ध सचित्र कार्स।

मूल्य 15/ डाकखर्च 4/ पष्ठ 72

अपना मनपसन्द

वाद्य बजाना सीखिए

प्रसिद्ध सगीताचार्य एव शिक्षक श्री रामावतार 'वीर' द्वारा लिखित सचित्र एव सरलतम पद्धति पर आधारित अनूठे सगीत-कोर्स

- सितार सीखिए
- गिटार सीखिए
- वायलिन सीखिए
- हारमोनियम सीखिए
- मेडोलिन व बेजो सीखिए
- तबला व कोंगो-बोंगो सीखिए

युवा पीढ़ी क चहेत वाद्य जिन्ह बिना शिक्षक क सरलता से सीखा जा सकता है और हमारे इन कार्सों की मदद स आप कछ ही दिना म फिल्मी व शास्त्रीय धुन निकालन लगगे

प्रत्यक कार्स म उस वाद्य क समस्त अगा उन्ह पकडन तथा बजाने का सही ढग स्वर लय ताल व धुन निकालना तथा सरगम बाल राग-रागनिया आदि बजान की प्रैक्टिकल शिक्षा क साथ साथ हर बात स्पष्ट चित्रा द्वारा समझाई गई है

मूल्य (प्रत्येक) 15/ डाकखर्च 4/

होम ब्यूटी क्लीनिक

बड़े 140 पृष्ठ मूल्य 18/ डाकखर्च 4/

- चहर की त्वचा को चिरकाल तक कामल स्वस्थ व झर्रिया रहित रखन क लिए विभिन्न व्यायाम मालिश व फशियल क्रियाए
- शरीरिक सुडौलता बनाए रखन क लिए गरदन कमर वक्ष कूल्ह जाघ व हाथ पैरा क सरल व उपयागी व्यायाम
- सावली त्वचा का आकर्षक व लावण्यमयी कैसे बनाए

हमारे पूज्य तीर्थ

मूल्य 24/
डाकखर्च 4/
बड़े 208 पष्ठ

कैलास पर्वत से कन्याकुमारी, कामाख्या से कच्छ तक के सपूर्ण तीर्थों का विश्वकोश'

तीर्थ स्थान हमार दश क प्राण हैं। भारत भूमि तीर्थों स भरी पडी है। यदि आप तीर्थ-यात्रा करना चाहत हैं ता यह पुस्तक आपका तीर्थों की धार्मिक एतिहासिक पृष्ठभूमि उपयाग म आन वाल साज सामान आन जान क मार्ग का निर्देश ठहरन व आसपास क अन्य दर्शनीय स्थला की विस्तृत वांछित जानकारी प्रदान करगी।

नवजात शिशु के जन्मदिन पर स्वागत उपहार

डबल डिमाई साइज

Also available in English

बेबी रिकार्ड एलबम

इसमे आप अपने बच्चे के जन्म से अगले पाच वर्ष तक के सीढ़ी दर सीढ़ी विकास (दत अकुरण पहली बार बैठना व चलना आदि) जन्म सबधी विवरणो (जन्म तिथि जन्म का वजन– लबाई व कुडली आदि) के रिकार्ड के साथ ही प्रत्येक अवसर के स्मरणीय फोटो भी सजा सकते है।

मूल्य 28/ डाकखर्च 4/

होम डेकोरेशन गाइड

लेखक **अशोक गोयल** (B Arch)

मूल्य 20/
डाकखर्च 4/

पुस्तक महल दिल्ली से प्रकाशित श्री अशोक गोयल द्वारा लिखित पुस्तक होम डेकोरेशन गाइड गृह सज्जा पर एक उपयोगी पुस्तक है —मनोरमा

इस पुस्तक मे गृह सज्जा सबधी प्राय सभी विषयो को विस्तारपूर्वक और चित्रो सहित समझाया गया है — धर्मयुग

इस किताब की मदद से छोटी छोटी जगहो को भी अच्छी तरह सजा कर दर्शनीय बनाया जा सकता है — नवभारत टाइम्स

महिलाओ ! क्या आप चालीस की होकर भी बीस वर्ष की लगना चाहती हैं ? तो

- सुन्दर व मनमोहक फिगर के लिए
- आकर्षक व्यक्तित्व के लिए
- शारीरिक व मानसिक रोगो से छुटकारा पाने के लिए आपको चाहिए

लेडीज हैल्थ गाइड

—श्रीमती आशारानी व्होरा

पृष्ठ सख्या 410 चित्र 300

साइज 19 × 25 सेमी

बहुरगी प्लास्टिक लेमीनेटिड टाइटल

मूल्य 28/ डाकखर्च 5/

आपकी हर समस्या का समाधान

- सौन्दर्य समस्याए मुहासे बडापन अपुष्ट वक्ष छोटा कद बालो का झडना चेहरे की कमिया आदि।
- आम शिकायते मासिक धर्म की गडबडिया बाझपन थकान व तनाव पीठ दर्द हीन भावना यौन रोग आदि।
- शिशु जन्म प्रक्रिया गर्भाधान से लेकर प्रसवोपरात का भोजन सतर्कताए एव समस्याए
- सामान्य स्वास्थ्य नारी शरीर रचना की सपूर्ण जानकारी क्या खाए कितना खाए फर्स्ट एड मीनूपाज बाझपन आदि।
- बीमारिया रक्तचाप मधुमेह तपेदिक दमा वक्ष तथा गर्भाशय का कैंसर तथा स्त्रियो के मेजर आपरेशन आदि।

25 विशेषज्ञ डाक्टरों के इटरव्यूज पर आधारित एक प्रामाणिक पुस्तक

व्यजन

—कुमुदिनी

देखिए तो क्या-क्या भरा है इस रसोईघर

पराठे, पूरी सब्जिया, दलिया, खिचडी, ब चावल, दालें, कढ़ी कोफ्ते, सलाद चट मुरब्बा, अचार खीर, हलवा डोसा इड कचौरिया, पकौडे, शरबत, आइसक्रीम अ बनाने के ढेरों अनुभूत तरीके।

मूल्य 10/
डाकखर्च 3/

– रसोई की सफाई से लेकर भोजन परोस तक का शिष्टाचार।
– नाश्ते के ढेरो व्यजन
– रोजमर्रा की विभिन्न प्रकार की खान प व्यवस्था।

200 से अधिक नई बुनतिया डालि

आधुनिक बुनाई शिक्षा

मूल्य 24/
डाकखर्च 5/

पुस्तक के तीन खडो मे अन्यान्य बुनतिया सहायता से विभिन्न प्रकार के ऊनी व तयार करना सिखाया गया है।

- नए सिरे से प्रारंभिक बुनाई सीखने इच्छुक महिलाओ के लिए बुनाई सब प्राथमिक जानकारी जैसे फदे डाल सीधी उल्टी बुनाई फंदे घटाना बढ़ा काज करना व ऊनी वस्त्रो की सिला
- ऊनी वस्त्रो की सार सभाल धुला सभी प्रकार के दाग धब्बे छुडाने गय उपयोगी सुझाव

अपने निकट के या रेलवे तथा बस अड्डो पर स्थित बुक स्टालो पर माग करें। न मिलने पर वी पी पी द्वारा मगाने का पता

पुस्तक महल
10 B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गज, नई दिल्ली 110002
खारी बावली, दिल्ली-110006 फोन 239314 268233